चर्चा सुहाग की

चर्चा सुहाग की

शंकर

हिंदी रूपांतर
जगत शङ्खधर

राधाकृष्ण

इस समय श्रावण मास है। वैशाख-ज्येष्ठ की भीषण अग्नि-परीक्षा पार कर नवयौवना वर्षा श्याम गम्भीर रूप मे कलकत्ते के आकाश मे फिर उपस्थित हुई है। लेकिन इस नये अतिथि को आदर के साथ वरण करने की कोई उत्सुकता कलकत्ते के नागरिको मे नही है। ट्राम के फस्ट क्लास के डिब्बे मे लेडीज सीट पर बैठी अकेली युवती ने भी किस तरह सन्देह-भरे नेत्रो से आकाश की ओर देखा। रॉबिन्सन स्ट्रीट और गुलामउद्दीन स्ट्रीट पार कर ट्राम दफ्तरो की ओर दौडती रहेगी। ट्राम के यात्री चाहते हैं कि यह कुछ और तेज चले, क्योकि सावन की इस मनमौजी बरसात के क्या इरादे हैं, यह कोई नही जानता। गुलामउद्दीन स्ट्रीट की सडक पर इस बीच पहले ही एक छोटा-मोटा समुद्र बन गया है।

आकाश पर भरोसा न कर लडकी ने घडी की ओर देखा। गुलाम-उद्दीन स्ट्रीट! गुलामउद्दीन स्ट्रीट और कितनी दूर है?

ट्राम चलती है तो चले। हम इस बीच गुलामउद्दीन स्ट्रीट पर पहले ही पहुँच जायें।

पिछली रात गुलामउद्दीन स्ट्रीट पर बहुत देर तक वर्षा होती रही। महाकाश के हडताली कर्मचारी जैसे बहुत दिन बाद काम पर वापिस आ कर बडे जोश मे आकाश का हाइड्रेंट खोल कलकत्ते को गन्दगी से मुक्त करने मे लग गये हैं। लेकिन इसके बाद यह होता है कि आकाश के पानी के फव्वारे को बन्द करने की बात इन सारे दायित्वहीन कर्मचारियो के मन म ही नही रही। इस लापरवाही ने रामेश्वर मजूमदार की नींद छीन ली। डीलक्स होटल के रामेश्वर बाबू को लगा कि होजपाइप से छूटता यह पानी रुकेगा ही नही।

आज सवेरे भी बरसात। बरसात ही बरसात। इस बरसात को जारी देखकर कलकत्ते के अन्य असख्य नागरिको की तरह ही रामेश्वर मजूमदार

का दिमाग खराब हो जाता है। उसके वश में होता तो छः ऋतुओं की सूची में से वर्षा का नाम काटकर पंचशील की तरह पंच ऋतुओं में बावन सप्ताहों का वर्ष बना देता। जो लोग कलकत्ता शहर में होटल चलाते हैं, उनको वर्षा दुश्मन लगती है।

रामेश्वर मजूमदार ने अपने बहुत इस्तेमाल किये ढीले चश्मे को मेज पर से उठाकर आँखों पर लगाते-लगाते पुकारा, 'अभिलाष, ओ अभिलाष!'

बेचारा अभिलाष बरसात में तर मिज़ाज लेकर ऑफिस के कमरे के बाहर एक कोने में बरसात से परेशान कुत्ते-सा सिकुड़ा हुआ चुपचाप बैठा था। उसकी हिलने-डुलने की ज़रा भी तबीयत न थी।

लेकिन रामेश्वर मजूमदार की इमरजेन्सी पुकार का जवाब दिये बिना खैर नहीं। अभिलाष ने मध्यम दर्जे के सुर में कहा, 'आया, बाबू!'

इसके बाद जाड़े के सवेरे स्टार्ट लेने की अनिच्छुक मोटरगाड़ी के स्टाइल में हिलते डुलते किसी तरह रामेश्वर मजूमदार की मेज के सामने हाज़िर हुआ।

'कहिये, बाबू।' अभिलाष का चुपचाप ढंग बता रहा था कि मैनेजर बाबू जो कुछ कहेंगे, अभिलाषचन्दर उसे अभी कर देगा। इस अजीब समय में अभिलाषचन्दर अपना स्टार्ट बन्द नहीं करना चाहता है। स्टार्ट बन्द करते ही फिर हिलने की इच्छा न होगी नींद आ जायेगी। मैनेजर रामेश्वर मजूमदार सोच लेंगे कि अभिलाषचन्दर उनके वश के बाहर है, बहुत दिन की नौकरी हो गयी है, इसलिए वह बात नहीं सुनना चाहता।

लेकिन ऐसी बात बिलकुल नहीं है। डीलक्स होटल के सामने सुलेमान साहब की पुरानी गाड़ी जब बार-बार ड्राइवर के जूते पहने हुए पैर की ठोकर खाकर स्टार्ट होने में आगा-पीछा करती है, जाऊँ-जाऊँ करती है तो यह नहीं लगता कि गाड़ी सुलेमान साहब का रोब नहीं मानती। बहुत कर उसका मतलब यह होता है कि गाड़ी की उमर हो गयी है और छाती के पास की बैटरी बहुत बुढ़िया गयी है।

अभिलाषचन्दर खुद भी समझ सकता है कि उसकी उमर ज्यादा हो गयी है और छाती के पास की बैटरी पहले-सी फुर्तीली नहीं है।

फुर्तीली रहती भी कैसे ? हर आदमी मोटरगाडी की तरह ही होता है, यह अभिलाष सोचता है। ज्यादा चला फिरी किये बिना बैटरी खत्म हो जायेगी, काम न रहने पर अभिलाषचन्दर और इस होटल के दूसरे काम करने वाले ऊँघ जायेंगे, पुकारने पर भी उनका जवाब न मिलेगा।

'अभिलाष, क्या दिन-दहाडे सो गया ?' डीलक्स होटल के मैनेजर रामेश्वर मजूमदार ने थोडा व्यग्य किया।

अभिलाषचन्दर सोया न था। इसी से उसने हलका सा प्रतिवाद किया।

'तब क्या कर रहा था ? सपना देख रहा था ?' लग रहा था कि रामेश्वर मजूमदार दो बार जवाब न पाकर बहुत खफा हो गये हो।

अभिलाषचन्दर सचमुच सो नही रहा था। बेकार की बात करने से जब फायदा नही, तो सीधे वह सकते थे कि डीलक्स होटल के दरवाजे के पास बैठा क्या कर रहा था ?

अभिलाष भीगी भागी हालत मे तान्त्रिकाचार्य श्री प्राण कृष्णपाल द्वारा सकलित 'अदभुत वशीकरण तन्त्रसार पुस्तक उलटकर देख रहा था। परसो रात तीन नम्बर के कमरे का मुसाफिर गलती से किताब छोड गया था। रुपया पैसा, घडी, बटन, फाउन्टेनपेन—किसी चीज मे किसी तरह का लालच अभिलाष को न था—मुसाफिरो की छूटी हुई सारी चीजें वह रामेश्वर मजूमदार के पास जमा कर देता। मैनेजर बाबू का काम था उन सारी चीजो को मुसाफिरो को वापस कर देना। लेकिन अन्त मे होता क्या था, यह किसे मालूम ? एक बार जमा करने के बाद उन सब चीजो का क्या हाल होता, उसे लेकर अभिलाषचन्दर ने किसी दिन दिमाग परेशान न किया।

कई दिन पहले अभिलाषचन्दर को दो नम्बर कमरे के बाथरूम से एक चमचमाते नये पिचबोड के बक्स मे औरतो की एक ब्राण्ड न्यू चोली मिली थी। अभिलाषचन्दर कुछ दिनो मे एक बार घर घूम आयेगा। पत्नी ने एक के बाद एक, दो चिट्ठियाँ लिखी थी। चोली चुपचाप अपने ट्रक मे छिपा रखने का लालच अभिलाषचन्दर रोक न सका।

इसके लिए अभिलाष के मन मे वैसी कोई परेशानी न आयी। बडे

घरा की औरता के पास बहुत-से कपडे रहत हैं। खास कर दो नम्बर के कमरे मे जो परवीन खातून थी। तमाम जगह घूम-घूमकर परवीन खातून बीच-बीच मे यहाँ आती रहती—उह कपडे-लत्ते की क्या कमी! फिर भी अभिलाष ने निश्चय किया था कि अगर परवीन खातून छोडी हुई चीज की तलाश मे आयेंगी तो वह अपने ट्रक से चोली का चमचमाता पैकेट निकाल कर दे देगा।

परवीन खातून दूसरे सप्ताह फिर आयी थी। अदब के साथ अभिलाष ने पूछ लिया था, 'दीदी मनी, आपका सब सामान, कपडे-लत्ते ठीक हैं न!'

परवीन खातून ने कुछ ध्यान ही नही दिया। और कामो मे ऐसी मस्त रहती हैं कि एक चोली का हिसाब ठीक नही रख सकती। अभिलाष न सोचकर देखा कि इससे दीदी-मनी का कुछ भी न हुआ और घर मे पत्नी बहुत खुश होगी। इस बार उससे दो एक स्पेशल चीजें लाने के लिए कहा गया था। जिनके पति कलकत्ते म रहते हैं, वे प्राय पत्नियो के लिए तमाम तरह की अजीब-अजीब चीजें ले आते है।

अभिलाष को याद आया कि पिछली बार पत्नी का मिजाज ठीक न था। उसने कलकत्ते म कमरा देखने के लिए कहा था। लेकिन कमरा कहन से ही तो मिल नही जाता। डीलक्स होटल के पिछले कम्पाउण्ड म दो गैरेज खाली पडे हैं। मैनेजर को समझा-बुझाकर एक गैरेज कुछ दिना के लिए मिल सकता है। लेकिन ।

अभिलापचन्दर ने अपनी नाक सिकोडी। वह कोई पुरन्दर थापा दरबान तो नही है। कर्सियाग की पत्नी को लेकर पुरन्दर होटल डीलक्स की बात भूलकर उस गैरेज मे मजे से रह सकता है। लेकिन अभिलापचन्दर के लिए यह सम्भव नही है। पेट की मुसीबत के लिए इस डीलक्स होटल म नौकरी तो की जा सकती है, लेकिन इस कूडेखान म घर गृहस्थी जमाना किसी तरह नही हो सकता। इससे तो अच्छा है कि पत्नी जहाँ है वही रह बीच-बीच म गुस्सा कर तो करे। पत्नी को समझा लिया जायेगा।

इस समझा लेने के मामने म तीन नम्बर कमर स अचानक कितात्र मिली। हो सकता है कि भगवान की यही इच्छा हो। नही तो आजकल

लोग बहुत सावधान हो गय हैं। गुलामउद्दीन स्ट्रीट के इस डीलक्स होटल मे चुपचाप आन पर भी कोई जाते समय कुछ छोड नही जाता। सिफ खाली बोतलें, फटी अलमुनियम की पन्नियो की पट्टिया, खाली सिगरेट की डिब्बिया, दियासलाई की खाली डिब्बियाँ आदि छोड जात है। आजकल दियासलाई की डिब्बियो मे एक बिना जली तीली भी कोई नही छोड जाता। अपना हिसाब अच्छी तरह वसूल किय बिना यहा के लोगो को चैन नही आता। जमाने की हवा ही बदल गयी है।

पहले खाली कमरा मे बहुत कुछ मिल जाता था। चॉकलेट के बार, लगभग नये सेंटो की शीशियाँ, एक बार इस्तेमाल किया हुआ टॉवेल, जाने क्या क्या वेस्ट पेपर की टोकरी म अभिलाष के लिए पडा रहता। अभिलापचन्दर को दियासलाई तो अपने पैसो से मोल लेना ही नही पडती थी। लेकिन अब दिन और ही है।

लेकिन इसी मे 'अद्भुत वशीकरण तन्त्रसार' क्या मिल गया ? जरूर भगवान की इच्छा से ही है। भगवान निश्चय ही चाहते हैं कि देश मे पत्नी का सामना होन के पहले ही अभिलापचन्दर औरतो के सम्बन्ध म सारा ज्ञान अपनी मुट्ठी म कर ले।

अभिलापचन्दर ने उस मन्त्र को बडे यत्न के साथ रट लिया जिसे बारह बार पढकर एक पचमुखी रक्तजवा स्त्री के हाथा मे देने स वह सुन्दरी आजीवन पति की इस प्रकार वशीभूत रहेगी कि मृत्यु होने पर श्मशान जाने के पहले वह उसके साथ मरने के लिए तैयार हो जायेगी

फूल फूल फूल कुमारी।
चन्द्ररूपा स तुम कामेश्वरी॥
जवाफूल कालिका के पाव।
मरा फूल खुकूमणि के देह॥

रामेश्वर मजूमदार ने पूछा, 'क्या हो रहा था ?

इसका सच जवाब देना अभिलाप के लिए सम्भव न था। खुद मैनेजर बाबू से वह कैस कहे कि काम-धाम न रहन से पत्नी को वश म करन का मन्त्र याद कर रहा था।

इस तरह की परिस्थिति म मुह पर ताला लगा कर चुप खडे रहना

ही अक्लमन्दी का काम है। अभिलाष ने भी वही किया।

अभिलाष ने सोचा कि रामेश्वर मजूमदार अब अपने लिए एक कप गरम चाय का ऑडर देंगे। बरसात के इस भीगे वातावरण मे अपने को चस्त रखने के लिए रामेश्वर मजूमदार सामान्यत हुक्म देते, 'ऐसी गरम चाय जो मुर्दे को खडा कर दे।'

इस तरह की गरम चाय बनाने का खास तरीका है। इसका नाम है खडी गरम। पानी को बहुत देर तक आग पर उबालना होता है, उसके बाद खूब गरम केतली मे उसे मैनेजर बाबू के पास हाजिर करो। यह स्पेशल चाय आध घटा आगे पडी रहने पर भी ठण्डी न होगी, इस होटल के ओरिजिनल मालिक मिस्टर अख्तर की एक नम्बर बीबी नरगिस की तरह पचास बरस की होने पर भी ताजी रहेगी।

लेकिन रामेश्वर मजूमदार ने चाय का ऑडर ही नही दिया। वह बिलकुल दूसरी लाइन पर चले गये।

अभिलाष की ओर देखकर बहुत कुछ सोचते-सोचते वह बोले, 'अभिलाष!'

रामेश्वर मजूमदार का यह चेहरा देखते ही अभिलाष समझ जाता है कि मैनेजर बाबू के मन मे कोई गहरी चिन्ता है इसीलिए वह अभिलाष को देखकर भी देख नही पाते।

जिस बात के लिए पुकारा था, उसे अब मुह खोल कर कहना ही पडेगा। आदमी को बुला कर उसे खिलौने की तरह आँखो के आगे खडे रखने के कोई मान नही होते। लेकिन अभिलाष जानता है कि इस समय परेशान होने से कोई फायदा नही। सावन के भरे बादलो ने मैनेजर रामेश्वर मजूमदार का दिमाग खराब कर दिया है।

जानकार अभिलाषचन्दर ने ठीक ही अदाज लगाया। यह असाढ, सावन भादो मैनेजर रामेश्वर मजूमदार की आखो के काँटे हैं। उनके अपने बस मे होता तो गुण्डा ऐक्ट मे इन तीन बदमाश महीनो को कलकत्ते से निकाल कर दूर कही और भेज देते।

असाढ, सावन भादो—तुमको अगर पानी का ऐसा ही शौक है तो भाई पुरी चले जाओ न! जगन्नाथ जी के दर्शन भी होंगे, समुद्र के ऊपर

जितनी चाह जलकेलि कर सकोगे। पूरे दस घटे तक पानी बरसाने के बाद ऊँघ जाने पर भी समुद्र का कुछ बने-बिगडेगा नही।

रामेश्वर मजूमदार इस समय आपाढ, श्रावण, भादा स मानो छिप कर बातचीत कर रह हा। कह रहे हा, 'अच्छा बाबा, अगर बहुत स आदमिया को देखने का शौक है अगर पूरी पस द न हो तो पच्छिम की ओर ऐरोप्लेन के पीछे-पीछे उड कर सीधे बम्बई चले जाओ—कोई टिकट नही लगेगा। वहाँ तबीयत हो पानी उडेलना, सारा पानी समुद्र मे चला जायेगा। उसके सिवा हर आदमी के पास वाटरप्रूफ और गमबूट हैं। कितनी ही बरसात हो, वे वर्षा की परवाह नही करत।'

रामेश्वर मजूमदार ने उस बार बम्बई जाकर अपनी आखा देखा था कि बरसात के दिन भी वहाँ के होटलो—ईरानी शॉपो—मे बडी भीड होती है। बरसात के कारण सब लोग भलेमानुस बनकर बच्चे-बच्चियो की तरह घर जाकर हाथ-मुह धोकर पूजापाठ म नही बैठे रहते हैं।

रामेश्वर मजूमदार ने लक्ष्य किया कि बरसात म सारी चीज ही जैसे देर स होती हो। कपडे सुखान मे देर लगती है, पानी गरम होने मे देर लगती है, नीद से उठने म थोडी देर हो जाती है, बाजार से ताजी साग सब्जी आने मे देर होती है, टेलीफोन उठान पर डायल टोन आने म देर लगती है, बाबू लोग ऑफिस पहुँचने म भी दर करते है। इस देर होने के प्रश्न पर रामेश्वर मजूमदार को लगा कि इस बार बरसात आन मे देर होगी। कैलेंडर म लिख दिया आपाढ। लेकिन बरसात कहाँ है ?

इस बार बरसात ने मौसम के हिसाब स कार्पोरेशन के ऑफिस को भी शर्मिन्दा कर दिया था। बहुत देर बाद आयी, प्राय लच के समय—अथात इधर सावन मे। लेकिन आकर बहुत कारसाज़ी दिखान के लिए उठा-पटक मे क्या लगे हो बच्चू ? कहा तो कि अगर ऐसे ही काम के आदमी हो तो बम्बई चले जाओ। गेट वे आफ इण्डिया के पास से उडकर जितना चाहो पानी बहा दो।

बम्बई की बात रामेश्वर मजूमदार बिलकुल नही भूले हैं। बरसात से भरी बम्बई को वह अपनी आखा से देख आय ह और इसके लिए जेब मे एक पैसा भी खच नही हुआ।

इस वरसात क दिन बम्वई की तसवीर मोचना म रामेश्वर मजूमदार को अच्छा लग रहा था। जब बम्वई जाने की बात उठी तो इस डीलक्स होटल क स्टाफ वाला म कैसी चचलता थी ! उन्होंने कहा, 'मैनेजर साहब तकदीर वाले हैं ! नहीं तो बम्वई-सी जगह और वह भी बिना पैसे क !'

बच्चू अभिलाष एक मशहूर सिनेमा अभिनेत्री का नाम लेकर बोले, उनसे जरा यह दीजियेगा। उनकी जो आखिरी फिल्म बनी थी, कोई मुकाबला नहीं उसका। वही जो जगल के किनारे अमुक को (यह कह कर सिनमा के एक प्रसिद्ध खलनायक का नाम अभिलाष न लिया था) कान पकड कर चप्पल उतार कर मारी उस सीन का कोई मुकाबला नहीं।'

रामेश्वर को याद आया कि अभिलाष ने कहा था, 'बाबू जरा पूछ आइयेगा। सचमुच क्या सीन म असली जूता मारकर तसवीर खींची जाती है ? हमारा पीरू कह रहा था कि इतने बडे एक्टर को जूता नहीं मारा जा सकता है। जूता मारने पर भी कई लाख रुपये देना पड़ेंगे। इसीलिए आजकल वे सब सीन नकली बना लेते हैं। उसे पकडने की कोई तरकीब नहीं। लोग अँधेरे सिनेमा हाल म बैठ कर सोचेंगे कि शायद सचमुच लडकी के हाथ स आदमी जूता खाकर मरा।

रामेश्वर मजूमदार न झिडकी दी 'सिनेमा स्टारो से मिलने के लिए जैसे मुझे नीद नहीं आ रही हो ! बम्बई मे मुझे बहुतेरे काम हैं।'

असल म बम्वई मे रामेश्वर को कोई आजादी नहीं रहेगी, यह बात इन लोगो को बतायी नहीं जा सकती। सरकारी पैसे से कहीं जाना, बिलकुल गुलाम बनकर रहना होता है। आगे पुलिस, पीछे पुलिस---वह सब रामेश्वर को जरा भी अच्छा नहीं लगता था।

उस लडकी का चेहरा रामेश्वर को याद आ गया। वह इस डीलक्स होटल म दो रात बिता गयी थी। उसके बाद कहाँ कलकत्ता और कहा बम्बइ ! फिर किसी गडबडी में लडकी पकडी गयी और पकडी भी गयी तो कोलाबा थाना की पुलिस स। वहाँ लडकी ने पुलिस को क्या क्या बताया, भगवान जानें। वाया लाल बाजार रामेश्वर मजूमदार की पुकार आयी टु विजिट बवई। शायद लडकी को देखकर बताना होगा कि यह लडकी गुलामउद्दीन स्ट्रीट के डीलक्स होटल म ठहरी थी या नहीं ?

इस तरह तो तमाम लोग इस डीलक्स होटल म आते और जाते हैं। स्मृति के बालुका-तट पर कितन पदचिह्न पडत और मिटने रहते है। गले म माला पहने हर फूल की किसे याद रहती है इस तरह की एक लाइन स्कल की कविता मे रामेश्वर मजूमदार ने पढी थी—ठीक से याद नही हुई, इस लिए अवनी मास्टर स एक चाँटा भी रामेश्वर को पडा था। लेकिन अब कविता का अथ अवनी बाबू की मदद के बिना ही रामेश्वर मजूमदार समझ गये।

बम्बई की लडकी की बात उठी थी। मालिक न हँसकर पूछा था, 'रामेश्वर बाबू, कोलाबा थाने मे आपका कोई चचा भतीजा है ? नही तो इतने लोगा के रहते आपको ही क्या बुलवा भेजा ?'

रामेश्वर मजूमदार को लडकी का चेहरा याद आया। पुलिस की कारवाई निवटाते और मजिस्ट्रेटो की अदालतो मे जाने मे कई दिन लग गये थे। इसी बीच उस भरी बरसात को भी रामश्वर देख आये थे। बर-सात सी बरसात थी—जैसे आसमान मे भरे टक का पेंदा टूट गया हो। लेकिन फिर भी रामेश्वर मजूमदार ने घूम फिरकर सब देख लिया था। कोलाबा के जिस होटल मे वह थे, उसके नीचे ही डासिंग स्कूल था। लेकिन उसमे कम भीड नही थी। इतने पानी म भी बुडढे बुड्ढे छात्रा को नाच सीखने मे आपत्ति न थी।

रामेश्वर को सहसा याद आया कि उन्होंने अभिलाष को बुलाया है। अभागा यहा आकर इस तरह चेहरे की ओर देख रहा है। उसकी आखो का रोशनी स गाल के पास का हिस्सा गरम हो उठा है। अभागा इतनी नम्रता न दिखाकर जबान खोल सकता था। कहना काफी था, मजूमदार बाबू, थोडी देर होने पर भी मैं आ गया हूँ।'

रामेश्वर मजूमदार न अब ऑडर दिया, 'अभिलाष, सामन की खिडकी खोल दो।'

डीलक्स आफिस के कमरे की यह खिडकी खाल दने से पूव की ओर की सडक बहुत-कुछ दखी जा सकती है। बडी सडक पार कर गुलामउद्दीन स्ट्रीट के केन्द्र से सब-कुछ मैनेजर साहब की सीट स दिखायी देता था। बहुत अधिक देखा जाता है, इसीलिए रामेश्वर मजूमदार इस खिडकी को

अकसर बन्द रखना पसन्द करते हैं।

बहुत पुराने मकान की पुरानी खिड़की है। आजकल का डयोढा दरवाज़ा इस खिड़की में से निकल जायगा। नीले काच की खिड़की के ऊपर रामेश्वर ने भारी पर्दा एस डाल रखा था कि अन्दर से पता ही न चले कि कोई खिड़की है।

अभिलाषचन्दर ने पर्दा हटाकर खिड़की खोल दी। बाहर वैसा उजाला न रहने से कमरे में वैसा कुछ उजाला न हुआ। बाबू की आज्ञा लिये बिना ही अभिलाष ने चार फुट लम्बी दो ट्यूब-लाइटों में से एक जला दी।

अभिलाष ने लक्ष्य किया कि बाहर की ओर देखकर रामेश्वर बाबू और भी गम्भीर हो गए। अभी पानी नहीं थम रहा था। फिर भी दूर आकाश के मटमैले आवरण की ओर देखकर रामेश्वर मजूमदार की नाराज़ी बढ़ने सी लगी।

रामेश्वर की नाराज़ी का कारण समझने में अभिलाष को कोई असुविधा नहीं हुई। बरसात होते ही डीलक्स होटल का काम धाम कम हो जाता। बीच-बीच में काम का दबाव कम होना मैनेजर के लिए खुश होने की बात थी। पिछले साल भी रामेश्वर आकाश का यही रंग, सड़क की यह हालत देखकर वैसे नाराज़ न होते। लेकिन इस बरस बात और है—जितनी बरसात, जितनी ही खराबी होती उतना ही रामेश्वर मजूमदार का मिज़ाज सातवें आसमान पर चढ़ जाता।

इसका कारण अभिलाष से बिलकुल छिपा न था। गुलामउद्दीन स्ट्रीट के डीलक्स होटल के मालिक अख्तर साहब के साथ रामेश्वर बाबू का एक स्पष्ट समझौता है। बूढ़े अख्तर साहब अपनी सेकेंड पत्नी की सलाह से यह होटल बेच देने की बात सोच रहे थे। बुढ़ापे की उमर में इस ढंग का होटल चलाना अख्तर साहब की पढ़ी लिखी नयी बीवी को बिलकुल पसन्द न था।

पत्नी के प्रभाव में आकर अख्तर साहब शायद यह बुरा काम कर भी बैठते किन्तु उसके बाद रामेश्वर मजूमदार यह गोपनीय बात सुनकर बीच में कूद गए। बड़ी मुश्किल से और नयी बीवी को समझा-बुझाकर एक बीच का रास्ता निकला। नयी बीवी ने कहा 'अगर स्टाफ होटल चलाए तो अच्छी बात है। उसके मालिक को कोई एतराज़ नहीं हो सकता।'

सारे कर्मचारी मिलकर होटल कैसे चलायेंगे ? राज्य चलाने में भी मुश्किल होटल चलाना है, यह बात दुनिया के सब लोग जानते हैं। बड़े-बड़े मेजर-जनरल तक होटल चलाने में हार कर भूत हो जायेंगे, यह बात रामेश्वर मजूमदार ने कहीं पढ़ी थी।

आजकल रामेश्वर मजूमदार कहने को तो मैनेजर हैं लेकिन उनकी ज़िम्मेदारियाँ बहुत अधिक हैं। जीवन-भर की कमाई सत्रह हज़ार रुपये उन्होंने छाती ठोककर अख्तर साहब की नयी बीवी को दे दी थी। मालिक अख्तर ही रहे, लेकिन इस होटल के फायदे-नुकसान की सारी ज़िम्मेदारी रामेश्वर ने ले ली। बीच-बीच में कुछ रुपये किराये के रूप में लगा दिये जायेंगे, उसके बाद फायदा-नुकसान सब तुम्हारा।

डीलक्स होटल के टूटे-फूटे कमरे किराये पर देकर अगर डबल रुपये ले सको तो किसी को कोई आपत्ति नहीं है। इन्हीं कुछ कमरों में अख्तर ने अपनी जवानी में खूब नवाबी की, बन्धु-बान्धवों की खातिर की, हुगली में कोल्ड स्टोरेज बना लिया, श्याम बाज़ार टु हसनाबाद लाइन पर एक बस भी चलायी। यह अलग बात है कि अख्तर साहब अब तक उस बस को रख न पाये। नयी बीवी ने उसे हथिया लिया।

गुलामउद्दीन स्ट्रीट का डीलक्स होटल। नये आदमी को पकड़कर होटल में लाने के लिए कभी कोई विज्ञापन नहीं दिया गया, कभी कोई दलाल भी नहीं भेजा गया। फिर भी ज़ुबान-ज़ुबान से कानों कान डीलक्स होटल का नाम चारों ओर फैल गया था। कितने ही आदमियों को इस डीलक्स होटल के बारे में मालूम था, यह सोचकर रामेश्वर मजूमदार को खुद भी ताज्जुब होता था।

कभी-कभी रामेश्वर को सन्देह होने लगता कि कलकत्ते में ऐसा कोई आदमी नहीं होगा जिसे डीलक्स होटल का पता न हो। रिक्शावाला, टैक्सी-ड्राइवर, घोड़ागाड़ी का कोचवान—इनको क्या स्पेशल ट्रेनिंग दी गयी है ? लाइन में घुसते ही क्या गुलामउद्दीन स्ट्रीट के डीलक्स होटल की बात बता दी जाती है ? नहीं तो दूर दूर से सिख, पंजाबी, बंगाली, तेलुगु टैक्सी-ड्राइवर किस तरह अनायास दिन या रात में किसी भी समय यात्री सहित बिना किसी दुविधा के, निश्चिन्त डीलक्स होटल के आगे आ खड़े होते हैं ?

ड्राइवर लोग कभी इस होटल क अन्दर नही घुसत । लेकिन जैसे व
सब कुछ जानत थ । होटल का रट बढ़न पर भी यह खबर एक-दूसरे म
फैल जाती ।

रामश्वर न सुना था कि बूढे अख्तर साहब ने जवानी म टैक्सी वाला
म दास्ती की थी । दरवान पुरन्दर थापा की जेब म बहुत-स एक-एक रुप
के नोट भर रहत ।

डीलक्स होटल के दरवाजे के आग टक्सी रोककर ड्राइवर के हा
बजाते ही पुरन्दर थापा निकल आता । पैसेंजर और लगज भीतर जाते हं
पुरन्दर थापा जब स एक छोटा नोट निकालकर ड्राइवर के हाथ म
थमाता । उसक बाद खुशमिजाज ड्राइवर के गाडी लेकर जरा आग जाते
ही गाडी का नम्बर अपनी नोटबुक म लिख लता ।

बख्शीश दने का यह सिस्टम कब का उठ गया था, पर टैक्सी ड्राइवरा
की कृपा दष्टि स गुलामउद्दीन स्ट्रीट का डीलक्स होटल जरा भी वचित
नही हुआ । बडी दूर-दूर स—बाटगज, बटनगज नयीहाटी से टैक्सी वाले
ग्राहक लाकर पहुचा जात । सडक पर डीलक्स होटल के गेट के आग कोई
एक मिनट क लिए भी टैक्सी पर इतजार नही करना चाहता था । पैसेंजरा
को ऐसी हालत म कितनी बेचैनी होती । इसीलिए टैक्सीवाले भी झप से
पैसेंजर को भेजकर तब अभिलाषचन्दर से बातें करते ।

दरबान पुरन्दर थापा स बातें करन मे वैसा कुछ फायदा न था क्याकि
गट छोडकर पता लगाने क लिए ज्यादा देर अन्दर रहने का उस आँडर
नही था । इसक सिवा रामश्वर न देखा था कि दरवान थापा बातो को
ठीक स समझता नही था । प्राय मिलिटरी यूनीफाम पहने गेटमन के साथ
जी खोलकर बातचीत करने म टैक्सी ड्राइवर और पैसेंजर दोना ही को
कुछ उलझन होती ।

दरवान एक्स मिलिटरीमैन था इसीलिए वह पत्थर के स्टेचू की
तरह गट क पास खड रहकर ड्यूटी देता । दरवान का पुराना काम अभी
तक बरोक टोक चलता था । गाडी का नम्बर नोट कर लेना होता । लकिन
इस बात का टक्सी ड्राइवरा को पता न था । दरवान का रामश्वर मजूम-
दार का स्ट्रिक्ट आडर था कि इस तरह नम्बर लिखे कि ड्राइवर को पता

न चले। इसीलिए दरबान थापा गाडी आते ही तिरछी नजर से देखकर नम्बर याद करना शुरू कर देता, उसके बाद गाडी जब तक खडी रहती, तब तक पहाडे की तरह नम्बर रटता रहता। गाडी जाने के बाद ही दरबान थापा हाथ के पास की स्लेट खीच लेता और अपनी भाषा मे नन्हे-नन्हे अक्षरो मे सफेद खडिया से काली स्लेट पर नम्बर लिख लेता।

दरबान के पास इस तरह की दो स्लेटें थी। वे रामेश्वर मजूमदार ने खुद ही खरीद दी थी। एक स्लेट भर जाने पर उसे पोछ नही दिया जाता था। दूसरी स्लेट भरी न होने तक पहली छुई नही जाती थी। उसमे पूरे एक हफ्ते का रिकार्ड हमेशा रामेश्वर मजूमदार के पास रहता और वही रिकार्ड दो एक बार बडे काम आया था।

रामेश्वर मजूमदार को याद आया कि पुरन्दर थापा की क्षमता विशेष जीव के रूप मे है। गेस्ट को लाकर जरा पुरन्दर थापा के आगे खडा कर दो। पुरन्दर स्लेट की ओर देखकर फौरन बता देगा कि किस गाडी पर और कब इस डीलक्स होटल मे गेस्ट का आना हुआ था।

लेकिन और बातो मे पुरन्दर बिलकुल बेकार है। टैक्सी के पैसेंजरो को गाडी की खिडकी के पास मुह ले जाकर होटल के बारे मे कुछ बताने का काम भी पुरन्दर नही कर पाता। इसके लिए अभिलाषचन्दर है।

अब सडक पर खडे होकर बातचीत करने का काम इस डीलक्स होटल से समाप्त हो गया है। टैक्सी की आवाज सुनते ही अभिलाषचन्दर जैसे समझ जाता था कि इस गाडी से पैसेंजर आया है, या होटल के मेहमान को ले जाने के लिए पुरन्दर ने टैक्सी बुला भेजी है।

इसके बाद ही दरवाजे के मोड पर अभिलाष आकर खडा हो जाता। टैक्सी का एक नम्बर का मेहमान दूसरे आदमी को गाडी मे छोडकर उस तावी मे खडे होकर अभिलाषचन्दर से मतलब की बातें कर लेता। अभिलाष चन्दर डिटेक्टिव डिपार्टमेंट मे काम करता तो इतने दिनो मे इन्सपेक्टर हो जाता इस बात मे रामेश्वर मजूमदार को कोई शक नही। पैसेंजर देखते ही अभिलाष समझ जाता कि इसके साथ लगेज है या नही।

लगेज रहने पर अभिलाष को बहुत सुविधा हो जाती। पार्टी को सीधे रामेश्वर मजूमदार की मेज के पास ला पहुँचाता। उसके बाद रामेश्वर

बाकी काम पूरा कर लेते जैसे रजिस्टर में दस्तखत करवाना और पेशगी किराया लेकर खुद रसीद देना। ऐडवांस के मामले में डीलक्स होटल के कानून कायदे रामेश्वर बाबू ने बहुत सख्त रखे थे। रामेश्वर ने देखा था कि रुपये पैसे की गड़बड़ पहले ही दूर करने से हिसाब किताब की गड़बड़ी बहुत कम हो जाती है। मैनेजर को एक रुपये से दस पैसे तक की फ़िक्र करनी पड़ती है।

लगेज के बिना गेस्ट होने से अभिलाषचन्दर की ज़िम्मेदारी बहुत बढ़ जाती।

जानकार आँखों से एक दो बार अतिथि-युगल को सिर से पैरों तक देख कर अभिलाष को पूछना पड़ जाता रेल पैसेंजर ?

अभिलाष जानता था कि हलका झूठा जवाब उसे पी जाना पड़ेगा। कोई सच बात कहने के लिए टैक्सी चढ़कर डीलक्स होटल नहीं आयगा। फिर भी अभिलाषचन्दर को ठोक-बजाकर देख लेना पड़ता और पार्टी के जवाब के मुताबिक प्रेस्क्रिप्शन देना पड़ता। नुस्खा बड़े मज़े का रहता।

रेल पैसेंजर सुनते ही अभिलाषचन्दर अनजान पार्टी से पूछता कौन सी गाड़ी ? कौन-सा स्टेशन ? लगेज क्या नहीं है ?''

कुछ बहुत चालाक लोग एक छोटा-सा बेबी साइज का चमड़े का सूट-केस दिखा देते। अभिलाष जानता था कि उस साइज के सूटकेस में दाढ़ी बनाने के सामान के सिवा एक साड़ी भी न आयगी। पार्टी को ज़रा झटका देने के लिए अभिलाष उखड़ा उखड़ा और लापरवाही के भाव से उसे समझा देता कि डीलक्स होटल पैसेंजर की परवाह नहीं करता। यह होटल है दूसरे कामों की जगह नहीं। यहां आने पर पैसेंजर को सामान लेकर आना होता है। अभिलाष के लिए लगेज का मतलब एक होल्डऑल होता।

बहुत शक होने पर इसी स्टेज पर अभिलाषचन्दर अनजान पार्टी को होटल से विदा कर देता। बता देता कि ऐडवांस बुकिंग के सिवा इस सीज़न में डीलक्स होटल में जगह नहीं मिलती। परसों पता लगा सकते हैं।'

इस तरह से अभिलाष के किसी को भगा देने पर भी रामेश्वर मजूमदार नहीं पूछेंगे 'क्यों ? कमरा खाली रहने पर भी पार्टी वापस क्यों चली गयी ?' क्योंकि रामेश्वर मजूमदार जानते हैं कि अभिलाषचन्दर की एक्स रे

आँखों से अनजाने अतिथि का बहुत-कुछ पकड में आ जाता है, जो रामेश्वर मजूमदार की नजरा मे नही आता। रामेश्वर को यह भी मालूम है कि बहुत ही लाचार हुए बिना अभिलापचन्दर यह अरुचिकर काम नही करता।

जो पार्टी लगेज नही लाती और अभिलाप की एक्स रे परीक्षा मे पास हो जाती, उस अभिलाप एक दबी-सी डाँट लगाता, 'लगेज क्या नही लाये ? होटल मे दिन-रात बिताने मे बिना लगेज के बहुत गडबड होती है। आपके लिए भी गडबड और हमारे लिए भी गडबड।'

इसके बाद युगल नया यात्री सकपकाया-सा खडा रहता है। वह जानना चाहता है कि कुछ इतजाम होगा या नही ?

तब अभिलाप आश्वासन देता है, कुछ करना ही पडेगा। आप लोगा का इतजाम करने के लिए ही अभिलापचन्दर का जन्म हुआ है।

अब अभिलाप सीधे-सीधे बता देता है कि चिन्ता करने की कोई बात नही है। ऐज़ ए स्पेशल केस, अभिलापचन्दर लगेज किराये पर दे देता है। सिफ पाच रुपये लगेंगे। लेकिन मैनेजर साहब बिलकुल नही जान पाते।

तब अभिलाप पूछता है 'नाम क्या है ?'

किसी-किसी केस मे अभिलाप बेड रोल पर नयी पार्टी का नाम स्याही स लिख देता। उस काम म लिखाई-खच की मद मे डेढ रुपये और वसूल हो जात। कुछ मुरौवत होने पर अभिलापचन्दर लिखाई-खच छोड देता।

फुसफुसा कर वह आदेश देता कि मैनेजर साहब को यह नाम बताना। अब अभिलापचन्दर नाम लिखा हुआ बेड रोल दिखा देता। कई रेडीमेड नाम लिखे बेड रोल अभिलाप के स्टोर मे हमेशा रखे रहत।

बगाली को देखते ही अभिलाप जो बेडरोल निकालता उस पर अँग्रेजी म 'राय लिखा रहता, उत्तर भारतीय होने पर 'सिंह', दक्षिण भारतीय देखते ही 'राव। दाढी वाले मुसलमानो के लिए जो बेड रोल अभिलाप के पास है, उस पर 'अली' लिखा है। एक और मल्टीपपज है। जब अभिलाप पार्टी की जात का परिचय ठीक से न समझ पाता, तब वह जो बेडरोल देता उस पर 'चौधरी' लिखा रहता।

रामेश्वर मजूमदार इन सब बातो म सिर नही खपाते। उन्ह पता है

कि अभिलापचन्दर ने जिसे छोड दिया है उसके बडरोल पर क्या नाम लिखा है इसमे उनका कोई मतलब नही।

ईश्वर की इच्छा से डीलक्स होटल की लक्ष्मी चचला नही है। जानी पहचानी पुरानी पटियो की सेवा करते-करते ही तो रामेश्वर मजूमदार और कर्मचारियो को पसीना पसीना हो जाना पडता है।

होटल भरा है यह बात कही नही जाती। सिनेमा हाउस की तरह होटल के आगे हाऊस फुल का बोर्ड टागते किसी को क्या नही देखा जाता? होटल-लाइन मे यह चीज अपशकुन समझी जाती है।

किसी किसी दिन डीलक्स होटल मे ऐसा हुआ कि अभिलापचन्दर बेजार चेहरे से पुरन्दर थापा के साथ मेन दरवाजे के पास बातचीत करते हुए ड्यूटी से खिसक आता। माने तब ड्यूटी देने-सा कुछ होता ही नही। सारे कमरे पसेंजरो से भरे होते। ऐसी हालत मे पुरन्दर का काम बढ जाता। टैक्सी वाले को भाडा चुकाने से पहले ही पुरन्दर थापा को आगे बढकर गाडी मे नाक डालनी पडती। बडे अदब से पूछना पडता, डीलक्स होटल?

जवाब अगर हा होता तो पुरन्दर को माफी मागकर कहना पडता सॉरी, आज कही और देखें। तब पुरन्दर टैक्सी वाले से अनुरोध करता 'भैया कही और देखिये। आज यहाँ कमरा खाली नही।

कोई-कोई पैसेंजर उस समय पूछता, 'और कहा जाया जाय ?'

और किसी होटल का नाम रिकमेंड करना रामेश्वर मजूमदार ने कडाई से मना कर दिया था। ऐसी हालत मे क्या करना चाहिए वह अभिलापचन्दर ने बार-बार अभिनय करके पुरन्दर को सिखा दिया था। पुरन्दर थापा उस समय हँस कर कहता फिक्र मत करो आपका अच्छा टैक्सी वाला मिला है। उसके बाद टैक्सी वाले से कहता भैया साब को एकदम अच्छा जघा ले जाओ। फटाफट, फटाफट तुरत।'

रामेश्वर मजूमदार शान्त भाव से खुली खिडकी से पूरी गुलामउद्दीन स्ट्रीट को एक नजर देख गये। किन्तु शान्ति नही मिली। क्रि क्रि। टेलीफोन ने बजना शुरू किया।

'हैलो !' टलीफोन उठाकर रामेश्वर कभी भी डीलक्स होटल का नाम नही लेत।

जो मोच रह थे, वही हुआ। रॉंग नम्बर। उधर से एक आदमी पूछता है, 'हलो, विक्टर क्लिनिक ? मैं डाक्टर घोष बोल रहा हूँ। ब्लड शुगर की रिपोट ज़रा टेलीफोन पर बताना, भाई।'

इस पैथालाजी क्लिनिक के साथ डीलक्स होटल का अक्सर रांग नम्बर हो जाता है। विरक्त होकर रामेश्वर मजूमदार धीरज छोडकर बीच बीच म कह देते, 'सॉरी रिपोट आज किसी तरह नही मिलेगी। कल सवेरे पूछियेगा।'

आज सवेरे भी रामेश्वर मजूमदार ने उसी तरह का जवाब दिया। वहा तो सोचा था कि टलीफोन पर बोहनी करेंगे। वह न होकर ब्लड शुगर, यूरीन स्टूल !

रामेश्वर मजूमदार ने घडी की ओर देखा। दस का अक पारकर छोटा सुई इस वर्षा-बादल के दिन भी जी जान स आग बढन की कोशिश कर रही थी।

रामश्वर ने खुली खिडकी से देखा। चरखेबाज सूरज एक बार नाम लिए चेहरा दिखा कर फिर छिप गया। कल रात बीत बरसात शुरू हुई थी। गुरु स अभिभावक पास न रहन पर जैस बच्चे आवारा हो जाते है, उसी तरह बहुत देर तक वर्षा का उपद्रव कलकत्ता शहर पर होता रहा। राह घाट तब डूबत डूबते ही रह थे। लेकिन उसे लेकर ऊपर वाले को क्या परेशानी ?

सवेरे के वक्त बरसात कुछ देर के लिए बद थी। ऑफिस जाने वालो पर दयालु होकर जैसे बरसात न यह भलमनसी का परिचय दिया था। लेकिन आसमान बादलो से छाया हुआ था। उसके चेहरे पर हँसी खिलाना इस सावन के महीने म आसान नही था।

रामेश्वर मजूमदार न इस बीच बगला अखबार मे आज की बरसात के बार म पहले नबर का सपादकीय पढ लिया था। इस ढग की गैरज़िम्मेदारी का मजाक सिफ कवि और साहित्यिको स ही सभव है। सपादक ने इस अतिथि का आदर के साथ आह्वान किया था जिसे एक गागेय पश्चिमी

बगाल के विरही हृदय मे बहुत पहले ही आना उचित था।

अखबार का पढना समाप्त हुआ तो बरसात और जोरो से शुरू हो गयी। रामेश्वर मजूमदार न मन-ही मन बरसात को गालियाँ दी, 'सी० एम० डी० की तरह काम म और जोश मत दिखाना। जन्म-भर सोकर अब तीस बरस की गदगी एक दिन म साफ करने की आकुलता। रामेश्वर बाबू आज की बरसात जरा भी बरदाश्त नही कर पा रहे हैं। लगता है कि पूरे अषाढ महीने की गफलत का आज ही दूर करने के लिए ऊपर स सख्त हुक्म हुआ है।

रामेश्वर मजूमदार को सहसा मालूम हुआ कि गाली गलौज से काम होता है। उसकी डाँट सुनकर ही मानो बाहर की टीन की छत पर बरसात का तबला बजाना कम हो गया और थोडी देर बाद ही रामेश्वर न डीलक्स होटल के गेट के पास आकर नाक बढा कर देखा कि धूप निकल आयी है। रामेश्वर बाबू ने धूप क रग-ढग देख कर अदाज लगाया कि थोडा सहारा मिलते ही ठीक स खिल उठेगी।

इसीस आफिस के कमरे मे लौट कर रामेश्वर मजूमदार ने अभिलाष चन्दर को पुकारा। मोटर की आवाज सुनने के लिए अभिलाष बहुत देर तक एस ही बैठा रहा। श्याम की बसी सुनने के लिए श्री राधिका भी ऐसी उत्कठित थी या नही इसम सन्देह है।

बहुत आना लेकर रामेश्वर ने आफिस के कमर का खोल दन क लिए अभिलाष मे कहा। वह मात्र खिडकी नही, ऑब्जर्वेशन टॉवर था। गुलाम-उद्दीन स्ट्रीट के सारे हालचाल की खबर अपने कमरे से लेन के लिए ही मकान के बिना नाम के मालिक न इस कमरे का डिजाइन बनाया था। कभी बहुत-कुछ साफ-साफ देखा जा सकता था विशेष रूप से उस समय जब सामने क मकान म 'पीसफुल होटल था। डीलक्स और पीसफुल होटल म खूब झगडे चलते। उसके बाद पीसफुल होटल म कुछ गडबड हो गयी। पीसफुल आफिस बद होकर उस घर म कोई दूसरा ऑफिस हो गया। डीलक्स होटल के मालिक अख्तर हुसैन निश्चिन्त हो गय।

खिडकी खुलने के साथ ही फिर टिप टिप वर्षा होन स रामेश्वर बाबू बहुत परेशान हुए। यह टिप टिप बरसात जैसे होम्योपैथिक डोज स आदमी

की प्रकृति बदल देती हो। कोई भी साहस कर घर के बाहर कदम न रखना चाहता हो।

रामेश्वर मजूमदार ने फिर घडी की ओर देखा। ऐसे ही वक्त, कुछ दिनों बाद, अँग्रेज़ी महीना पूरा होने के पहले ही अख्तर साहब का आदमी आ पहुँचेगा। उसके हाथों मे गिन गिन कर नौ सौ अठावन रुपये दे देना होता। एक दिन भी उसे लौटाने की बात नही थी। अख्तर साहब की नयी बीवी बहुत चालाक औरत थी। चालाकी से दस्तावेज़ म लिखा लिया था कि महीने का किराया महीने मे न देने स वह नौ सौ अट्ठावन रुपये, ग्यारह सौ छप्पन हो जायेंगे। तब होटल की ज़िम्मेदारी अपने हाथा म लेने के लिए रामेश्वर मजूमदार ने बारीकी से जाँच नही की। अख्तर साहब के वकील ने जो कुछ लिखा, उसी पर दस्तखत कर दिये।

इतने सारे रुपये हर महीने दूसरे के हाथ मे गिन देने मे रामेश्वर बाबू को बहुत कष्ट होता। लेकिन मुह खोलकर कुछ कहा भी नही जा सकता था। अख्तर साहब का आदमी बडी-बडी बातें करता 'सिर्फ रामेश्वर एँड कपनी पर मेहरबानी कर अख्तर साहब ने इतने सस्ते मे यह किराया लिया है। होटल उठा कर, लाइसेंस बेचकर यह मकान यो ही किसी को किराये पर दिया जाये तो अख्तर साहब को और भी फायदा होता।'

रामेश्वर बाबू इसका मुह-तोड जवाब बिना सोचे दे सकते थे। 'सुनो हज़रत, यह मकान तुम्हारे अख्तर साहब के बाप की जायदाद नही है। डीलक्स होटल के नाम पर लीज़ है। होटल पर लाल बत्ती जलाने से घर का मालिक आकर गरदन पकड अख्तर साहब को रास्ता दिखा देगा। अख्तर साहब ने शौक से यह मध्यम मार्ग नही पकडा है।' इस पूरे मकान के लिए अख्तर साहब असली मालिक को बयासी रुपये किराया देते हैं, यह रामेश्वर मजूमदार को पता है। लेकिन कुछ सच्ची बातें सामने नही कही जाती हैं। सच बात से दुनिया नही चलती, यह रामेश्वर होटल के रोजगार म आकर अच्छी तरह सीख गये हैं।

अख्तर साहब के आदमी के उपस्थित होने का वक्त आगे बढ़ता आ रहा है और पिछले चार दिन से बरसात का मिज़ाज ठीक नही हो रहा है।

यह बात सोचते ही इस गीले वातावरण में भी रामेश्वर मजूमदार का मिजाज बहुत गरम हो गया।

फिर घड़ी पर नजर चली गयी। इस वक्त ग्यारह बजे हैं। रामेश्वर को खयाल आया कि सूखे दिनों में इस वक्त अभिलाष के या उनके किसी भी आदमी के बैठ रहने की बात न होती। किसी अज्ञात कारण से साढ़े दस से बारह के डेढ़ घंटे के वक्त में मानव मानवी जरा एकान्त निजनता के लिए उत्सुक हो जाते हैं।

रामेश्वर ने लक्ष्य किया कि साढ़े दस के बाद ऑफिस के जनस्रोत के राजपथ से अदृश्य होते ही दो एक करके टैक्सियाँ या एकाध रिक्शा यात्रियों का जोड़ा लेकर होटल के अकेलेपन में आश्रय लेने चले आते।

जानी पहचानी पार्टी के लिए स्पेशल नियम हैं। अक्सर अभिलाष उनका स्वागत करता और सीधे कमरा दिखा देता। अलग-अलग आदमी की अलग अलग आदत रहती। जैसे दवाई की कम्पनी के रीजनल मनेजर मिस्टर सूर्यकुमार चक्रवर्ती थे। भले आदमी छः नम्बर के कमरे के सिवा और कमरा लेते ही नहीं थे। एक दिन तो सवा घंटा दूसरे कमरे का दरवाजा खोलकर चुपचाप बैठे रहे। छः नम्बर खाली होने के बाद वे लोग उसमें गये। परिचित अतिथि अक्सर ज्यादा सुख-सुविधा चाहते वह देनी भी पड़ती। न न का कोई सवाल न था, क्योंकि इन पहचान के लोगों की बातों से ही अनजान लोग यहाँ पहले सहमत हुए आते। तब रामेश्वर मजूमदार मेहमानों के जोड़े को अच्छी तरह देख लेते। दोनों से ही अपने होटल रजिस्टर में दस्तखत करने को कहते। एकाध बार आने जाने में जान पहचान हो जाती।

बहुतेरे पुराने लोगों को बाद में रामेश्वर मजूमदार के सामने परीक्षा देने में आना पड़ता। अभिलाषचन्दर खुद ही रजिस्टर चार, पाँच या छः नम्बर के कमरे में ले जाता। दस्तखत अस्तखत सब उसी कमरे में हो जाते।

साढ़े ग्यारह के वक्त डीलक्स होटल में दबी व्यस्तता के चिह्न प्रकट हो जाते। बहुत-से कमरे अन्दर से बन्द हो जाते। अभिलाष जानता था कि यहाँ कोई भी डिस्टर्ब होने के लिए नहीं आता। फिर भी अभिलाष को अपनी जिम्मेदारी पूरी करनी पड़ती। कमरे में जाकर सलाम कर रामेश्वर

मजूमदार के निर्देश के अनुसार पूछता, 'कुछ खायेंगे ?'

खाने के लिए कोई डीलक्स होटल म नही आता, यह अक्सर साहब समभकर भी नही समभते थे। रामेश्वर मजूमदार ने खुद भी गौर किया था कि सवेरे युगल यात्रियो म खाने का आग्रह बहुत कम रहता है। होटल म आये है, और खाना नही खाते यह किसी जमाने म अकल्पनीय था। लेकिन आजकल बात और है।

अभिलाष के अनुरोध पर कोई-कोई चाय का आडर दे देता, कोई-कोई साथिन की ओर देखकर पूछता 'और कुछ ?

कोई-कोई साथिन कह उठती, 'और कुछ नही, प्लीज !' और कोई साथिन जैसे इस मौके की ही प्रतीक्षा करती हो। साथ-ही-साथ कह उठती, 'चिकेन ऑमलेट, टास्ट और फिशफाई स्पशल।

अभिलाष सिर भुकाए साहब से भी पूछता, 'तो आपके लिए भी यही ?'

अभिलाषचन्दर अब सब समभता है। खाने के ऑडर के मुताबिक अभिलाष को शक होता कि दो तरह के इसान या एक से इसान यहाँ आते हैं। इन ज्यादा खाने वाली औरतो के बारे मे अभिलाष के मन म थाडा शक होता, लेकिन इसको लेकर दिमाग परेशान करने का वक्त उस समय न रहता।

रामेश्वर मजूमदार खुद भी कभी कभी सोचते कि कौन इस सवेरे के वक्त म आने वाले है ? व ठीक इस ऑफिस आवर के बाद और लच के बीच डीलक्स होटल क्यो आते है ?

अलग अलग लोगो के अलग-अलग जवाब रहते। वशीकरण तत्र म है ' दिवारात्रि के मध्य मे और प्रतिदिन के मध्य म भी वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हमन्त और शिशिर ऋतुओ का परिभ्रमण होता है। दस दस दड के क्रम से एक एक ऋतु के उदय की बात है। हो सकता है कि होटल की यह प्रभातकालीन व्यस्तता का समय वसन्तकाल हो। प्रकृति के अव्यथ निर्देश से नियम का राज्य ही चल रहा है।

और कभी कभी रामेश्वर को लगता कि इस ग्यारह से अधिक का टाइम बहुत शान्त समय है। राह घाट पर किसी की नजर न पडने का

समय है। घर की औरत पर घर की बहू पर, कॉलेज की छात्रा पर, आफिस के सहकर्मी पर, और-तो और सडक के अनजान आदमी पर कोई भी अटपटा प्रश्न नही करता, इसीसे डीलक्स होटल के पौ बारह हैं। भगवान ने मानो डीलक्स होटल के रामेश्वर मजूमदार की बात सोचकर ही कलकत्ते के लिए यह शुभ मुहूत बनाया है।

अभिलापचन्दर आदमी बहुत गँवार है। कोई बात लुका छिपाकर कहना नही जानता। सवेरे के वक्त होटल म इस व्यस्त समय का नाम दिया है मार्निंग शो।

मार्निंग शोज़ द डे! रामेश्वर ने गौर नही किया कि मॉर्निंग शो अच्छा न जाने से तीसरे पहर का, शाम का, और रात का रोजगार भी नहा जमता।

मार्निंग शो म पैसेन्जर बहुत शान्त रहत। इन लोगा को रामेश्वर मजूमदार मन ही-मन पसन्द करत। यह सभ्य भी बने रहत।

कमरे यही आठ दस थे। एक एक कमरे का किराया ही कितना था? खान पीने का इतज़ाम नही था। सिर छिपाने के लिए ही लोग इस डीलक्स होटल मे आते। निजनता के सिवा इस टूटे मकान म देने के लिए और कुछ है नही। रामेश्वर ने मन-ही मन हिसाब लगाया कि दैनिक रेट के हिसाब स कमरा किराया पर दने म तो वह होटल चलाने के बजाय लाल बत्ती जला लेते। नौकरो का वेतन ही नही दे पाते। अख्तर साहब की रोटियाँ चलाना तो दूर की बात थी। उसके सिवा और भी बहुतेरे खच हैं।

नामालूम खर्चो की मुसीबत दूर कर रामेश्वर ने बेफिक्री से जरा आँखें बन्द की। भाग्य से एक दिन के मान चौबीस घटे। चौबीस घटा मे फिर छ ऋतुओ का फेर। इसीलिए रामेश्वर मजूमदार और यह डीलक्स होटल जिन्दा है। एक दिन म एक बार ही कमरा किराय पर देकर अख्तर साहब के बाप भी यह होटल नही चला सकत थे। कस्टमरो की दया के ऊपर ही इस डीलक्स होटल के नौकरो का पेट भरता है—वे चौबीस घन्टा का किराया देकर भी पूरे वक्त कमरा दखल नही किय रहत, खास तौर पर सवेरे और शाम के मेहमान। जीवित रह वे, उनकी बढती हो! रामेश्वर मजूमदार से जहा तक हो सका, उनकी सर्विस करत रहेंगे, ताकि

। इस डीलक्स होटल में आकर कुछ देर के लिए शांति पायें, किसी तरह ी असुविधा मे न पड़ें। उनके लिए रामेश्वर मजूमदार जी जान से कोशिश ्रते रहगे।

लेकिन चरण आयेंगे, तभी तो रामेश्वर चरण सेवा करेंगे! सिर ही । होगा तो सिर दबाया कैसे जायेगा ?

रामेश्वर मजूमदार के मन मे एक बचैनी की ककडी चुभन लगी। ीलक्स होटल के मॉनिग शो मे आज कोई मेहमान नही। उखडे मिजाज ी तरह रामेश्वर के दिमाग पर तरह-तरह की फिक्र के बादल उमडने ाग। अचानक किसी सूक्ष्म आणविक विस्फोट से कलकत्ते के सारे ादमियो के मन की आग जरूर ही ठडी नही पड गयी। या कलकत्ता की ुल लडकियो ने अपने मर्दों के साथ अचानक कुट्टी तो नही कर ली! फिर या डीलक्स होटल मे आज कोई कमरा किराये पर नही उठा ? इसका तलब हुआ कि आदमी घरघुस्सू हो गये हैं। उन्हें बरसात से डर लगता है।

रामेश्वर ने लक्ष्य किया है कि कलकत्ते की भले घर की लडकिया बरसात से बहुत डरती है। सिर्फ भले क्यो, 'लाइन' की औरतें भी आजकल बरसात देखते ही जम जाती हैं। बरसात मानो राजाबाजार का नामी ुडा हो जिसमे न दया है, न माया है। औरतो का मान-सम्मान जैसे उनके हाथा जरा भी सुरक्षित न हो। रत्ना नाम की इस लाइन की नयी लडकी को उस दिन शाम का ज़ोरो की अचानक वर्षा देखकर कैसा डर लगा था! राह म घुटनो पानी जमा होते देखकर आखो मे आँसू आ गये। अभिलाष से बोली, 'मेरा कुछ इतज़ाम कर दें। मुझे बडा डर लग रहा है, मैं ठनठन कैसे जाऊँगी ?'

'अरे बाबा, जैसे आयी थी ठीक उसी उसी तरह लौट जाओगी। ऐसे डर क्यो रही हो ?'

लेकिन रत्ना की रुलाई रुक नही रही थी। बरसात ने उसे बिलकुल पराभूत कर दिया था। लाइन की औरत बोली, 'अभिलाष दा, मेरे साथ रिक्शे पर चढ कर चौडी सडक तक चलिये। मुझे बस पर चढा आइये। मुझे बडा डर लग रहा है।'

किस बात का डर ? किसका डर ? जो समुद्र मे सोता हो उसे आम

न दर ? लेकिन फिर भी रत्ना का रोना बंद नहीं हो रहा था । अभिलाष को अंत में उस औरत का जिम्मे पर छोड़ कर आना पड़ा । उसके बाद औरत फिर दिखायी न दी । रात्रा ने मिलन के मन्न की हालत में पहुँच कर भी उस बरसात में शायद वह कोठरी छोड़ कर न निकलेगी ।

रामदयाल मजूमदार ने वहीं खिड़की में से फिर आसमान की ओर देखा । धुंधला अंधेरा जैसे दूर होता जा रहा है । लेकिन अभी तक कोई दिखायी नहीं पड़ता । दरवान पुरंदर थापा भी गड़े-गड़ थक कर गए के अंदर दरवाजे के पास टूट हत्थे की कुर्सी पर बैठ गया । बीच-बीच में टैक्सी के आने के लिए गेट न खोलने से उसका भी धीरज टूटा जा रहा था । कुर्सी पर बैठे-बैठे इस वक्त उसने ऊनी स्वेटर बुनना शुरू कर दिया ।

रामेश्वर को याद आया कि शनिवार और रविवार को इस समय डीलक्स होटल में स्पष्ट हालत होती थी । एक कमरा भी खाली नहीं रहता था । कई लोगों को बड़े अफसोस के साथ निराश करना पड़ता था । कोई-कोई व्यक्ति एक करुण भाव से रामेश्वर के पास आकर पूछते, 'कोई रास्ता नहीं है ?'

रामेश्वर इन लोगों का दुःख समझते । उस वक्त साधिन टैक्सी में बैठी रहती । तकलीफ होती । लेकिन रामेश्वर लाचार होकर कहते मेहमान को कौन वापस करना चाहता है ? मुझे खुद बड़ा दुःख है । आप ख्याल करें हम याद रखते हैं सुअवसर और सुविधा के लिए यहाँ आते हैं, इसी से यह डीलक्स होटल चल रहा है । लेकिन सभी अगर एक ही वक्त आयें तब कमरे तो ज्यादा कर नहीं सकता हूँ ।

कुछ लोग इस डीलक्स होटल को इतना पसन्द करते कि और कहीं जाने को तैयार ही न होते । टैक्सी मोड़कर घर चले जायेंगे, पर और किसी होटल की ओर कदम नहीं बढ़ायेंगे । उनके लिए मुश्किल होती है । इन्हीं में से कोई-कोई पूछते आधा घंटा इन्तज़ार करने पर कोई चान्स हो सकता है ?

उस समय रामेश्वर मजूमदार को और भी तकलीफ होती । हाथ जोड़ कर कहते किसी के मन की बात तो मैं जानता नहीं । कौन यहाँ से कब जायगा, वह तो मुझसे कह नहीं रखते । वैसा होता तो मुझे भी सुविधा

होती। आप लोगो को भी इस तरह तकलीफ न देता।'

तब रामेश्वर तिरछी आखा से देखते कि बाहर टैक्सी मे सिर झुकाए चुपचाप पत्थर की तरह एक महिला बैठी है। आह, बहुत कष्ट है। घर की औरत को इस तरह से टैक्सी मे बिठा रखना। तब रामेश्वर उसके बाद अपना गुस्सा दबा न पाते। कभी-कभी बोल हो पडते, 'जब आना ही था तो कुछ दर पहले कहकर क्या नही रखते? रिजर्व रहने मे आपको इतना कष्ट न होता। मेरी मन भी शात रहता।'

रामेश्वर ने देखा कि वह व्यक्ति अजीब-सा हो जाता। सब भले घर के अक्लमन्द लडके रहते, लेकिन जवाब देना ही भूल जाते। आखें फाड कर रामेश्वर के मुह की ओर ताकते रहते।

बहुत ममता आने पर रामेश्वर की आखो के सामने डागा साहब का चेहरा घूमने लगता। बत्तीस तैंतीस बरस का सुदर-सा साफ चेहरा। आर्ट कल्चर लाइन मे बडा नाम। डागा साहब एकाध कविता-अविता भी लिखते। महीने के दूसरे शनिवार के सबेर एक कमरा पहले से रिजर्व कर रखते। बडी भीड होने पर भी असुविधा न होती। टैक्सी से उतरकर डागा साहब सीधे अपने कमरे मे घुस जाते। पीछे जो महिला रहती, उन्हे रामेश्वर मजूमदार ने कभी नही देखा। इसका कारण सीधा था। श्यामानन्द डागा की साथिन बुर्के मे रहती।

बुर्के का तरीका विपद-आपद मे कितने काम का रहता है, इसे बहुत लोग समझना नही चाहते। लेकिन इस समझने के लिए श्यामानन्द जी को स्पशल सुविधा थी। हिन्दू श्यामानन्द जी की राधिका बुर्का नही पहन सकती, ऐसा तो गीता, कुरान, बाइबिल या पीनल कोड मे कही लिखा नही है।

बुर्का विलासिनी दूसरी ओर बहुत स्ट्रिक्ट थी। वह गोश्त खानेवाली न थी, यह रामेश्वर मजूमदार या इस होटल मे किसी कर्मचारी को जानने को रह न गया था। डागा जी के आने के बाद, उनको डिस्टर्ब कर, कि क्या खायेंगे, यह भी मालूम नही करना पडता। अभिलाष एक स्पेशल फ्लास्क मे दो आदमियो लायक गरम पानी और डागा जी के अपने पैसे से खरीद कर रखा हुआ बोर्नविटा का डिब्बा कमरे मे पहुँचा आता। यही श्यामानन्द जी का स्टैंडिंग ऑर्डर था।

इस होटल का चम्मच और कप बुर्के वालो ने कभी नही मँगवाया। शायद लेडीज़ बैग म दो एक प्लास्टिक के गिलास और स्टेनलस स्टील के चम्मच वह साथ ले आतीं। चम्मच तो शायद नही। अभिलाष ने एक दिन उनके जाने के बाद कमरे से एक स्टेनलेस स्टील का चम्मच पाया था और श्यामानन्द डागा की चीज समझ शायद न कर दूसरी बार उसे लौटा दिया था।

यह श्यामानन्द राधिका का कमरा अभी तक खाली पडा है। बहुत माह मे पडकर नयी पार्टी को विदा न कर रामेश्वर मजूमदार अन्त मे कहते आपने मुझे मुसीबत म डाल दिया है। कमरा तो एक है, लेकिन रिजव किया हुआ। पार्टी हो सकता है, आधे घण्टे मे ही आ जाये। ऐसे कमरे मे भेजन मे आपको भी असुविधा है और मुझे भी है।

रामश्वर न देखा कि और कोई राह न रहने पर बहुतेरे लोग उसी पर तैयार हो जात। उस समय रामेश्वर फिर सावधान कर देते 'रिज़र्वेशन वाली पार्टी आते ही आपको छोड देना होगा। उस वक्त मतक हियेगा कि पूरे दिन का किराया देकर पूरा कमरा बुक किया था।

लोग उस पर भी तयार हो जात। रामेश्वर ने देखा कि डीलक्स भक्त कभी इन छोटे मामला के लिए झगडा नही करत।

'पाच मिनिट। कमरा साफ किया जा रहा है। यह वजह दिखाकर रिज़र्वेशन वाली पार्टी को रामेश्वर मजूमदार कुछ दर रोके रहे और इस बीच अभिलाष ने जरूरी मेसेज देकर कमरा खाली करा लिया। गुप्त अतिथि न चुपचाप होटल स विदा ले ली।

कहाँ तो यह तमाम काम का जोर और कहाँ यह आज की हालत! सब पहले की तरह रहने की बात थी लेकिन इस गीले सावन न डीलक्स होटल की कमर तोड दी।

रामेश्वर ने कमरे से मुह निकालकर देखा कि रिक्शेवाले डीलक्स होटल की इस मुसीबत पर अपना दिमाग परेशान नहीं कर रहे थे। वे बहुत खुश होकर आसमान की ओर देख बरसात का बहुत प्रेम स स्वागत कर रहे हैं। कवि और रिक्शेवालो के सिवा इस कलकत्ता शहर मे वर्षा का और कोई मित्र नहीं है। टैक्सीवालो का भी बरसात म बिज़नेस बढ जाता है लेकिन

वे वर्षा को जरा भी पसन्द नही करते। ऐक्सल भीग जाता, स्टीयरिंग काट कर साइलेंसर पाइप मे पानी चला जाता, ए० सी० पम्प को हाट-अटैक हो जाता। पन्द्रह रुपय देकर पानी म गाडी को ढकिलवा-ढकिलवाकर मालिक के गैरज मे गाडी ले जाने को कोई ड्राइवर पसन्द न करता।

रिक्शेवालों को बैटरी, इजिन, ब्रेक, ब्रेक शू की मुसीबत नही। बर-सात के वक्त कलकत्ते का महाप्रलय से उद्धार करने के लिए ही तो वे पैदा हुए है। गुलामउद्दीन स्ट्रीट पर इसीसे वर्षा के समय मेढक नही चिल्लाते। सिर्फ रिक्शे की टन्-टन् की अवाज सुनायी पडती।

सिर उठाकर रामेश्वर ने देखा कि बाढ का पानी पार कर एकाध रिक्शे चलते हुए वाटरप्रूफ बुर्के की तरह चौडी सडक से निकल इस गुलाम-उद्दीन स्ट्रीन को पकड अनजान जगह की ओर गायब हुए जा जा रह है।

बरसात को फिर एक बार गाली देकर रामेश्वर मजूमदार हिसाब करन बैठ गये कि पिछले कितने दिनो मे कितने रुपयो का खाना बरबाद हुआ। डबल रोटी, अण्डे, दूध, गोश्त—इन सारी चीजो को ईश्वर ने क्या इतनी जल्दी बिगडने वाला बनाया, यह रामेश्वर मजूमदार को जानने की इच्छा होनी। रामेश्वर की तरह दो एक अभागे होटलवालो को वर्षा-बादल के दिनो मे डुबा देन के सिवा और क्या मतलब हो सकता है ? दूध, तुम जब तक गाय के थनो म हो तब तक बिगडने की कोई बात नही, लेकिन डीलक्स होटल मे आते ही फटने के लिए तुम छटपटाने लगत हो ! मास, बकरे के शरीर म तुम बरस-पर-बरस बेफिक्री से लग रहते हो—न तो फ्रिज, न बरफ, तुमको कोई फिक्र नही, लेकिन डीलक्स होटल मे दो दिन रहने के बाद ही रामेश्वर मजूमदार के कलेजे को बैठा देते हो। सडे गोश्त स भले होटल के भले मैनेजर बहुत डरते है।

अपन खयाल मे ही पडे रामेश्वर ने बाहर से अपनी नजर कभी की हटा ली थी। मेज के काँच की ओर देखकर वह आकाश-पाताल की बातें सोच रह थे।

ऐसे वक्त लगा कि जैसे बाहर कोई रिक्शा जोरो से घटी बजा रहा हो। रामेश्वर मजूमदार ने अब बाहर की ओर देखा। रिक्शावाला डीलक्स

होटल के दरवाजे के आगे ही खडा घण्टी बजा रहा था। पुरन्दर थापा गायब था। अभिलाषचन्दर जरा चाय की तलाश म अन्दर गया हुआ था। सबके मन म आज रंगी होली के का रग था, क्योंकि और किसी को तो अन्तर साहब के आदमी का सामना नहीं करना पडगा।

अब रामेश्वर कुर्सी छोडकर उठ खडे हुए। ऑफिस पार कर दरवाजे के आगे आकर देखा कि रिक्शे के आगे का हिस्सा खाकी रग के मोटे वाटरप्रूफ स ढँका हुआ है। अन्दर कौन है, कुछ समझ म न आ रहा था।

यह समझ म आता था कि रिक्शेवाला रामेश्वर बाबू को पहचानता था, सलाम कर वह बोला 'हुजूर, पसेन्जर।

पैसेंजर ! रामेश्वर मजूमदार खतता तो समझते हैं, लेकिन इसके लिए लल जगन्नाथ बनकर सडक पर बैठ रहने से कैसे काम चलेगा ?

हुजूर पैसेंजर ' रिक्शेवाले न फिर कहा।

इस बार रामेश्वर मजूमदार चिढ गय मुह बाये क्या देख रहा है ? पर्दों म बँधी रस्सी खोल दो। साहब से बाहर आने को कहो।'

इस भरे बादलो में रिक्शे का मुसाफिर ? तो लक्ष्य स्थान की गलती नहीं हुई ?

रामेश्वर ने अब पूछा 'डीलक्स होटल न ?

रिक्शवाले ने बइज्जती महसूस की। अफसोस के साथ उसन हुजूर को बताया कि इस महल्ले म वह तेइस बरस स काम कर रहा है। पैसेंजर न सडक के मोड मे डीलक्स होटल म ही आना चाहा।

रामेश्वर धीरे धीरे अन्दर चले जान की बात सोच रह थ। मद पसेंजर अब रिक्शे स उतरकर उसके पीछे पीछे आफिस क कमरे म चल आयेंग। ऐसी रामश्वर बाबू ने उम्मीद की थी।

लेकिन एक साथ कई चूडियो की आवाज आयी। थोडा अवाक होकर पीछे घूमकर देखत ही रामेश्वर न आधी भीगी नारी मूर्ति को देखा।

बैठी हुई नारी मूर्ति की देह वर्षा के गुरिल्ला आक्रमण स रिक्शा म ही बहुत कुछ भीग गयी थी। चहरे पर भी कई बूदें आसन जमाये बैठी थी। नम्र और कोमल नारी मूर्ति न अब खुद अपनी नीली साडी के आँचल म चेहरा पोछ लिया। काले सेलुलायड फ्रेम का चश्मा इसी बीच बायें

हाथ ने उतार आया था।

रामेश्वर ने महसूस किया कि भीगे कपडे की लूट ने भीगा चश्मा पोंछने में आशाप्रद फल नहीं निकल रहा है। हाथ का रूमाल भी कलाई पर बँधी घडी की रक्षा करने में भीग गया था। काँच भी धुंधला लग रहा था।

उमडते हुए रामेश्वर ने कहा, 'ए, बिलकुल भीग गयी। सूखा तौलिया ला दूँ?'

नारी-मूर्ति ने पहले तो कोई उत्तर ही नहीं दिया। उसके बाद बारीक आवाज़ में बोली, 'अभी सूख जायेगा।'

नारी मूर्ति को अब रामेश्वर ने अन्दर आने को कहा। रामेश्वर ने आशा की थी कि रिक्शे का दूसरा यात्री निश्चय ही किराया देकर अन्दर आयगा। जोड़े के सिवा इस होटल में कौन आकर रहता था?

निस्तब्ध कई मिनट बीत जाने पर रामेश्वर ने अब कह ही डाला, 'आपके साथ के आदमी?'

'साथ के आदमी?' औरत मानो आसमान से गिरी हो। 'साथ में कोई आदमी तो आया नहीं।'

रामेश्वर खुद ही जैसे नर्वस हुए जा रहे हों। देखने से महिला मार्केट की औरत भी नहीं लगती थी। मार्केट की औरत देखते ही न पहचान सकने पर इस डीलक्स होटल का रोजगार रामेश्वर मजूमदार को दे देंगे!

रामेश्वर ने अब और अधिक गम्भीर होकर पूछा, 'आपको क्या चाहिए?'

औरत ने कोई संकोच न कर कहा, 'कमरा।'

डीलक्स होटल खाली पड़ा है, यह बात रामेश्वर का चेहरा देखकर नहीं समझा जा सकता था। उस समय रामेश्वर अपने आप से पूछ रहे थे कि सिगरेट गाय तैल से खाली गोठ अच्छा रहना है या नहीं? मामा न होने से अंधा मामा ही भला, यह कहावत भी तो प्रचलित है।

गडबड टालने के लिए चेहरे पर थोडा लज्जा का भाव लाकर रामेश्वर बोले 'डीलक्स होटल में तो—समझती हैं—मान कि यहाँ सिंगल रूम का इन्तज़ाम नहीं है।

रामेश्वर मजूमदार समझे थे कि इससे काम चल जायेगा। लेकिन अब सचमुच उनके चौंक पड़ने का मौका आया। औरत ने किस तरह बिना किसी संकोच के जवाब दिया 'डबल रूम के लिए ही आयी हूँ।'

रामेश्वर को ठीक से सुनायी तो दे रहा है? 'मुझे डबल रूम ही चाहिए। नहीं तो आपके इस डीलक्स होटल में क्या आती?' औरत की बात गर्म हवा की तरह रामेश्वर के कानों पड़ी।

रामेश्वर ने फिर याद करने की कोशिश की। किसी औरत को कमरा किराये पर लेने के लिए उन्होंने आते देखा है या नहीं? कितने मर्द इस होटल में आश्रय लेते ठीक उतनी औरतें जरूर ही यहाँ आतीं। लेकिन वे तो साथ के असबाब की तरह मुँह बन्द किये आतीं और जाते वक्त मुँह बन्द किये चली जातीं।

न इस तरह का केस रामेश्वर मजूमदार को याद नहीं आ रहा है।

औरत ने फिर पूछा, 'कमरा मिलेगा न?'

खाली रहने पर क्यों न मिलेगा? रामेश्वर ने थोड़ा डिप्लोमेटिक जवाब दिया क्योंकि वह अभी तक पूरी तौर पर अपना मन स्थिर नहीं कर पाये थे।

होटल में किस तरह कमरा किराये पर लिया जाता है, यह औरत को मालूम नहीं था—यह अब रामेश्वर की समझ में आ गया। औरत ने फिर ज़रा संकोच के साथ पूछा 'तो मुझे क्या करना होगा?'

रामेश्वर मजूमदार ने सीधे-सीधे पूछा, 'कब आना चाहती हैं?

डीलक्स होटल में डबल रूम में आने वाले को भी वक्त का पता नहीं। औरत जैसे कुछ सोच रही हो। दाहिने हाथ की अनामिका का नाखून दाँतों से कुतरते-कुतरते अपरिचिता बोली, 'यही तीसरे पहर से शाम तक किसी भी वक्त।'

अब जैसे कुछ मौका मिला। रामेश्वर मजूमदार बोले, 'डीलक्स होटल! उस वक्त कमरा खाली रहे या नहीं, इस पर निर्भर करता है।

लेकिन इसीलिए तो औरत पहले से आयी है। अपनी आँखों से होटल भी देख लेती है।

औरत कोई गड़बड़ी नहीं रखना चाहती। होटल के कमरे में निश्चिन्त

होने के लिए बैग खोल डबल रूम का किराया उसने पेशगी निकाल दिया।

हज़ार हो, बोहनी का रुपया था। नोटों को सर से लगाकर दराज में रखने के पहले रामेश्वर ने बता दिया, 'लेकिन न आने से यह रुपया रिफण्ड न होगा। कमरा आपके नाम ही लिखा रहेगा।'

इस बीच अभिलाष ने एक बार झाँका। रामेश्वर काम खत्म कर रहे हैं यह देखकर उसने बेड रोल की बात मन ही-मन समझ ली। बेड रोल के बिना य सब पार्टियाँ लेना ठीक न होगा।

अब अभिलाष ने पूछा 'दीदी, डबल रूम न ?'

दीदी को शरम से 'हा' कहते देखकर अभिलाष ने पूछा, 'साथ म बेड-रोल रहेगा न ?'

बेड-रोल के सवाल पर लडकी बहुत सकुचित हो गयी।

अभिलाष ने समझाया, 'बेड रोल, बॉक्स—यह सब न रहने पर होटल कैसे समझे कि पैसेंजर है ?'

रामेश्वर ने लक्ष्य किया कि लडकी का चेहरा सफेद हो रहा है। इन का जद चेहरा देखकर रामेश्वर को कष्ट होता। रामेश्वर ने पहले ही देखा था कि नाबालिग है या नहीं ? इसके नाबालिग होने की कोई सम्भावना नही है। कम-से कम इक्कीस बरस की उम्र तो होगी ही।

तब ? होटल जब खुला है, डबल बेड के कमरे में जब आदमी नहीं है, तो पैसे देकर जो चाहे इस डीलक्स होटल म आ सकता है। 'मैं न कहने वाला कौन हूँ ?' रामेश्वर मजूमदार ने अपने से समझना पूछना शुरू किया।

इस अपरिचिता को रामेश्वर बेकार तकलीफ नही देना चाहते थे, इसीलिए अभिलाष से बोले, लगेज अगर नहीं है तो कुछ इतजाम कर दो।'

अपरिचिता की ओर देखकर बोले, 'कोई बात नही। अभिलाष आपकी मदद कर देगा। उससे बात ठीक-ठाक करके मेरे पास आइए, किस नाम म रिजर्व होगा, लिख लूगा।

बेड-रोल का मामला अभिलाष कभी भी मैनेजर साहब के सामने तय नहीं करता था। अभिलाष का यह रोजगार बिलकुल अलग था। कहा के किस कानून म लिखा है कि साथ मे लगेज न रहने से होटल म जगह न

मिलेगी ? तमाम केसो मे रामेश्वर खुद ही सिगनल दे देत कि पार्टी को इस झमेला मे न डालकर सीधे कमरे म भेज दो। बीच-बीच म वह मामले को अभिलाप पर ही छोड देते। उसकी दो पैसे की आमदनी की राह मे वह रोडा नही बनना चाहत थे।

अपरिचिता को बेड रोल की सप्लाइ के नाम से पाच रुपये अभिलाप ने भी बोहनी कर डाली। खरीदार औरत और वह भी पहला खरीदार। अभिलाप खुद भी रुपये लेन मे थोडा आगा पीछा कर रहा था, लेकिन वह बोहनी का मौका न छोड सका।

लडकी फिर काउटर पर वापस आयी। एक छपा कागज बढा कर रामेश्वर बोले 'अपना नाम कहा से आ रही है, तारीख। जिस समय आयें, हम तभी से लिख लेंगे।

अनुपमा अब सचमुच मुसीबत मे पड गयी। होटल म आकर नाम-पता अपने हाथ से लिखकर देना पडता है, यह उसे मालूम न था।

अनुपमा ट्रामो म, बसो मे, ट्रेनो मे चढी थी। वह रेस्तराओ म गयी थी, लेकिन कही भी नाम के पीछे खीचतान नही होती थी।

बहुत आहिस्ता-आहिस्ता अनुपमा ने अपने हैंड बैग से फाउटनपेन निकाला। इतन आहिस्ता कि कई मिनट लग जायें और अनुपमा को थोडा सोचने का वक्त मिल जाये तथा होटल के उस मुच्छल आदमी के मन म कोई शक न पदा हो।

नाम ! नाम ! 'अनुपमा तुम्हारा नाम क्या है ?' अनुपमा खुद तेज आवाज म खुद से ही पूछती है। दूसरा कोइ सुन नही पाता।

'अनुपमा, अनुपमा, तुमको कलम ढूढने म और देर लगाना ठीक नही है।

अनुपमा समझती है कि उसकी नब्ज की रफ्तार ने थोडा तज होना शुरू कर दिया है। 'हाय भगवान अरे मेरे पछी, अभी पख न बद कर दना।

अनुपमा, तुम्हारा नाम क्या है ? दुनिया म इसस आसान और कौन-सा सवाल हो सकता है ? तीन बरस का बच्चा भी तो इस प्रश्न का उत्तर दे सकता है—तुम्हारा नाम क्या है ? और तेईस बरस छ महीने उम्र की अनुपमा तुम 'तुम्हारा नाम क्या ह' का जवाब नहीं लिख सकती ! तुम्हारा हाथ ठण्डा पडता जा रहा है ?

अनुपमा बहुत देर हुई जा रही है। डीलक्स होटल के मैनेजर तुम्हारी तरफ छानबीन करने वाली आखो की हैडलाइट जलाकर देख रह हैं। जरा नाक होते ही तुम मुसीबत म पड जाओगी, अनुपमा ! इन होटलो म अनजान मेहमानो को जगह नहीं मिलती। अनजान लोगो को कलकत्ता शहर म टिकने म बडी मुसीबत है। अनजान आदमी को बहुत असुविधा होती है—इस धरती पर सभी को परिचय चाहिए। बगला की किताब मे इस सूचना कहा जाता ह। इस सूचना के बिना डीलक्स होटल तुम्हारी ऐडवास बुकिंग का रुपया ले रहा ह, यह बडे भाग्य की बात ह। और तुम अपनी मुसीबत खुद ही बुला रही हो।

अनुपमा ! उठो। जागो। उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्यवरान्निबोधत। तुम्हारे घर पर स्वामी विवेकानन्द की जो सन्यासी रूप म तसवीर टागी गयी थी, उसके नीचे जो अभयमन्त्र बडे-बडे अक्षरो म लिखा था उसे फिर याद करो, अनुपमा !

अनुपमा न अनुभव किया कि इस ठडे ठडे बरसात के दिन भी उसकी नाक के पास सरसो की साइज की दो एक बूदें पसीना आ गया था। कवि लोग इसकी बढा चढा कर मुक्ताबिन्दु से तुलना करने रह हैं।

अनुपमा ! प्लीज़ ! तुम्हारा नाम क्या है ? तुम कहा से आयी हो ? ज्यादा दर करने स तुम्हारी ही मुसीबत ज्यादा होगी और तुम्हारी मुसीबत के मतलब और बहुतो की तकलीफ। एक और आदमी भी तुम्हारे मुह की ओर देख रहा है। तुमने उसे विस्मय म डाल दिया है। तुमने अभयदायिनी की भूमिका ली है, अनुपमा। उठो जागो, अनुपमा। अपने कलम का मुह अब खोल दो।

डीलक्स होटल के मैनेजर अब तक समझ न पाये। लेकिन वह भी हो सकता है, अब परेशान हो जायें।

कलम दूं ?' मैनेजर साहब ने तुम्हारी मदद करना चाहा, अनुपमा ! तुम क्या आयी, यहाँ क्या करोगी, किसको साथ ले आओगी—उसके बारे में इन शरीफ आदमी को कुछ नहीं मालूम, फिर भी वह तुम्हारी मदद करने के लिए चिंतित हैं।

अनुपमा ने मोटे चश्मे में से फिर एक बार फार्म की ओर देखा। नाम ? कहाँ से आना हुआ ? यहाँ से कहाँ जाना होगा ?

अनुपमा अभी तक अपना मन स्थिर नहीं कर पा रही थी। अनुपमा क्या कुछ और समय माँगेगी ? डीलक्स होटल के इस अधेड़ मुन्छल मैनेजर से क्या अनुपमा कहेगी, 'बहुत मुश्किल सवाल है, थोडा वक्त दीजिए, सर।' उस बार शोभना ने जिस तरह परीक्षा के हॉल में इन्विजिलेटर से करुणभाव में कहा था और परीक्षा के कानून-कायदे को तोड़कर अनजान इन्विजिलेटर ने दया के वशीभूत होकर शोभना को थोडा अधिक समय दिया था।

अनुपमा वह सब खतरा यहाँ न उठाएगी। बी० ए० पार्ट-वन की वह परीक्षा तो मामूली परीक्षा थी। उसकी तुलना में यह डीलक्स होटल की परीक्षा तो हजार गुना कठिन है। यहाँ इन्विजिलेटर लोग तो कानून तोड़ना न चाहेंगे। वे लोग अनुपमा को बेवजह स्पेशल फेवर क्यों दिखायेंगे ?

समय बढ़ाने के लिए अनुपमा को एक तरकीब सूझ गयी। आँखों के चश्मे की बात अनुपमा को याद आ गयी। आज तो सावन की वर्षा है। आँखों से चश्मा उतार कर अनुपमा बहुत धीरे धीरे बड़ी होशियारी से उसे पोंछने लगी। बरसात का मौसम है न ! भीगे कपड़े से भीग हुए चश्मे के शीशे सुखाने में थोडा वक्त लगेगा ही।

अनुपमा अनुभव कर रही है कि उसके दिल के निकट का हिस्सा भी उत्तेजना से भीग गया है। पीठ भी भीग गयी है या नहीं, यह जानने का कोई तरीका नहीं है। भाग्य से श्रावण की वर्षा ने उसे बहुत भिगो दिया है।

पसीने से तर अनुपमा ने चश्मा पोंछते हुए अपने से ही पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है ? तुम कहाँ से आयी हो ? यहाँ से तुम कहाँ जाओगी ?'

अनुपमा। अनुपमा सेनगुप्त, डीलक्स होटल के काउटर पर जैसे भी हो सवालो का जवाब दो। इस दुनिया मे अपनी समस्या का समाधान जब खुद ही करना हो, तो तुम किसकी, तुम्हारा कौन ?

अनुपमा ! डीलक्स होटल मे ही खडी रहो। वहाँ आज वैसा कुछ नही है। अनुपमा न जिस कारण से वहाँ आना चाहा था, वही निजनता काफी मात्रा मे मौजूद थी। रामेश्वर मजूमदार, अभिलापचदर बहुत बुरे लोग नही हैं। वे अनुपमा को किसी बडी मुसीबत म डालने वाले लोग नही हैं। अनुपमा, होटल का काम भर दो। हम तब तक तलाश करें कि यह अनुपमा कौन है ? कहाँ स आयी है और यहाँ से कहाँ जायेगी ? यद्यपि इस प्रश्न का उत्तर इस वक्त अनुपमा के सिवा और कोई न दे सकेगा।

किसने यह अनुपमा नाम रखा था ? यह नाम रखने के कोई अथ होते हैं ? अनुपमा सेनगुप्त के वश-परिचय मे, स्वास्थ्य मे, शिक्षा मे और शरीर म उपमाहीन कुछ नही है। अत्यत सामान्य साँवली बगाली लडकी का नाम बिना कुछ सोचे-समझे पिता ने अनुपमा रख दिया। अन्धे लडके का नाम पद्मलोचन भी *अच्छा है, लेकिन इस तरह की एक मामूली लडकी अनुपमा !* अर्थात् अतुलनीय !

बच्चो के नामकरण के मामले मे पिता-माता को क्या हो जाता है ! *उस समय उन्हे नये जोश मे सही-गलत का होश नही रहता। अनुपमा म* अगर सामथ्य होती तो वही अपनी तमाम जान पहचान की सहेलियो मे कह देती कि जब लडकी बनकर पैदा हुई हो तो शादी करोगी ही। बाल बच्चे होगे ही। *तब जरा सोच-समझकर और भविष्य की बात ध्यान मे* रखकर सतान का, विशेष रूप से लडकी का, नाम रखना।

अनुपमा को इस वक्त हम एक ट्रेन के कमरे मे देख रहे हैं। ट्रेन हाफते-*हाफते हावडा स्टेशन की ओर ही आ रही है। बदवान स्टेशन छोडने के* बाद इजन मे कुछ गडबड दिखायी पडी थी। लेकिन बीमारी की दवा रखने की बडी कोशिशो से ड्राइवर साहब गाडी रोकते नही—अनुपमा के

बीमार पिता की तरह थोडी तेजी दिखाकर कहते, मुझे कुछ नही हुआ। मैं ठीक हूँ।'

उसके बाद थोडा चलने पर हो इजन की साँस फूलने लगी, इतना बडा इजन, उसे क्या बीमारी है? गाडी के यात्री बेचैन और परेशान हो गये।

अनुपमा अपने माता पिता की बात सोच रही है। अनुपमा ने सुना था कि उसके जन्म के बाद उसके नाम के लिए बहुत बहस हुई थी। मा की इच्छा थी कि इस लडकी का नाम सावित्री रखा जाये। एक दूसरी लडकी का नाम जब सती है, तो इस दूसरी लडकी का नाम सावित्री के सिवा क्या हो सकता है? ईश्वर ने तो यह सारी चीजें बहुत दिनो पहले ही निश्चित कर दी है।

मा का नाम है सरमा। सरमा जब लडकी होकर पैदा हुइ, तो सीधे-सीधे भविष्य को लेकर दिमागपच्ची करने से क्या फायदा? माँ की धारणा है कि मनुष्य के, विशेषत लडकियो के, पैदा होने के पहले ही विधाता सब ठीक ठाककर कपाल पर लिख छोडते ह। यह जो सरमा है, इसने बचपन मे कभी सोचा होगा कि उसका क्या होगा? आजकल की बदनाम हो जाने वाली लडकियो की तरह बहुत इधर उधर के सवाल किये थे कि उसका क्या होगा?

उस दिन शोभना के घर पर अनुपमा ने वह विचित्र अँग्रेजी गाना स्त्री-सुलभ आवाज म सुना था, 'व्हन आई वॉज अ लिटल चाइल्ड, आई आस्कड माई मदर, व्हाट शल आई बी? शैल आई बी हैंडसम शैल आइ बी प्रेटी? के सारा, सारा।' अनुपमा खुद ही आश्चर्य म पड गयी थी। म जब बडी होऊँगी तो मैं क्या बनूगी?

अनुपमा न मा को इस गीत की बात सुनायी थी। उस समय माँ के चेहरे की हालत कैसी हो गयी थी इसे अनुपमा आज भी भुला नहीं पाती। उसकी बेटी, उसकी अपने पेट की बेटी, उसके आगे खडी होकर बिन-ब्याही अवस्था म ऐसा प्रश्न कर सकती है, यह उसे सपने म भी खयाल नही था।

इसीलिए कहती हूँ बावली, कि तू पूजा-पाठ किया कर। नही तो

भगवान कैसे दया करेंगे ? तेरी बात का उन्हें ध्यान है। औरत अगर एक बार भी उन्हें याद न करेगी तो कैसे होगा ?'

मां की बात तब भी ठीक से अनुपमा की समझ में न आयी। मां तब भी अपना आश्चर्य दूर न कर सकी। सोलह बरस की लड़की को उन्होंने हलके से झिड़का था, 'तू यह सब क्या बक रही है, बावली ? तुझे पता नहीं, लड़कियों के पैदा होने के पहले ही सब निश्चित रहता है ? किसके घर पैदा होगी, कहां क्या होगा—सब ईश्वर ने पहले से ही ठीक कर रखा है।

बचपन की उत्तेजना में अनुपमा फिर भी साहस कर मां की इस बात पर थोड़ा सन्देह प्रकट कर सकती थी, किन्तु सरमादेवी ने वह अवसर भी न दिया। अपना आंचल थामकर अकाट्य प्रमाण सामने रखा 'अगर यह न होता तो विधाता पहले से पति को दुनिया में कैसे भेज देते ?

'अब मैं ही हूँ,' सरमादेवी ने निःसंशय होकर व्याख्या की 'मुझे संसार में भेजने से दस बरस पहले विधाता को तेरे पिता को भेजने का ध्यान रखना पड़ा। सती का पति सती से छः बरस बड़ा है। ठीक है न ? तब छः बरस पहले ही सब इन्तजाम करके रखना पड़ा था।'

सरमादेवी श्रद्धापूर्ण मन से आंखें बन्द किये कह रही थी, ईश्वर की कैसी लीला है ! पूर्वजन्मों के फल के अनुसार सब पहले से ठीक कर रखा है। मेरा जन्म तो बर्दवान में हुआ और तेरे पिता का डिब्रूगढ़ में। लेकिन मिलाप तो हो गया ! फूल जब खिला तो सब काम बिना किसी रुकावट के हो गया।'

इस तरह जो कुछ होगा, उसके बारे में सरमादेवी के मन में कोई दुविधा या सन्देह न था। विधाता के हाथों में सब कुछ छोड़कर सरमादेवी बेफिक्री से दिन बिता रही हैं। सरमादेवी ने कहा, सती की बात ही लो। सती के लिए हम लोगों ने तो कोई कोशिश ही नहीं की। तेरे पिता को तिनका भी नहीं हिलाना पड़ा।'

अनुपमा मां के मुँह की ओर देख रही थी। सरमादेवी अकाट्य इतिहास को साक्षी करके बोली, 'सती के ब्याह की बात सोचकर तो अभी भी मेरे रोएँ खड़े हो जाते हैं। भगवान को बारम्बार नमस्कार करती हूँ। जन्म जन्म का पुण्य फल तथा पुरखों और ब्राह्मणों का आशीर्वाद न हो तो

ऐसा सौभाग्य हो ? सती के लिए तो कुछ भी नही करना पडा। सरमा सनगुप्त को उस अप्रत्याशित सौभाग्य की बात स्मरण कर अब भी सिहरन होती। सरमा सेनगुप्त बोलती रही, 'सती ने तो कुछ भी नही किया। मुझे नेकर केवल सिद्धेश्वरी कालीतला पर पूजा करने गयी थी। अमावस्या का दिन था। कालीतला पर बडी भीड थी। इस भीड म कौन किसकी खबर रखता है ? उसी बीच ' सरमा देवी ज़रा रुककर बडबडाने लगी, भगवान भगवान !' उसी अदृश्य महाशक्ति को नमस्कार किया। उसके बाद आखें खोलकर फिर धाराप्रवाह विवरण शुरू किया

ठीक उसी समय चपला दी वहा पूजा करने के लिए क्यो आ गयी ? चपला दी ने खुद ही कहा, दक्षिणेश्वर की कालीवाडी मे जाने की बात वह सोच रही था, लेकिन अन्तिम क्षण वषा बादल के दिन सुरेन को टैक्सी नही मिली। जयनारायण बाबू ने आनन्ददत्त लेन के सुरेन डाइवर के घर जब खबर भेजी तो उसे उल्टिया हो रही थी। चपला दी का यह हेवी शरीर, हँफनी का ज़ोर और दूसरी टक्सी भी नही मिली। चपला दी बस ट्रामा म ढक्र ढक्रकर दक्षिणेश्वर जाने की हिम्मत न कर सकी।

उसी समय श्यामाप्रसन्न बाबू—श्यामाप्रसन्न दासगुप्त बोले, दुलहिन, आज सिद्धेश्वरी कालीवाडी मे ही काम निबटा लो। मा का स्थान है, सब एक-से। जहा भी मा हैं, वहाँ स्वग है। सिद्धेश्वरी मा भी वैसी ही जाग्रत* है।

अनुपमा उस समय भी सरमादेवी के मुह की ओर देख रही थी। सरमादेवी न फिर शुरू किया, भगवान ने सब पहले से ही कपाल पर लिख दिया है। उस लिखे को कौन मिटा सकता है ?'

उन्ही सिद्धेश्वरी की नौकरानी दुलाल की मा ने हमारे साथ चपला दी का परिचय करा दिया। बोली, 'ज़रा रुक जाओ, मा का प्रसाद लेती जाओ।

वही हाफ्त-हाफ्त भारी भरकम चपलादेवी ब्लडप्रेशर के ज्यादा हो जाने म पसीने-पसीने हो रही थी। सरमादेवी न बटी से कहा, 'सती, तुम

*दवी शक्ति-सपन्न।

ो जरा पखे से हवा कर दो।'
ाचार लडकी न कोई सवाल किये बिना शात भाव से माँ के आदेश
ार हवा करना शुरू किया।
ा से थोडा आराम पाकर चपला दासगुप्ता न कहा, 'बस-बस,
बहुत हो गया।'
सके बाद चपला दी ने कहा, 'यह भाग्यवती लडकी कौन है, दीदी?'
रमा बोली, 'सोचकर चीजा को देखो। जान नही, पहचान नही। वे
डे लोग। हम उनके नख के योग्य भी नही। लडका उस समय
म था। किन्तु चपला दी के हुकुम से श्यामाप्रसन्न बाबू, खुद मांगने
तरे बाबा से बोले—अपनी भागग्यवती बेटी हमे दे दीजिए।'
ती के पिता तो उस समय लडकी के ब्याह के लिए तैयार न थे, यह
रणीधर सेनगुप्त की पत्नी सरमा सेनगुप्त ने बतायी।
यामाप्रसन्न बाबू बोले, 'हम तीन पीढियो से इजीनियर है। मेरे
रुडकी मे पास करके इन्जीनियर थे। मैं इन्जीनियर हूँ। मेरा बेटा
गपुर कॉलेज से पास कर दिल्ली म है। विलायत जाने की बात है।
रमादेवी बोली, 'तेरे बाबा के पास तो उस समय बैंक मे भी रुपया
। लेकिन ईश्वर न सब ठीक कर दिया। बिना बादल बरसात हो
सती के लिए भगवान न जो कुछ ठीक किया, वह हो गया या नही?'
ाँ के यहाँ रुक जाने पर भी अनुपमा को आपत्ति न थी। किन्तु वह
ना था। वह जरा रुक कर, सिर पर खिसके हुए घूघट को जरा खीच
ा की ओर देखकर बोली, 'और तू है। तुझसे कई बरस पहले एक
ो भगवान ने भेजा है न? अभी तो हम उसका नाम-पता ठिकाना
ही जानते। किन्तु किसी दिन हमे सब मालम हो जायेगा। तू वहाँ
गिरस्ती करेगी। बहुत पहले से विधाता यह सोचे न रखते तो क्या
बस परेशान नही होते। इससे भगवान असतुष्ट होते हैं। बाप रे!
ाकर तू क्या बनेगी, यह तुम निश्चय करोगी या भगवान करेंगे?'
र सरमादेवी ने अदृश्य विधाता को फिर हाथ जोडकर नमस्कार
।
न सरमा ने ही दूसरी कन्या के जन्म के बाद स्नेह से उसका नाम

रखना चाहा था—सावित्री। किन्तु धरणीधर सेनगुप्त ने उस नाम के प्रति कोई रुचि नहीं दिखायी। पहली लड़की का नाम सती। लड़के का नाम तारकेश्वर। दो नाम सरमा ने रखे थे—पति की राय नहीं ली गयी। इस बार धरणीधर सेनगुप्त ने वीटो का प्रयोग किया। शायद यह अंतिम मौका है। धरणीधर साहित्य के बड़े शौकीन पाठक थे। नौकरी में तरक्की न मिलने पर भी साहित्य पठन में वह पीछे न थे। बहुत सोच-समझकर लड़की का नाम रखा 'अनुपमा'।

सरमादेवी खुश नहीं हुई हैं, यह देखकर धरणीधर ने कहा, 'कैसा लग रहा है? अगर तीन अक्षरों का नाम चाहते तो उपमा कर सकती हो। उपमा सेनगुप्त। बहुत अच्छा लगेगा।'

माँ इस सब के फेर में नहीं पड़ती थी। अगर देवी देवता पर नाम नहीं है तो उपमा हो या अनुपमा उससे क्या होना है!

पुकारने के नाम के रूप में माँ ने कुछ दिनों सावित्री नाम का व्यवहार किया था। लेकिन पिता के दिये बावले नाम ने धीरे धीरे सावित्री को हटा कर लड़की पर अधिकार कर लिया। धरणीधर कहते, 'बावले नाम में एक मधुर भाव है अनुपमा में नयापन है।'

लेकिन सब कुछ उस नाम में ही था। अनुपमा ने उस दिन बाथरूम में दरवाजा बंद कर छोटे शीशे का बहुबच्चे की दीवार पर किसी तरह खड़ा कर अस्पष्ट प्रतिमूर्ति से पूछा था, 'उपमा न होने-सा तुममें क्या है अनुपमा सेनगुप्त?'

ऐवरेज। अन्यथा साधारण बहन में जो समझी जाय, वही अनुपमा सेनगुप्त थी। अनुपमा की हाइट पाँच फुट बदन का रंग काला, बीमार-बीमार-सी गठन नाक, मुँह भौंह, माथा आठ—सब साधारण, अत्यन्त साधारण थे। आँखों की बात पिता जरूर कहा करते थे। और कुछ का न मिलने पर बाबा गर्व करते कि मेरी बेटी की आँखों की उपमा नहीं है। किन्तु उन आँखों पर भी अब मोटे फ्रेम का चश्मा लग गया है।

धरणीधर ने खुद अफसोस किया था 'तुम रंग में माँ की तरह न होकर मेरी तरह हुई। मेरे पास तो देने योग्य कुछ भी न था। बस आँखों की चादर दे गया।

धरणीधर बचपन से ही चश्मा लगाते थे। मोटे चश्मे की वजह से नौकरी में उन्नति न कर सके। अब यह लड़की भी उसी राह पर चलती लगती है। मायोपिया के वह भद्दे शीशे धीरे-धीरे लड़की के ऐसे सुन्दर कमल-लोचनों को ढँक देंगे, यह सोच कर धरणीधर को जैसा दुःख हुआ था वह इस समय अनुपमा को याद आ रहा था।

अनुपमा सेनगुप्त ने उस दिन बाथरूम में परी देश की राजकुमारी की तरह आईने से पूछा, 'आईने, मुझमें और क्या है?'

लगता है, आईने ने सकोच के कारण अनुपमा के शरीर में और कुछ न देखा। अनुपमा सेनगुप्त इक्कीस बसन्त पार कर भी देह में उस प्रकार प्रचुरता की बाढ़ न ला सकी थी कि शरीर आग की तरह धधकता रहे, कुछ पतिंगे या कुछ तितलियाँ आत्माहुति के लिए उस पर झपटते आयें। या फिर काले रंग के निडर भौंरे।

अनुपमा, तुम्हारी नदी में बाढ़ क्यों नहीं आयी! वर्षा की नदी की भांति मौसम की बाढ़ कहाँ है? अनुपमा सेनगुप्त ने अपनी सहेलियों से सुना था कि लड़कियाँ अदृश्य चुम्बक सी होती हैं। जो जीत जाती है, उनका मैग्नेट बहुत शक्तिशाली होता है। दबा छिपा कर रखने पर भी यह वैद्युतिक चुम्बक अदृश्य ईथर में असंख्य रिसीवरों से पकड़े जाने के लिए अनिवचनीय वाणी भेजता रहता है।

इन सब प्रश्नों के उत्तर अनुपमा सेनगुप्त आईने से माँग रही थी। लेकिन उत्तर तो दूर रहा, आईना अचानक चहबच्चे में गिर गया। मानो लाचार होकर और कोई राह न देखकर अपना सम्मान बचाने के लिए आईने ने पानी में छलांग लगा ली हो। उस समय चहबच्चा बिलकुल भरा हुआ था। हाथ डालकर डूबी हुई चीज को निकालना सम्भव न हुआ।

अन्त में अनुपमा को बड़ी सावधानी से पानी में उतरना पड़ा। किसी को पता लगने पर फिर यह पानी कोई काम में न लाता। लेकिन अनुपमा के आगे चारा क्या था? बड़ी सावधानी से गोताखोर की तरह अनुपमा ने डुब्बी लगाकर आईना निकाला था। बोली थी, बहुत हुआ! अब कभी तुमको परेशान न करूँगी। तुम इस तरह मुझे मुसीबत में मत फँसाया करो।'

आईना या ही गिर गया था। शायद पीछे का स्टड थोडा ढीला था, शायद वहा साबुन-पानी या तेल लग गया था। लेकिन अनुपमा को लगा था कि आईने ने जान बूझकर छलाग लगायी थी।

आइना ऐसा वसा न था। लडकी के जन्मदिन पर बहुत दिनो पहले धरणीधर बाबू ने गराई ब्रदस मे खुद खरीद लिया था। मा ने कहा था, 'फिर यह फिजूलखर्ची क्यो? घर म एक दीवाल का आईना तो था ही। बहुत शीशा देखना लडकियो के लिए अच्छा नही होता। इसस लडकियो का नुकसान होता है।

क्या नुक्सान होता है, यह मा ने बाल-बच्चा के सामने नही बताया। लेकिन दुलारी बेटी का एक मामूली शौक पूरा कर धरणीधर बाबू बहुत खुश हुए थे। पत्नी से कहा था, तुम यह सब क्या कह रही हो? आजकल लडकियो का बिना आइन के चलता ही नही। बाथरूम म, बिस्तर के पास, पढने की मज पर, मेकअप की डिबिया मे, हैंडबैग म—सारी जगह छोटे बडे तरह-तरह के शीशे रहत है। मैंन तो दास साहब की नन्की का देखा है।

दास साहब पिता के ऑफिस के मैनेजर है। सारे कामो मे दास साहब ही पिता के आदश हैं। अपनी सन्तानो के लिए दास साहब की तरह ही धरणीधर सेनगुप्त जीवन-यात्रा के सपने देखा करत।

मा पहले तो चुपचाप बाबा की बातें सुनती रही। उसके बाद कुछ सोचकर बोली, 'दास साहब की लडकी के बैग म पाँच शीशे रह सकते हैं। उनको सजता है। लेकिन सनगुप्त बाबू के घर म जो लडकिया पैदा होती हैं, उन्ह जरा दूसरे ही ढग से रहना पडेगा।'

माँ की बात स बाबा को थोडा दुख हुआ था। जन्मदिन पर लडकी के लिए मामूली-सा एक शीशा ले आया, उसके लिए भी इतनी बातें?'

लगता है, माँ ने साथ ही साथ शरमा कर अपन को सशोधित कर लिया था। 'गलत क्या समझ रहे हो? लडकी के सुख म मैं काँटा क्या बनूगी? मेरी एक बात है। पहले उसका ठीक जगह ब्याह कर दो। इसके बाद ससुराल म राजरानी बनकर सज धजकर नौकरानियो मे घिरी रहे न! मैं तुम्हारे साथ जाकर लडकी को देखकर आँखें ठण्डी कर लूगी। भगवान का प्रसाद चढाऊँगी।

देखकर आखें ठण्डी करना और भगवान का प्रसाद चढाना अभी तक नही हुआ। लेकिन आईना अभी भी अनुपमा के पास है। अभी आसनसाल नन्दीग्राम से फिर हावडा की गाडी म आयी हैं। अब भी बैग मे वह आईना चुपचाप पडा हुआ है। शीशे के पीछे की लाल कोटिंग कुछ कुछ उखड गयी है—इसीलिए शायद अनुपमा का चेहरा वैसा साफ नही दिखायी देता। लेकिन अनुपमा को अजीब-सा डर लगता कि आईना ठीक ही है, सिर्फ अनुपमा ही धुधली-सी हो गयी है। उसका चेहरा, आखें, उसके बाल उसका गला, उसका शरीर, लगता है—कुछ भी साफ नही दिखायी देता।

अनुपमा सेनगुप्त, तुम एक बैग लेकर थर्ड क्लास लेडीज डब्बे की खिडकी के किनारे की सीट पर बैठ कर कलकत्ता जा रही हो? क्या?

गाडी मे एक जान-पहचान की लडकी निकल आयी। उसने भी यही सवाल किया।

हमारे देश के लोगो, खासकर औरतो, की यही आदत है। जबरदस्ती दूसरो का हाल जाने बिना उनको खाना हजम नही होता। इसान की प्राइवेसी का सम्मान करना सीखने मे इन लोगो को एक सौ बरस कम से-कम लग जायेंगे। ईश्वर ही जानते हैं कि अकारण किसी को निजनता से निकाल बाहर कर तमाम लोगो के सामने उसे बेआबरू करने की निष्ठुर सामाजिक शिक्षा इस देश मे कब प्रचलित हुई थी!

ट्रेन के डिब्बे में तुमसे बहुत दिनो बाद भेंट हो गयी थी, तुम्हारे शिष्टाचार का विनिमय हुआ था, तुम अपने पति के साथ कलकत्ता जा रही हो?

नही। क्यो कलकत्ता जा रही हो? वहां क्या काम है? मुझे सारी बात ट्रेन के डेढ-सौ लोगो के आगे बता देनी पडेगी।

अनुपमा की तबीयत हो रही थी कि एक बार डपटकर जवाब दे, यह सब मालूम करके तुम्हे क्या फायदा होगा? तुम क्या मेरी कोई खास सहायता कर दोगी?

लेकिन अनुपमा क्रमश हिम्मत हार बैठी। कुछ दिनो पहले अनुपमा ऐसी न थी।

औरतो की निरर्थक मुसकराहट चेहरे पर लाकर अनुपमा बोली, 'यो ही कुछ काम है, भाई।'

उत्तर कर और कोई सवाल न हो इसलिए अनुपमा ने मुह फेर लिया था। वह मानो अपनी ही कल्पना म ट्रेन के बाहर के हरे हरे खेतो को देखत देखत तन्मय हो गयी थी।

लेकिन उधर उसका मन सचमुच ही न था। न दीग्राम म उसने बहुतर धान के हरे खेत देखे ह। पेड जव घने हरे हो रहे थे, वही उसकी कुमारी अवस्था थी। वायु की तरगो स फस्ट इयर कालेज की प्रगल्भ किशोरी बालिकाओ की तरह अकारण दूसरो के ऊपर लुढक पडती। उसके बाद धान अविवाहित अवस्था पारकर किस प्रकार गम्भीर हो जाते—बिलकुल मानो नयी ब्याही कालेज गल हो। उसके बाद कल्ले फूटते। अनुपमा को तब डर लगने लगा। अनुपमा जानती थी कि अनागत सन्तान के भार से कालेज की लडकियो की आखो मे कालिख दिखायी देगी, धान की बालिया के भार से पौधे अपनी अकारण चचलता खोकर झुक पडेंगे। धीरे-धीरे हरियाली खोकर सूख जायेंगे। फिर लोग कहेंगे कि हरियाली से सोना निकला है।

इसीलिए अनुपमा धान के पौधे देखकर प्रसन्न न होती। उसे लगता, ये बगाल के कॉलेज गल की भाति ही असहाय हैं—अपने को सुखाकर घास फूस बना दूसरो को धान देने के सिवा और कोई चारा नही।

लेकिन, अनुपमा तुम कलकत्ता क्या चली ?

कलकत्ते की लडकी कलकत्ता ही लौट चली। अनुपमा सेनगुप्त का रिकाड खोलकर देखिये। पहले बाली प्राइमरी गर्ल्स स्कूल। पिता उस समय बालीघाट स्टेशन पर ही काम करते थे। उसके बाद हालदारपाडा उपाङ्गिनी माध्यमिक बालिका विद्यालय। पिता उस समय बालीघाट स बदलकर रामकृष्णपुर रेलवे साइडिंग म ड्यूटी दे रहे थे। किसी जगह मकान न मिलने स हालदारपाडा म कर लोगो के मकान के पास उठ आये थे।

इसके बाद रहा जगत्तारिणी गर्ल्स हाई स्कूल। पिता उस समय गुलमोहर एवेन्यू म रेल का अच्छा सा क्वाटर पा गये थे। उसके आगे बडा सा हरा मैदान था। गुलमोहर के पेड तो वैसे नही थे, लेकिन बहुत दूर तक फैली हुई हरियाली आँखो को तृप्त कर देती।

इसी क्वाटर से अनुपमा कॉलेज गयी थी। कॉलेज मे भर्ती होने की बात पर घर मे बहस हुई थी। मा ने कहा, 'लडकी को ज्यादा दूर जाने की क्या जरूरत ? हावडा गर्ल्स कॉलेज तो सामन ही है।'

लेकिन शोभना उन दिना ज़बरदस्ती कलकत्ता आ गयी थी। शोभना बहुत दिनो तक अनुपमा के साथ एक ही स्कूल मे पढी थी। शोभना सेन अतरग सहेली थी।

शोभना की इच्छा थी कि को एजूकेशन के कॉलेज मे पढे। 'तू भी आ जा। कहा उस दीदियो के कॉलेज मे हावडा मे पढेगी ?' शोभना ने यह अनुपमा को लिखा था।

शोभना की बात अनुपमा को बहुत लग गयी थी। अनुपमा ने कभी वैसा हठ नही किया था।

माँ ने डर दिखाया, 'बसो और ट्रामो म आजकल लडकियो की इज्ज़त नही रहती।'

अनुपमा राज़ी न हो सकी। शोभना ने कहा, 'रहने दे,रहने दे—ऐसी गुडी मुडी गल न बन जा। मा का जवाब देना सीख।'

अनुपमा ने सहेली के मुह की ओर देखा। शोभना बोली, 'सचमुच लडकियो की इज्ज़त है कहा ? सिफ बस और ट्राम की ही बात क्या कही जाती है ?'

पिता पहले तो चुपचाप थे। उसके बाद लडकी की बहुत आकाक्षा देखकर लडकी की ओर ही झुक गये। बोले, 'जब रिज़ल्ट अच्छा है तो जहाँ तबीयत हो वही पढो।'

'क्यो, यहा जो पढती है वे शायद आदमी नही हैं ?' मा तब भी डटी रही।

वही क्यो, ट्रेन से भी तो तमाम लडकिया यहा पढने आती हैं। मालूम है बावली की जब तीबयत हुई ।'

'लडकियो की इस तरह अलग अलग तबीयत ठीक नही है। किसी दिन तुम इसके लिए बहुत पछताओगे। माँ ने तब चेतावनी दी।

लेकिन पिता ने मानो वह सब-कुछ सुना ही नही। बोले, 'आजकल लडकियो को थोडा सख्त बनाना ठीक है, सरमा। कलकत्ते मे बस और

ट्राम मे चढने की आदत रहने से सारी ट्रेनिंग एक साथ हो जाती है। पहाड चढना, समुद्र पार करना, धरती के नीचे घुसना, मरुभूमि पर विजय प्राप्त करना, जगल मे अपनी रक्षा करना—सब शिक्षा एक साथ इतनी आसानी से दुनिया मे कही नही मिलती।'

मा ने फिर कहा, 'लेकिन लडकी को पेड पर चढाने के लिए तुम किसी दिन पछताओगे।'

अनुपमा शोभना के साथ को एजुकेशन कॉलेज मे भर्ती हो गयी।

पछतावा! मा की वातो को भी अनुपमा ने स्मृति के टेपरिकार्डर म बजाकर अब एक वार सुन लिया।

लेकिन पछताया कौन? पिता शायद समझ ही गये थे। इसीलिए मा की बात का जवाब नही दिया। जरूर मन-ही मन हँसे होगे।

धरणीधर सेनगुप्त रोगी शरीर होने से निश्चित समय मे पहले ही अवकाश लेने को लाचार हो गये।

कलकत्ता छोड लौटकर नन्दीग्राम जाने मे पिता और अनुपमा को बहुत तकलीफ हुई थी। यह गुलमोहर एवेन्यू यह ब्रिटिश ज़माने के सुन्दर-सुन्दर मकान, यह खुशी, यह भीडभाड—इन सबको छोडकर नन्दीग्राम जाना पडेगा।

लेकिन चारा क्या था? इन्सान का खून निचोड लेने के लिए ही तो ये सब कारखाने, कपनिया, रेलें है। जब तक शरीर है, जब तक कलेजे का खून देकर इजन चालू रखो, तभी तक क्वाटर है, अस्पताल है इस्टीट्यूट हैं यूनियन हैं। लेकिन शरीर टूटने पर, देह जराजीण हो जाने पर, जब सहारे की सबसे अधिक जरूरत होती है जब इलाज के बिना नहीं चलता तभी क्वाटर छोड कर कही और जाने का हुक्म होना है। कपनी के अस्पताल का दरवाज़ा बन्द हो जाता है। यूनियन मुह खोनकर कुछ कहने की जरूरत नही समझती।

य सारी वातें पिता ने ही अपनी डायरी म लिखी थी। अवकाश लेने के बाद पिता डायरी लिये बैठे रहत। डायरी सामने ही पडी रहती। लडकी के उधर नज़र डालने पर भी धरणीधर मेनगुप्त कुछ न कहत।

लेकिन माँ जरूर हताश न हुई। उनको किसी के विरुद्ध कोई शिकायत न थी। धरणीधर के गुस्से का कारण भी वह न समझ सकी। वह कहती, 'सवाल इतने दिनो बाद क्यों उठा रहे हो? यही तो दुनिया का नियम है। जान-बूझकर ही तो नौकरी करने गये थे। यह ऑफिस, बड़े-बड़े क्वाटर, अंग्रेजी अस्पताल—यह सब हमारे अपने तो नही हैं। जो नौकरी कर रहे है, उनके लिए हैं।'

माँ की धारणा थी कि अन्त समय तक लोग आँखें बन्द किये रहते हैं। वक्त रहते सच्ची बात नही समझते, इसीलिए उनके पति की तरह के लोगो को इतना कष्ट होता है। अनुपमा से भी कहती, 'सब कुछ तो तेरी तबीयत मे चल रहा है। इसीलिए भगवान ने उसे मानकर सीखने की क्षमता दी है।'

धरणीधर गम्भीर होकर चेहरा लिये नन्दीग्राम म जीर्ण मकान म एक आराम कुर्सी पर त्रिभंगी भगवान बनकर बैठे रहते। बीच-बीच म वह उठते, 'क्या हो गया?'

मा जवाब देती, 'अरे वाह! यह क्या बात हुई! होगा क्या? हम तुम क्या राजा रानी बन गये होते?'

धरणीधर इस सब को स्वीकार कर लेना न चाहते। कहते, 'बावली को बडी तकलीफ हो रही है।'

माँ इसम राजी न होती, 'लडकिया को ऐसी आसानी से तकलीफ नही होती है। कष्ट सहन करने की सामर्थ्य देकर ही भगवान लडकी बना कर भेजते हैं। नही तो मा कैसे बनेंगी?'

बाबा यह बातें मान लेना न चाहते। कभी कभी वह विद्रोह कर उठते। 'इन बातों पर आजकल विश्वास करने की इच्छा नही होती, सरमा।'

बाबा की इस विरक्ति को माँ विधर्मी भाव का लक्षण समझकर घबरा जाती। 'कहती, मामूली-सा एक सजा हुआ क्वाटर छोड़ आने का तुम्हे इतना गुस्सा है?'

पिता ईजी चेयर के गड्ढे मे स मा की ओर तिरछी निगाह म देखते। उस समय मा बाबा को शान्त करने के लिए कहती 'सब कुछ बहुत पहले से तय किया हुआ है। इस नन्दीग्राम के मकान को तय करके ही भगवान ने

तुम्हे रेल की नौकरी मे भेजा था।'

तुम्हारी नौकरी खतम होने के पहले खोका को नौकरी मिल गयी है। मिल गयी है या नही ?'

मा के इस आश्चयजनक आत्मविश्वास पर पिता को सतोष न होता। कहते, 'बावली के लिए मुझे बडी परेशानी है। उसकी शादी कल कत्ते म न कर सका।'

अब मा सचमुच ताज्जुब म पड जाती, वाह ! शादी क्या तुम करते हो ? सती की शादी क्या तुमने की थी ? ब्रह्मा षष्ठी-पूजा के दिन सौर घर मे आकर लडकियो के कपाल मे सब लिख जाते है।

माँ कोशिश करती कि बाबा फिक्र जरा कम करें। अनुपमा को बुला-कर ओट मे कहती, 'उनके सामने तू खुश-खुश रहा कर। फिक्र करने म उनका ब्लड प्रेशर बढ जायेगा।'

कभी-कभी पिता का ब्लड प्रेशर बढ जाता। ईजी चेयर पर पिता के बैठने का ढग देखकर ही अनुपमा समझ जाती कि बाबा का ब्लड प्रेशर अब खतरे की हद पर आकर ठहर गया है।

बाबा पूछते, 'बावली, यह नन्दीग्राम तुझे कैसा लगता है ?'

अनुपमा अभिनय करने की कोशिश करती। 'अच्छा तो है। खुला-खुला, कोई शोरगुल नही।'

पिता उसके साथ जोड देते, 'रोशनी नही, पानी नही, पैखाने का पन नही। एक लायब्रेरी तक नही है कि दो एक किताबें पढ लेती।'

ठीक उसी समय मा आ जाती। 'हमेशा यहा रहने के लिए तो आयी नही है। पति के घर क्या होगा उसे तुम भी नही जानते, मैं भी नही जानती। जानते हैं केवल ऊपर के वे चिन्तामणि।'

मा फिर रसोई की ओर चली जाती। पिता उस वक्त हकला हकला कर कहते, 'स्नानगृह, ट्यूबवेल और रोशनी मैं यहा ला सकता था। लेकिन तेरा ब्याह न होने तक नकद रुपये मैं खच नही करना चाहता, बावली।'

बावली इन सारी बातो को बिलकुल न समझती। वह चुपचाप पिता के बीमार चेहरे की ओर देखती रहती। पिता कहते, 'पता है बावली, पैसा ही बल होता है। आजकल जो तमाम लोग कहा करते हैं, बदूक की

नली ही शक्ति का स्रोत है, यह शायद ठीक नही है। हमारे दफ्तर के गुण-मयबाबू कहते थे, शक्ति का स्रोत मनीबैग होता है। पावर फ्लोज़ फ्रॉम दी मनीबैग।'

मा को यह सब सुनने का वक्त ही न था। वह उस समय भगवान के आगे आँखें मूंदे प्राथना करती। कहती, भगवान तुम इन्हे देखो। लडकी की कुछ गति कर दो, भगवान!'

भगवान के कानो मे क्या यह सब बातें जाती? माँ ऐसे करुणभाव से हर रोज पति की बात, बावली की बात निवेदन करती, सो तो कान म न जाने की बात न थी।

यही सोचते सोचते हावडा स्टेशन आ गया। कुली की आवाज़ा और यात्रियो की हडबडाहट से अनुपमा को होश आया।

ट्रेन से प्लेटफाम पर पैर रखते ही अनुपमा को बहुत अच्छा लगा। आफ, कितने दिनो बाद फिर कलकत्ता! आसनसोल के नन्दीग्राम जसे इस कलकत्ते से हज़ारो मील दूर हैं।

इस क्षण अनुपमा भाई की बात सोचती है। तारकेश्वर सेनगुप्त, एल० डी० सी० रिकाड सेक्शन, सी० सी० एस० आफिस, ईस्टन रेलवे कोयला-घाट कलकत्ता-1। इसी पत पर बहुत दिनो तक चिट्ठी पत्री आयी। पिता से रिक्वेस्ट करते, 'पोस्टकाड मत लिखा करो—पूरे आफिस के लोग चिट्ठी पढकर और बातो का पता लगाकर फिर हाथो मे चिट्ठी पहुँचाते हैं।'

उसके बाद माँ ने अन्तर्देशीय पत्र मे चिठिया लिखना शुरू किया। भाई ने फिर लिखा, 'बावली, तू प्लीज़ चिट्ठी के बायें कोने मे बडा-बडा लिख दिया कर 'पसनल'। जल्दी जल्दी म डिस्पैच सेक्शन म सारी चिट्ठिया खोल लेते है, उसके बाद घर की बातो की जानकारी ली जाती है।'

घर की बातो का मामला अनुपमा को बहुत बेचैन कर देता। अनुपमा मा से पूछती, 'दादा को क्या लिखा करती हो?'

मा चुप लगा जाती है। कोई जवाब नही देती। पिता की मृत्यु के बाद आजकल मा भी जैसे बहुत चिडचिडी हो गयी हैं। देवता के सामने सिर फोडकर चुपचाप नही रह सकती है। भाई को छिपाकर अकसर बहुत कुछ लिखती। लिखने के बाद पानी स लिफाफे को ब द कर लडकी को पता लिखने को दे देती।

मा गम्भीर बनी रहती। किसी तरह कहती, 'और क्या लिखू ? मेरे पास और लिखने को क्या हो सकता है ?'

अनुपमा फिर भी स तुष्ट न हो पाती। 'हाडी मे अगर गध हो तो हाडी की बात न बताना ही ठीक है।'

सरमादेवी अब पहले-सी धय की मूर्ति न रही। कहती, 'अच्छा बताऊँगी। मौ बार लिखूगी। इस बार खुल पोस्टकाड मे लिखकर ऑफिस के लोगो को बता दूगी। आप लोग बाबू तारकेश्वर सेनगुप्त को पहचान लीजिए। पिता ने सब कुछ खच कर आदमी बनाया। नौकरी के लिए किस किसको न पकडा। लेकिन अपनी बहन के लिए ।'

अनुपमा मा को रोक देती। 'ओ मा, पहले तो तुम ऐसी नही थी।'

कुछ सोचकर मा बिलकुल चुप हो जाती। कोई बात न कहती। उसके बाद दु ख से जो कुछ कहती, उससे उनका अकेलापन स्पष्ट हो उठता। वे नही रहे, किसके साथ सलाह करूँ ?'

वे रहते तो क्या सलाह करते मा से—बीच-बीच म अनुपमा को यह जानने की इच्छा होती। न दीग्राम मे रिटायर होकर लौटने पर दो एक बरस तो दोना मे बहुत परामश हुआ, लेकिन बावली को विदा करना न हो सका।

कभी-कभी मा उग्र हो जाती। चूल्हे म जाये पूजा पाठ। आख लाल हो जाती। पति की तसवीर की ओर मुह करके जो मन म आता, बकना शुरू कर देती, छि , तुमको शम नही आती जी ! वहाँ स इस तरह हँस रहे हो।'

अनुपमा को विश्वास ही न होता कि मा इस तरह कह सकती हैं। उस समय माँ को कुछ ध्यान न रहता। पति की तसवीर से कहने लगती, 'तुम हमेशा गरजिम्मेदार रहे। सती के ब्याह के वक्त भी तिनका नही

तोडा। और छोटे को ए० बी० सिखाकर, बीवी लाकर मेरी गरदन पर सवार कर चट से चल दिये। छि, मद हो! शम नही आती?'

इसके बाद ही दूने जोश के साथ माँ चिटठी लिखती, 'वाह तारकेश्वर सनगुप्त, एल० डी० सी० रिकाड सेक्शन, सी० सी० एस० आफिस ।

उसके बाद बहुत बातें हो गयी। तारकेश्वर सेनगुप्त को अब ऑफिस के पते पर चिट्ठी नही लिखी जाती। दादा का एक अपना पता हो गया है।

अनुपमा ने उस जगह की ओर देखा। 21/2 तर्कालकार सेकेंड बाई-लेन केयर ऑफ नरेन्द्रनाथ अधिकारी।

दादा भी मा को चिट्ठी पर पता लिखते, 'मिसेज सरमा सेनगुप्त, केयर ऑफ लेट धरणीधर सेन गुप्त।'

यह 'केयर ऑफ' अनुपमा को ताज्जुब मे डाल देता। जो मृत है, औरतो को उनकी भी केयर म रहना पडता है! सरमा सेनगुप्त अथवा अनुपमा सेनगुप्त लिखने से क्या डाकिया पता न लगा लेगा? चिट्ठी नही पहुँचेगी?

भाई ने लिखा, 'केयर ऑफ नरेन्द्रनाथ अधिकारी जरूरी लिखना, नही तो चिटठी नही मिलेगी—क्योकि यहाँ मेरे नाम का कोई लेटरबक्स नही है। मैं नरेन बाबू के यहाँ सब-टीनेन्ट हूँ।'

अनुपमा ने पता फिर पढा। इस बेवक्त स्टेशन किस तरह आयेंगे? ट्रेनवाली औरत ने प्लेटफाम के फाटक के पास पूछा था, 'कोई आया था क्या?'

अनुपमा ने कहा था, 'ऑफिस टाइम है, इसीलिए आना न होगा। उसके सिवा मुझे जरूरत क्या है? लडकियाँ अभी तक ऐसी अबला हैं कि स्टेशन पर किसी के न आने से अतलसागर मे गिर जायेंगी?'

अनुपमा ने जोरा से यह बात कही थी। लेकिन हावडा स्टेशन के इस जनसमूह मे गोता खाते-खाते लगा, इस वक्त गेट के पास दादा मिल जाते तो बुरा न होता। अनुपमा का मन दादा की उपस्थिति की प्राथना कर रहा था।

लेकिन दादा तो ऑफिम मे थे। कोयला घाट से सिफ इसीलिए स्टेशन

आने के कोई मतलब ही नही थे।

फिर भी अनुपमा की आँखें सर्च-लाइट की तरह रोशनी डालकर असख्य काले-काले सिरों म दादा को ढूढने लगीं।

नहीं, तारकेश्वर सेनगुप्त कहीं खोजे नहीं मिल रहे थे। यही स्वाभाविक था। लेकिन अचानक अनुपमा को लगा कि अगर पिता कलकत्ते म होते और अगर खबर पाते कि बावली अकेली कलकत्ता आ रही है तो कोई भी काम उन्हें रोक न पाता। इतनी देर मे वह लडकी को देखकर हाँफते हाँफते बढ आते। बावली के हाथ का बैग लेकर कहते, 'लगता है, गाडी म ज्यादा भीड थी! जरूर ही बडी तकलीफ हुई होगी।

दादा की दायित्व ज्ञान कुछ कम न था। उस बार जब अचानक कलकत्ता म बसें-ट्राम बन्द हो गयी, तो उस गडबडी मे बहन की तलाश करने साइकिल स कॉलेज के पास चले आये थे। गाडी बद होने का अनुपमा का कैसा डर था! दादा को उस वक्त आँखों के आगे देखकर लगा था कि कलेजे पर से एक पत्थर हट गया। माँ, बाबा—किसी ने दादा को नही भेजा था। दादा सडक पर खडे-खडे गप्पें मार रहे थे। बसो की गडबडी की खबर पाते ही दोस्त स साइकिल लेकर दादा खुद ही बहन की तलाश मे निकल पडे थे।

दादा ने पूछा था, 'साइकिल के पीछे बैठ सकेगी?

'अरे माँ! बडी लडकियाँ कलकत्ता शहर में क्या साइकिल पर चढती हैं? उस पर कॉलेज के लडके देख लेंगे तो खैरियत नहीं है। राधाकात करा ही बोर्ड पर चॉक स अनाउंस कर देगा।'

लाचार होकर भाई को साइकिल घसीटते घसीटते सारे रास्ते बहन के साथ पैदल चलना पडा था। लेकिन दादा ने जरा भी गुस्सा नही किया।

दूसरी लडकियाँ उस दिन अनुपमा से ईर्ष्या कर रही थी। दूसरे दिन बोली थी, 'अनुपमा, तू कैसी लकी है! कैसे स्वीट हैं तेरे दादा। हम कल कैसी मुसीबत रही!'

दादा के लिए अनुपमा को गर्व हुआ था। लेकिन ऊपर ही ऊपर लडकियों को सावधान कर दिया था, 'ए, मेरे दादा की ओर नजर न डालना।

'क्यो? तेरे दादा क्या ऑलरेडी कहीं रिजर्व्ड हैं? लडकियों ने मजाक

मे पूछा।

ओठ सिकोड कर अनुपमा ने कहा था, 'रिज़र्व्ड नहीं । पर ।'

'शायद दादा की नीलामी करेगी ?' शोभना सेन ने व्यग्य किया।

'नीलाम किस मुसीबत के कारण करूँगी ?' अनुपमा ने जवाब दिया, लेकिन जोर देकर नही, क्योकि पिता और माता की एक बात उसके कानो मे पडी थी। ऐसी बात कि जिसके साथ अनुपमा का भाग्य भी बँधा था। उस दिन की बात अनुपमा आज भी नही भूली। लेकिन इस क्षण, तर्कालकार सेकेंड बाईलेन जाने की राह मे अनुपमा वे सब बातें याद नही करना चाहती थी। हजार हो, हर आदमी को कुछ आजादी रहना ही चाहिए। तारकेश्वर सेनगुप्त को उस स्वाधीनता स वचित करने का अधिकार किसी को भी होना उचित नही।

इस समय सवेरा है। 21/2 तर्कालकार सेकेंड बाइलेन मे बहुत काय-व्यस्तता है। इस बस्ती की भामिनी, दामिनी, मालिनी नौकरानिया इस घर से उस घर बम्बई मेल की स्पीड से भाग रही है। फिर भी मालकिनो को सतुष्ट करना कठिन था।

टाइमपीस घडी की ओर देखकर तारकेश्वर सेनगुप्त की नयी पत्नी लेट हो जाने की आशका स परेशान हो रही थी।

अभी तक भामिनी नौकरानी दिखायी नही पडी थी। तभी वह 21/2 के आगन म आ पहुँची।

जैसे गरम तेल की कडाही म बगन पड गया हो। भाई की बहू ऊँची आवाज मे बोल पडी, 'हमारी खबर हो गयी ? थोडी और देर कर देती, भामिनी !'

इस बस्ती की नौकरानियाँ दूसरी धातु की बनी थी। वे मा-बाप की उपक्षा, पति का अत्याचार, अभाव, भूख—सब-कुछ चुपचाप सह लेती, भगवान ने उन्हे यही शिक्षा दी है। लेकिन वे किसी की बात नही सह सकती। एक बात का जवाब हजारो बातें सुनाने के लिए ऑल इण्डिया रेडियो की तरह तयार रहती।

भामिनी मुंह विचका कर बोली, 'हम तो मशीन से भी गयी बीती हैं। लोहे की घडी भी बीच बीच मे लेट हो जाती है, लेकिन हम एक मिनट देर हो जाने पर दुनिया रसातल को चली जाती है।'

सुलोचना भी छोडने वाली न थी। वह चिढकर बोली, 'यह एक मिनट है ? दुनिया भर मे सबका मन रखकर उसके बाद मेरे काम पर आकर चिल्लाओ मत, भामिनी।'

भामिनी ने उसी वक्त नल के आगे पोछा भिगोना शुरू किया था। भामिनी का हाथ और मुह साथ साथ चलते थे। 'किसका मन रखकर चलूगी, भौजी ? मन लगान के लिए जिससे माला बदली गयी थी, वह मद तो रहा नही। इसीलिए यह मसाला पीसकर, कपडे धोकर, राख निकालकर, बतन माजकर तुम लोगो को खुश रखना पडता है।'

लेकिन घडी की ओर देखकर सुलोचना का गुस्सा कम नही हो रहा था। 'रोज रोज पुराने ढर्रे से कितने दिन चला सकेगी, भामिनी ?'

पुराना ढर्रा हो गया ? अभी छ बरस भी नही हुए कि भतार ने विदा किया। भामिनी ने जोरो का विरोध किया।

सुलोचना बोली, 'वह सब बातें छोडो। मेरे यहा ठीक टाइम से आना होगा। नौकरानी के लिए ऑफिस लेट करने से आजकल नौकरी नही रहेगी।

भामिनी भी छोडने वाली न थी। बोली, 'ठीक है। तो फिर कल से मैं सबेरे पाँच बजे आऊँगी। घोष मालकिन से तुम्हारी ड्यूटी बदल लूगी।'

अब सुलोचना काप गयी। पाच बजे वह ज़रा सोया करती है। सुलोचना बोली, 'क्या तुम्हारा दिमाग खराब हुआ है भामिनी ? रात को कौन तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोलेगा और बतन निकाल कर देगा ?'

'देते तो हैं बहूजी, तमाम लोग देते हैं। तुम्ही तो इस मुहल्ले म अकेली मालकिन नहा हो। घोष मालकिन की छोटी बहू की शादी को अभी एक साल भी नही हुआ है। उस पर उसके बच्चा होने वाला है। फिर भी तो ठीक पाँच बजे सिर्डमिडाते हुए मेरे लिए किवाड खोल देती है।

नन्द के आगे इन बातो म सुलोचना को थोडा बुरा लगता। भामिनी को रोकने के लिए वह बोली, 'मैं यह सब नही जानती। जिस वक्त आने

को कहूँगी, ठीक उसी वक्त आना होगा। हम क्या तुम्हें पैसे नही देते हैं ?'

'हाय माँ, पैसे कौन नही देना, बहूजी ? यह सारे क्या मेरे भतार के घर है कि पैसे बिना घूम घूमकर नौकरी करूँ ? पर सभी अगर एक साथ भामिनी को अपनी तरफ खींचन लगें तो कैसे होगा ? तुम बडी नासमझ हो। घर मे बहू-अहू नही है कि हम बातें सुनें। और मालिक लोग ।

कहकर भामिनी अचानक बीच ही म रुक गयी।

अनुपमा ध्यान से बातें सुन रही थी। सुलोचना भाभी भी गुस्सा न रोक कर बोली, 'रुक क्या गयी, भामिनी ? बोलती चलो।'

वीरदप के साथ भामिनी बोली, 'यह सब किसके आगे रोऊँ, बहूजी ? आजकल मालिक लोग बीवियो के आगे ऐसे बहरे हो जाते हैं कि नौकरानियो की हजारो सच बातें उनके कानो म नही पडती।'

'ओह भामिनी !' सुलोचना ने जोरो की डाँट लगायी।

लेकिन भामिनी अडिग थी। 'अभी घोपाल की बहू रो रही थी कि उनके पेट का लडका मा की बात नही सुनता, फिर पैसो पर काम करने वाली नौकरानी का क्या ठिकाना !'

अब भामिनी की नजर अनुपमा पर पडी। बाहर मे बहूजी के यहा कोई मेहमान आयी थी। भामिनी जरा ठिठक गयी, लिहाज से घूघट निकाल लिया। 'बहूजी, यह नयी कौन है ? इनको पहले तो देखा नही था।'

बहूजी की छोटी नन्द का परिचय पाकर भामिनी को और भी शर्म आयी। जीभ काटती हुई बोली, 'हाय, बडे शर्म की बात है ! पता होता तो क्या मैं ननद के आगे पति के सुहाग की बात करती। मुझे क्या भले-बुरे की समझ नही रही ? नही तो क्या पति डण्डा मारकर भगा देता ? क्या इसलिए ननद के साथ मेरा सबध खतम हो गया है ? वह तो उस दिन भी काली घाट का सिंदूर दे गयी थी। कह गयी थी, लगाओ भामिनी, भाई को अक्ल आ सकती है।'

अनुपमा चुपचाप भामिनी और भावज की ओर देख रही थी। नाम की भावज है पर सुलोचना की उम्र जरूर ही उससे अधिक न होगी। कुछ कम ही होगी। अनुपमा को भौजी कहने मे अटपटा लगता था।

सुलोचना के दुलार के दो नाम हैं। एक भाई का दिया स्पेशल, अलग

एकान्त में बुलाने के लिए—शादी के दूसरे सप्ताह में सुलोचना से जिरह कर नन्दीग्राम की कमउम्र की बहूआ ने यह उगलवा लिया था—'रानी । अगर तुम तारकेश्वर सेनगुप्त के गले में माला पहनाकर उसकी रानी बन गयी तो और किसी को क्या कहने को रह गया ? अनुपमा उसमें हिस्सा न बटायेगी। बस एक आदमी की रानी बनी रहो। और दूसरा नाम था शेफाली। शेफाली फूलों से बिछी किसी भोर बेला में ही सुलोचना का जन्म हुआ था। बाप के घर तमाम लोग वही नाम लेते थे। अनुपमा भी बीच बीच में ले लेती थी। अपने से छोटी लड़की सिर में सिंदूर लगाये है इसी-लिए उसे भावज कहना होगा, यह अनुपमा को बिलकुल अच्छा न लगता।

इतनी देर में भामिनी अपना दुःख भूल कर नयी मेहमान की ओर झुक गयी। यथासंभव कुछ शरमा कर बोली, 'हाय माँ, कैसी शरम की बात है कुछ पता न चला। कब किस वक्त आयी, बताओ तो !'

अब बहूजी पर दोष लगाया। 'भौजी, तुम बड़ी चुप्पी हो। पेट से कुछ बाहर नहीं आता। इस पेट से बच्चा कैसे निकलेगा ?'

बहू और अनुपमा दोनों ही शर्म से लाल पड़ गयीं। अनुपमा नौकरानी से किसी और कुतूहल की आशंका से दुबक गयी।

'कल आयी हैं। तुम्हारे काम कर जाने के बाद।' सुलोचना को जवाब देना ही पड़ा।

इस बीच भामिनी ने नयी मेहमान को अच्छी तरह देख लिया था और बोली, 'यह भी अच्छा है। ननद से मुलाकात होना अच्छा है। मैंने तो सोच लिया था कि भाई भावज के कोई है ही नहीं।'

'हाय माँ ! होंगे क्या नहीं ? सब हैं।' थोड़ा डरते हुए सुलोचना ने जवाब दिया।

'झगड़ा-उगड़ा भी तो हो सकता है ?' भामिनी ने अपनी बात की व्याख्या की 'यह जो बबुआइन के नीचे के किरायेदार हैं, उनकी ऐसी लक्ष्मी की मूरत-सी बहू है। सुना है कि सास-ससुर-देवर-ननद-ननदोई, सब हैं। लेकिन कोई मिलने नहीं आता। त्याज्य पुत्र समझ लिया है। बाप मर गये। लड़का कोर्ट में जाकर कुछ कर न सकेगा। बाप के मकान की इंट भी न मिलेगी।'

भामिनी की बडबडाहट किसी तरह रुकना न चाहती थी । 'मैंने उस घर म काम किया था । लेकिन कैसी मुहजोर वह है । उस मधुर मुख से ऐसी तीती बातें कैसे निकलती ह, यह भगवान ही जाने । फिर भी मैं वर्दाश्त कर पडी हुई हूँ । रिस्तेदार बिलकुल नही आते । मेरे लिए भली ही है, बतन भाडे कम ह । मेरा क्या ? क्या कहती हो, दीदी ?'

भामिनी ने अब नयी दीदी की ओर देखा । 'सो ठीक है । कहा रहना होता है, दीदी ?'

'देश मे । नन्दीग्राम म । दीदी की ओर से बहू ने ही जवाब दे दिया ।

अब भामिनी ने अपनी राय दी,'बडी बीमार सी शक्ल है । सो भावज की देखभाल से कुछ दिना मे कुछ मोटी हो जाओ, दीदीमनि । घोपाल मा न भी तो वही किया था । छोटी लडकी का ऐसा सूखा चेहरा ! खाती-पीती है। पर सब जान कहाँ चला जाता है ? अन्त म बडे बेटे की बहू ने घोपाल माँ को लिखा । चिट्ठी पढते ही लडकी को घोपाल मा ने आखिर विदा कर दिया । वह सूखी टहनी-सी लडकी तीन महीने बाद जब लौटी तो मोटी-ताजी हो गयी । फौरन ब्याह हो गया । यह गढी हुई बात नही है । मेरी अपनी आखो देखी है ।

सुलोचना ने इस बेचैनी की बात को टालन के लिए ननद की प्रशसा शुरू कर दी । बोली, 'बडी गुणी लडकी है, मेरे यही तो एक ननद है, तीन पास हैं ।'

अब भामिनी को ताज्जुब हुआ । 'ऐं, कह क्या रही हो, मा ? इस बीमार से शरीर से तीन-तीन पास किये ? और देखने से लगता है कि कुछ पास ही नही किया । हमारी घोपाल मा पुराने जमाने की एक पास है । सो ऐसा घमड है कि हमेशा चप्पल पहने रहती हैं । सुना है कि उसी बात पर घोपाल-माँ के बाप ने ब्याह किया था—मेरी लडकी को हमेशा ऊँची हील का जूता पहने रहने पर भी कुछ कहा नही जा सकता ।

'भामिनी, तुम हाथ चलाओ । तुम्हारी वजह स आज दादा का ऑफिस जाना न हो सकेगा ।'

'क्या नही होगा, माँ लक्ष्मी ? ब्याह मे तुम्हारे बाप ने एक ज्यादा थाली नही दी ?' भामिनी ने मिठास से जवाब दिया । उसके बाद पूछा

'हा दीदी, सो दादा जितन पास है तुम भी उतनी पास हो ?'

अनुपमा ने सिर हिलाकर 'हा' कहा।

'सो क्यो न हो! मा-बाप ने दोनो हाथो की उँगलियो को एक ही तरह से बढाया। लडकी को पेड मान टोकरी म दबा कर उसकी बाढ रोक नही दी।

फिर घोपाल मा की बात उठी। 'घोपाल मा लडकियो को ज्यादा पढाने के पक्ष मे नही है। एक एक परीक्षा पास करा दी और उन्होंने लडका देखकर लडकियो की शादी कर दी। ज्यादा पढाने लिखाने से लड-कियो म लडकीपन नष्ट हो जाता है। बच्चे पैदा करना होगा पहले ही से शरीर और स्वास्थ्य बिगाड देने से कैसे होगा, भौजी ?'

'यह सब क्या बेकार की बातें कर रही हो, भामिनी ?' सुलोचना ने डाटा।

लेकिन भामिनी का मुह बन्द न हुआ। एक थाली म इमली रगडते रगडते भामिनी बोली मैं इतना कुछ कैसे जानू, भौजी ? मैंने तो दूल्हा के साथ बिस्तर पर एक करवट मे, उस करवट के सिवा और कुछ पास नही किया। घोपाल मा जो कहती है, सुन लेती हूँ। घोपाल-माँ के घर जितनी देर काम करती हूँ, उतनी देर मुह बन्द रखना पडता है। घोपाल माँ का बोलना ही बन्द नही होता। लडका की बहुओ को, मालिक को और मुझे एक-सा मुह बन्द किये सुनते रहना पडता है।'

'लगता है, उसी की कमी हमारे घर पूरी करती हो!' अब सुलोचना ने मौका पाकर भामिनी को सुना दिया।

भामिनी फिक से हँस पडी। मैं अपनी पगली ठहरी, भौजी। मुझे माफ कर दो। जिस औरत का पति छोडकर चला जाय, उसका दिमाग क्या ठीक रहता है ?'

भामिनी ने भाई की थाली साफ कर दी थी। एक कटोरी भी उसने झटपट नल के आगे रख दी। अब उसने अनुपमा से पूछा, 'हाँ जी नयी दीदी अब क्या बीच का इम्तहान पास किया है ?

'आ भामिनी तुमको पता भी है! आई० ए० परीक्षा खतम हो गयी है। लेकिन बाद की परीक्षा तोड कर दो कर दी गयी है—पार्ट वन और

पाट दू।' अनुपमा की भावज अब तक भामिनी के साथ बकभक किय जा रही थी।

'ये लोग मन कुछ तोड-तोडकर टुकडे किये डाल रह हैं' भामिनी ने लम्बी सास छोडी। 'देश के दो टुकडे कर तमाम लोगा का सत्यानाश कर दिया' यह लोग कुछ भी बना न रहने देगे, दीदी।'

सुलोचना को जो डर लग रहा था उसे टाला न जा सका। भामिनी ने फिर अनुपमा की ओर देखकर पूछा, 'सो ननद ने क्या सोचा ? इतने दिनो तक सास ननद की तलाश नही हुई अचानक ?

सुलोचना चुप ही रही। लेकिन भामिनी ने चुप्पी का कुछ और मतलब निकाल लिया। मुँह दबा हँस कर बोली 'क्या भौजी, कोई नयी खबर जबर है क्या ? कई दिनो से चेहरा सूखा-सा देख रही हूँ।'

भामिनी जा इशारा करना चाहती उसे समभन म औरता को क्षण-भर न लगता। सुलोचना शरमा कर बोली, 'ओ भामिनी, तुम बकार बात कर रही हो। जरा चुप रहा करो।'

भामिनी पहली कोशिश म असफन होकर प्रकट रूप मे सोचने लगी, 'तब फिर दीदी को क्यो ले आयी हो ?'

अनुपमा का शरीर अब भनभना उठा। उसने अपने आप से ही पूछा, 'दीदी को यहा भाई भावज लाय है ?

इस बात पर अनुपमा को बडा सन्देह है। मा ने जरूर भावज की चिटठी अनुपमा की ओर बढा कर कहा था—पढ लो।

भावज ने लिखा था, 'भाई बावली, तुम चिटठी पन्ते ही कुछ दिन कलकत्ता चली आओ। इसके कोई और मतलब नही ह। तुम्हारे आने से मैं और तुम्हारे दादा बहुत खुश होगे। माँ स कह देना कि तुम्ह कोई कमी न होगी। प्यार लो। इति सुलोचना।'

इस चिट्ठी को अनुपमा बैग मे साथ ले आयी थी। लेकिन कुछ शक पड गया। भावज ने अचानक अपन-आप ऐसी चिट्ठी लिखी और माँ न कुछ न पूछ कर उस मान बाबली न कहा 'जा, कुछ दिना के लिए घूम आ।' यह सोचा नहीं जा सकता। बावली को शक था कि इसके पीछे भी कुछ है जिसका उस पता नहीं है।

बावली न फिर भी माँ के स्वास्थ्य की बात उठायी थी। माँ ने कहा था 'बावली तू बिलकुल बुद्धूपन न कर। मेरा शरीर क्या हमेशा अच्छा ही बना रहेगा ? और उसके लिए तू इस जगल म पडीरहे गी ?'

माँ की चिन्ता करने को मरमा ने मना किया था, कहा था, 'यहाँ तो लोका की माँ है उसके सिवा आँगन के उस पार ही भूटू है। पुकारते ही आ जायेंगे।

पुकार कर देखो तो कैसे आते हैं ?' अनुपमा ने आँखो के आगे देखना चाहा।

लेकिन माँ न चिढ कर कहा 'तू मुझे और मत जला, बावली। तेरा भला देखे बिना मुझे मर कर भी शान्ति नही मिलेगी।'

भामिनी अपनी बहस और जारी रखती। लेकिन भाई के आ जाने से वह बात बढी नही।

रिवाइ टाइम से नहाना-खाना कर भाई आफिस के लिए तयार हो गय। अनुपमा ने देखा कि सुलोचना ने अब दादा की बुशशर्ट और पैंट आगे कर दी। दादा ने कघी उठा ली।

अनुपमा की तबीयत हुई कि इस विदा के वक्त इन दोनो को अकेला छोड कर कही हट जाये। लेकिन कहाँ जाये ? भाई का कमरा तो एक ही है।

यथासाध्य कोशिश कर अनुपमा खिडकी के बाहर देखने लगी।

सुलोचना बोली, जो जो बातें थी, भूलना मत।'

जवाब देने के पहले ही दादा ने जूते पहन लिये थे। दूसरी बार याद दिलाने के वक्त दादा कालका मेल की स्पीड से 21/2 तर्कालकार सेकेंड बाइलेन से निकल पडे थे। ऑफिस मे देर से पहुँचने को आज कोई रोक नही सकता।

दादा के कपडे लत्ते पहले अनुपमा ही ठीक कर देती। पैंट के बटन टूटने पर दादा को बावली की ही याद करना पडती थी। गुलमोहर मे रहने के वक्त उनके पास एक छोटी सी इस्त्री थी। दादा को टेबुल टेनिस के खेल मे फर्स्ट प्राइज मिला था। उस इस्त्री की पूरी जिम्मेदारी बावली पर ही थी।

आज बावली की वह ज़िम्मेदारी बिलकुल न रही ! एक बाहरी लडकी ने आकर उन सब कामो पर अधिकतर जमा लिया है।

अनुपमा ने देखा कि सुलोचना सेनगुप्त ने दादा को ऑफिस भेजकर अब दादा के और कपडो को ड्राई क्लीनिंग के लिए रेडी किया। यही स्वाभाविक है, यही तो ससार का नियम है। फिर भी अनुपमा को अजीब-सा लगा।

दादा की पत्नी ने पूछा, 'अब एक कप चाय चलेगी न ? गुलमोहर वाले घर मे माँ से छिपा कर दादा ही अनुपमा से कहते, 'बावली, माई डीयर ! तुम सी लडकी नही मिलेगी। बिलकुल हीरे का टुकडा। देखूँ तो कि किसी को बताये बिना झट से एक कप चाय कैसे बना देती है।

'दादा, अभी मैं पढ रही हूँ,' बावली ने झूठ-मूठ की व्यस्तता दिखायी। बावली जानती थी कि इस वक्त दादा को एक कप चाय देना ही पडेगी।

'सिर्फ लिखन पढने से ही तो नही होगा। जब लडकी देखने आयेंगे तो पूछेंगे कि लडकी गृहस्थी का क्या-क्या काम जानती है, तब क्या जवाब दूंगा ?' दादा सुना देते।

'मेरे लिए तुमको इतना सरदर्द नही लेना पडेगा,' बावली ने झूठा गुस्सा दिखाया। 'सिगरेट का नशा करने के पहले एक कप चाय से गला तर कर लेना चाहते हो तो वैसा कहो।'

उस समय दादा बहन का मुह बद रखने के लिए उठने लगे। यह सिगरेट की बात माँ-बाप को मालूम हो, इसे दादा बिलकुल नही चाहते थे।

उस समय सारा भार अनुपमा पर ही था। अब अनुपमा खुद ही हाथ पर हाथ रखे बैठी है। एक दूसरी मामूली-सी जान-पहचान की लडकी दादा को ऑफिस भेजकर पूछ रही है चाय पियोगी न !'

गुलमोहर वाले घर म अकेले बावली को ही पता था कि किस डिब्बे म चाय है, चीनी को दो नबर की नीची माँ ने कहाँ छिपा रखी है। लेकिन यहाँ इस कमरे म छिपाने की कोई बात ही न थी। सुलोचना सेनगुप्त न अपनी मर्जी के मुताबिक सब सजा रखा है।

बेचारी सुलोचना ने यो ही सौजन्यवश पूछा था, 'चाय पियोगी !

लेकिन अनुपमा को अचानक लगा कि इस सवाल से मतलब 21/2 तर्का-लकार मेकेड वाइलेम की यह गहस्थी सुनाचना की है। तारकेश्वर सेनगुप्त मरे हस्वड है, तुम यहाँ अतिथि हो। मर पूछन पर तुम सवर साढे दस बजे दूसरी चाय पीन का आग्रह दिखा सकती हो।

चाय की बैठक समाप्त होत न होत सुलोचना ने फिर घडी की ओर देखा। अनुपमा की तबीयत थी कि इस वक्त दादा की पत्नी के साथ थोडी गप्पें की जायें। औरतो की बहुत सी बातें होती ह जो मर्दो के रहत वैसी नहीं जमती। दोपहर को दादा नही रहते भाभी पर काम का भार भी नहा रहता यही सुनहरा मौका है। विशेष रूप से, यही परिचय का आरभ होगा। अनुपमा न देखा था कि कोइ नया मेहमान, खासकर बुआ या मौसी, के आन पर माँ पहले तरह-तरह की बातें पूछती। अनुपमा को भी वह सब बातें पहले ही निगलनी पडती।

दादा की पत्नी का यह तिरछी आखो से घडी देखना अनुपमा किसी तरह भी सहन न कर पाती। तबीयत होती कि एकाध बात सुना दे तुम क्या दोपहर को किसी ऑफिस वापिस जाती हो?' लेकिन उस मिठाई मे जो किरकिरी है यह बात अनुपमा की अजानी न थी। सुलोचना सेन-गुप्त की पूरी हिस्ट्री अभी भी अनुपमा को याद थी। सुलोचना के पिता न चिट्ठी मे लिखा था कि मेरी बटी एम० एफ० की परीक्षा देने वाली है। वही चिट्ठी पढ कर माँ ने कहा था कि 'अहा, अब परीक्षा म बठगी! गहस्थी के बोझ से बेचारी आगे परीक्षा म न बैठ सकेगी।

दादा ने खुद ही कहा था, 'मा बहुत सरल हैं। विज्ञापन की भाषा बिलकुल नही समझती। एम० एफ० की परीक्षा देने वाली है मान स्कूल फाइनल फेल। फेल हो आयी है यह भी हो सकता है और शायद फिर कभी परीक्षा म न बैठ।

अनुपमा न सोचा था कि दादा मुश्किल मे पड जायेंगे। लेकिन कलकत्ते म अकेले मेस म रहत रहत कायला घाट कैंटीन म अड्डा मारते मारत, दाम्पत्य से बहुत चुस्त हो गये थ। दादा बोले, 'हमारे आफिस के हरि-

प्रसन्न बाबू तो रेगुलर विज्ञापन करने जा रहे हैं। लडकी टेस्ट में पास ही नहीं हो पाती इस बात को लेकर तीन चास हो चुके। किन्तु हरिप्रसन्न बाबू विज्ञापन में लिख देते हैं, एस० एफ० परीक्षार्थिनी।'

दादा की पत्नी की जान घडी में ही अटकी हुई थी। नहीं तो फिर घडी की ओर क्यों देखती है? अब बात मालूम हुई। सुलोचना खुद ही बोली 'वक्त हो जाने पर मुश्किल होगी। ऊपरवाली नल पर कब्जा कर बैठेंगी और वैसा होते ही बडी मुश्किल हो जायेगी।'

बाकायदा इमर्जेंसी की हालत थी। सुलोचना बोली 'बडी मुश्किल से यह समझौता किया है। ग्यारह बजे के बाद नल पूरी तरह अधिकारी की पत्नी और उनकी बहू के कब्जे में चला जायेगा। वह पूरा डेढ घटा लेंगी। जब निकलेंगी तो चहबच्चे में एक मग पानी भी न बचेगा। ओह कैसा अजीब है!'

सुलोचना बोली 'भाई तुम अभी झट से गुसलखाने में घुस जाओ। चान्स मिस करने से दिन-भर बिना नहाए रहना पडेगा।'

स्नान न करने के मामले में अनुपमा का पूरा शरीर घिनघिना उठा। स्नान बिना करने की हालत को वह सोच भी नहीं सकती थी।

'और तुम?' अनुपमा ने पूछा।

'तुम्हारे बाद ही झट से घुस जाऊँगी। ऊपरवाली की घडी हर रोज पाच मिनिट स्लो हो जाती है। इसलिए ग्यारह बजकर पाच तक टाइम है।'

दादा की बहू ने साबुन का केस और गमछा आगे कर दिया था। अनुपमा के साथ भी गमछा है लेकिन उसने उसे अभी तक निकाला नहीं था। गुसलखाने तक अनुपमा को भावज ही ले गयी। पानी में भीग भीग कर आधा दरवाजा गल गया था।

अनुपमा को साथ लेकर भीतर घुसते ही दबे गले से सुलोचना बोली, 'दरवाजा अन्दर से बद नहीं होता। कितनी बार कहा कि शामिल गुसल-खाना है, अन्दर में एक अटक का इन्तजाम कर दो। लेकिन कोई सुनता ही नहीं।'

थोडा अटपटा लगने पर भी अनुपमा ऊपरी तौर पर बोली 'ठीक है। इसके लिए फिक्र मत करो।'

सुलोचना बोली, 'फिकर तो कुछ नही है। पानी से भरकर बा
दरवाज़े के सामने रख देना। उससे खुलेगा नही।'

अनुपमा को याद आया कि गुलमोहर में उनका कितना अच्छा बाथ
था। बिचारी भावज को वह सब देखने को ही न मिला। वहा दादा
शादी होने पर कैसा मजा रहता। गुस्लखाना था कि हॉल था। कपडे-अ
उतार कर जैसे चाहो नहाओ, कही कुछ भीगने का नही। और इस मक
का गुस्लखाना जैसे कि टेलीफान बूथ हो, ट्रेन के टॉयलेट को भी शर्मि
करता है। दरवाजा बद कर देने पर भीगी लकडी जैसे बदन पर भीगे गमं
सी लगती रहती।

'मैं सब समझ लूगी, तुम जाओ।' अनुपमा ने अब भावज को छु
देनी चाही।

भावज फिर भी जाना नही चाह रही थी। जरा-सा कुछ कहने पर भ
रुक जाती थी। 'क्या हुआ? कुछ स्पेशल कहना है?' अनुपमा पूछ है
बैठती।

'यह रहा तेल।'

'ठीक।' अब तो भावज अनुपमा को छोडकर अपने कमरे मे ज
सकती है।

'यह तो भाई बडी गडबड हालत है।' भावज अब बोल पडी, 'पान
भी राशन। हमारी पाँच बालटिया है। तुम्हारे दादा एक बाल्टी से काम
चला गये हैं। अब तुम्हारी दो और मेरी दो है। ऊपरवाली के चहबच्चे म
निशान लगा हुआ है। पानी का लेवेल उससे कम न होगा। छोटे लोगो
की फैमिली है न।' सुलोचना फुसफुसा कर बोली।

अनुपमा गुलमोहर वाले मकान मे दो बाल्टिया तो बाथरूम मे घुसकर
फर्श पर लुढका देती थी। बाल्टी का आकार भी सुविधाजनक न था।
बिलकुल छोटा साइज़। फिर भी अनुपमा ने ऐसा भाव दिखाया कि वह
सब समझ गयी है। भावज से बोली, 'तुम बिलकुल फ़िक्र मत करो।'

अनुपमा दरवाजा बद करने जा रही थी कि तभी फिर टोकी गयी।
भावज की एक रहस्यमय हँसी निकल पडी, 'अरे सुनो, पानी *कम है इसलिए*
हाथ बाधकर बैठी न रहना। हाथ-मुह पर साबुन लगाओ। बहुत जरूरी है।

इस 'ज़रूरी' बात के पीछे शायद कुछ भेद छिपा है क्योंकि भावज ने जिस तरह से बात कही, उससे यही लगता है।

जरूरत क्या हो सकती है, इसका अनुपमा ने भी खुद अदाज लगा लिया था। और इसीलिए नहाने मे बिलकुल लापरवाही न दिखायी। बेबी साइज की एक बाल्टी के पानी से कितनी सफाई हो सकती थी, उससे भी ज्यादा साफ हो गयी। गुलमोहर एवेन्यू से आने के पहले चौधरी बागान के मकान मे बहुत कम पानी से काम चला लेने की दक्षता अनुपमा ने प्राप्त कर ली थी। जरूरत होने पर अनुपमा सुलोचना को भी ढग सिखा देगी।

उसी तरीके से हाथ मुह के लिए बहुत ही मामूली पानी इस्तमाल कर अनुपमा ने साबुन के भाग उठा लिये थे। इस तरह हलके से दाहिने हाथ की मदद से मुह पर पानी स्प्रे करने से एक बूद भी पानी फर्श पर नही गिरा। इस तरह मुह बाल्टी की ओर बढा दिया कि देह से टकरा कर फालतू पानी फिर बाल्टी म ही आ गिरे जिससे उस पानी को फिर काम मे लाया जा सके।

मामला बिलकुल सीधा न था। जिसे यह समझ नही, उनको तरकीब सूझती ही नही। अच्छी तरह साबुन लगाने के पहले ही देखेंगे कि पानी का डिब्बा खाली कर दिया।

अनुपमा को बहुत दिनो बाद एक और ढग याद आ गया। जब दो बाल्टिया का राशन है तो पूरी बाल्टी भरना ही नही। हर बार आधी बाल्टी से थोडा ज्यादा पानी लिया जाये, जिससे कि दो बाल्टियो के पानी का तीन बार की तरह उपयोग किया जाये।

मुँह पर, आखो पर, गरदन पर, हथेलियो पर थोडा साबुन घिसते घिसते अनुपमा ने सोचा कि भावज की यह 'बडी जरूरत' कितनी जरूरी है।

मुँह पर पानी के छीटे मारते-मारते अनुपमा ने अचानक यह बात खोज निकाली कि उस अकेली लडकी पर उसने बहुत ज्यादा निर्भर करना आरभ कर दिया है। सुलोचना सेनगुप्त! तुम एस० एफ० परीक्षार्थिनी हो, उम्र मे भी मुझसे छोटी हो। तुम कुछ महीने पहले मुझसे भी अधिक कमजोर थी। इसी लड़की ने किस असहाय भाव से उस दिन अनुपमा

भी दादा की इस छ महीने की पत्नी की एक बात मे वीटो हो गया, साडी खराब हो गयी ।

'एक कटास्ट का डिज़ाइन चाहिए ।' सुलोचना ने अब वपना बक्स खोला। उलट पलट कर एक साडी भी निकाली । उसके बाद उसी को अनुपमा की ओर बढाकर बोली, 'पहन डालो, इस साडी का मुकाबला नही। इसकी एक हिस्ट्री है। अभी नही, बाद म बताऊँगी।'

अनुपमा ने बात को बढाया नही। हिस्ट्री को इस तरह से भुलाये न रखकर सुलोचना कुछ तो कह ही सकती थी। भावज होने पर भी सुलोचना को याद रखना चाहिए था कि अनुपमा उससे उम्र मे बडी है। सिफ उम्र मे ही क्या, विद्या म भी अनुपमा बहुत आगे है। स्कूल-कॉलिज मे इतनी सीनियर लडकी को क्लास की सारी लडकिया दीदी ही बुलाती। किसी कॉलेज म सुलोचना को हिम्मत होती कि अनुपमा की तरह सीनियर का नाम लेकर पुकारती ?

नयी ब्याही लडकियो का स्पेशल शृगार का स्टाक छ महीने मे नही समाप्त हो जाता है। चमडे का एक छोटा बैग खोलकर ननद की ओर बढा कर सुलोचना बोली, 'ज़रा लगा लो।'

इस सारी लीपापोती का अनुपमा को ज़रा भी शौक नही है। कालेज की सुनन्दा दी कॉस्मेटिक्स का बिलकुल ही उपयोग नही करती थी। उस बार राजगिर आर्डटिग पर जाते वक्त सुनन्दा दी ने कहा था, 'यह लड-कियो का चूना पोतना क्या सचमुच अच्छा समझती हो, अनुपमा ? बिल-कुल बेकार बात है। तमाम मद लोगो ने इसी तरह की बातें फैला दी है और हम पीढियो से उसे लेकर आईने के आगे अपने को सजाती हैं। लेकिन इसस कुछ फायदा नही होता। मकअप किया हुआ चेहरा, खिजाब म काले बाल, खीची भौंह—यह सब नकली हैं। यह आदमी को समझन मे दो मिनट लगते हैं। सेंट-पाउडर-पोमेड के बिजनेसमैनो के सिवा इनसे किसी को कोई फायदा नही होता, यह तुमस गारन्टी के साथ कह सकती हूँ।'

सुनन्दा दी उस बार सिफ लडकिया ही को लेकर राजगिर गयी थी और बहुत-सी बातें बता रही थी। वे सारी बातें ही अनुपमा को याद

आ रही थी। लेकिन इस वक्त उन सब के सोचने का मौका न था। सुलो चना जल्दी मचा रही थी, 'तुमको क्या हो गया ? अचानक किसकी बात याद आ गयी है ? देखो भाई ।'

अनुपमा की तैयारी समाप्त होते-होते सुलोचना खुद तैयार हो गयी थी। इन्ही कुछ महीनो मे सुलोचना देखने-सुनने म बहुत अच्छी हो गयी थी, इस बात से इनकार नही किया जा सकता था।

सडक पर निकल कर सुलोचना ने ऐसा ढग अख्तियार किया मानो गाव की किसी लडकी को लेकर निकली हो। अरे बाबा, जो तुम्हारे साथ राह चल रही है वह इसी शहर म बडी हुई है, इसी शहर मे उसने फ्राक उतार कर साडी पहनी है। इसी शहर म स्कूल गयी, इसी शहर मे को एजूकेशन के कॉलज म पढी है। यह सब तुम कैसे जानोगी, सुलोचना सेन गुप्त ? तुम तो उस समय सिउडी मे थी। शादी के एक साल पहले कल कत्ते आकर तुमन कलकत्ते का सब कुछ जान लिया !

'फोटो स्टूडियो के आगे आते ही मामला अनुपमा को साफ हो गया। स्टूडिया के सामन बडा-बडा लिखा हुआ था, 'तुम क्या सिफ कागज पर उतरी हुई फोटो हो ?' अनुपमा इस उक्ति के माने न समझ सकी।

इतने दोपहर मे फोटो स्टूडियो सूना न था। प्रोप्राइटर वीरेन बाबू किसी का फोटो उतार रहे थे। सुलोचना बोली 'थोडी देर हो गयी, कुछ खयाल न कर।'

बीरेन बाबू बोले, 'आजकल कौन चीज ठीक वक्त से होती है, बताइय तो दीदी ? पहले पन्द्रह सोलह बरस की लडकियो की तसवीरें सबसे अधिक खीचना था। अब सब इक्कीस बाईस हो गयी हैं।'

इन्हे बाहर रोककर बीरेन बाबू फिर स्टूडियो के अन्दर चले गये। सुलोचना बोली, 'इस फोटो स्टूडियो का बडा नाम है—खासकर मैरिज फोटोग्राफी म।'

'बीरेन बाबू की तसवीर की दया से कितनी लडकिया विवाह सागर पार कर जाती है, उसका कोई ठीक नही—इनकलूडिंग सुलोचना सेनगुप्त। मेरी तसवीर भी इस स्टूडियो म खिची थी।' सुलोचना ने जोडा।

अन्दर काम समाप्त कर वीरेन बाबू निकल आये। साथ म फोटो की

विषयवस्तु और शायद उसकी माँ थी।

एडवांस के रुपयों की रसीद लेते-लेते महिला बोली, 'क्या होगा, बताइये?'

बीरेन बाबू शांत भाव से बोले, 'होगा क्या, फोटो स्टूडियो में आने पर जो होता है, वही होगा। झटपट लड़की की शादी हो जायेगी।'

महिला कुछ आश्वस्त होने पर भी उत्सुकता को पूरी तरह कम न कर सकी। बोली, 'इस मुटापे का क्या होगा? आजकल कोई मोटी शक्ल पसन्द नहीं करता।'

'मैंने सब देख लिया है। फोटो स्टूडियो में जब आयी है तो कुछ कहने की जरूरत नहीं। फोटो देखकर कोई अगर कहे कि आपकी लड़की मोटी है तो पैसे वापस ले जाइयेगा।'

सुलोचना ने उस वक्त फुसफुसाकर कपड़ों का रहस्य ननद को खोल दिया। 'यह साड़ी मैं बाप के घर ही रखकर आ रही थी। लेकिन इस बार उन्होंने जोर देकर वह मँगा ली, इस साड़ी को पहन कर ही तो मेरा फोटो यहां खींचा गया था।'

इस बीच एक साहब और फोटो के सब्जेक्ट को माँ के साथ लेकर हाजिर हुए। उन्हें बाहर बैठाकर बीरेन बाबू अनुपमा और सुलोचना को लेकर अन्दर घुसे।

'ओह, इस दोपहर के वक्त भी आपके स्टूडियो में इतनी भीड़ है।' सुलोचना ने औरतों की-सी मीठी शिकायत की।

खुशी की मुसकराहट के साथ बीरेन बाबू बोले, 'यह वक्त केवल मैरेज फोटोग्राफी का होता है। दोपहर के बाद लड़कों की फोटो नहीं उतारी जाती, लेकिन लड़कियों की ऐसी गड़बड़ नहीं होती। बताइये तो क्यों?' बीरेन बाबू ने पूछा। उन्होंने फौरन तमाम कोनों से अनुपमा को गौर से देखा।

दोपहर के बाद लड़कों की फोटो खींचने में क्या रुकावट है, इसे सुलोचना या अनुपमा में कोई न समझ सका।

बीरेन बाबू रसिक व्यक्ति थे। अनुपमा की ओर नजर करते-करते बोले, 'आदमियों को बहुत सुविधा रहती है। लेकिन इस एक बात में

उनका प्रिविलेज नहीं है।

'नहीं बना सकी न ? हलके से बीरेन बाबू मुसकराए। 'लडका के दाढी होती है। सवेरे सवेरे बनाते हैं। एक बजे के करीब चेहरे पर एक कानी झौंटो आ जाती है। लडकियों की यह गडबड नहीं होती।'

अब सुलोचना ने बैग से अनुपमा का एक पुराना फोटो निकला। बीरेन बाबू की ओर बढाकर बोली, 'यह देखिये न, कैसी भाडी तसवीर उतारी है।

बीरेन बाबू ने बत्तीस रुपया की फीस वाले स्पेशलिस्ट की तरह फेमिली डाक्टर के प्रेस्क्रिप्शन की ओर दया से भरकर देखा। दबी हुई राय जाहिर की, 'सभी अगर लडकियों की फोटो खींच सकते, तो सोचना ही क्या था ?

शहर के बाहर मुफस्सिल में खिंची है।,' सुलोचना ने कहा।

हूं बीरेन बाबू ने कुछ राय न जाहिर की।

'इस तसवीर को लडके के मा बाप के पास भेजने से किस तरह जवाब आयेगा ? चिट्ठिया लिखी लेकिन जवाब ही न था।'

बीरेन बाबू ने अब मानो बात समझी। बोले, 'मुफस्सल की लडकियाँ यहा की लडकियो के मुकाबले म कम होती है, ऐसी बात नहीं है। फिर भी इन फोटोवालो की खराबी से अच्छे अच्छे लडके निकल जाते हैं।'

मेरी सास का शरीर तो सोच म गला जा रहा है। बताइए तो क्या होगा ?'

मामूली फोटो उतरवाने आकर इतनी गाना की जरूरत क्या थी ? अनुपमा को बहुत अटपटा लग रहा था। सुलोचना का बोलना बन्द करा सकती तो बुरा न था।

कमरा ठीक करते-करते बीरेन बाबू बोले, 'एक नींद लेकर क्यो न आयी ?

ओह नींद म फोटो खिंचाने का क्या सबब ?'

'कमजोर लडकी का चेहरा शायद जरा भारी लगता ?' सुलोचना ने औरताना-सी हँसी म चहक कर पूछा।

'ठीक समझी।' बीरेन बाबू ने आश्वासन दिया।

'तो क्या कल नीद के बाद ले आऊ ? सुलोचना को उसमे आपत्ति न थी। लेकिन अनुपमा को जरूर विशेष आपत्ति थी।

बीरेन बाबू बोले 'ठहरिए। लाइट ऍड शेड मे ही काम चला लूगा।

अनुपमा मानो स्टूडियो के सेट पर अभिनय कर रही हो। जिस तरह कहा जाता, उसी तरह वह देह को वैसे ही मोड देती। हाय ईश्वर !

बीरेन बाबू ने सहसा पूछा 'ओहो ! असली बात तो पूछी ही नही। आडनरी या स्पेशल ?'

'न, इस बार कजूसी करना ठीक नहीं है बीरेन बाबू। आप स्पेशल ही खीचिए। सुलोचना ने जवाब दिया।

'स्पेशल क्या होती है ?' अब अनुपमा ने पूछा।

'एक नही तीन पोज़।' सुलोचना ने व्याख्या की।

बीरेन बाबू बोले, बहुत लोग केवल क्लोज अप देखकर ही सतुष्ट नही होते—सिर से पाव तक फुल व्यू चाहते है। और तीसरा शाट इस फोटो स्टूडियो का आविष्कार है। एक नम्बर की तसवीर लडके के बाप-मा और फेमिली के लिए होती है। दो नम्बर की तसवीर हाइट बताने के लिए। लेकिन आजकल अकसर इससे नही चलता। लडका और उसके दोस्तो की नजर दूसरी तरह की होती है। सम्भव हो तो उनके लिए एक स्पेशल पोज़ होता है। चेहरे पर मामूली-सी एक खिलती सी मुसकराहट रहे। लगे कि सब्जेक्ट उसकी ही ओर स्पेशल नज़र किये है।

अब बीरन बाबू ने भेद खोला। सुलोचना से बोले 'आपके वक्त भी तो तीन तसवीरें खीची गयी थी।

ओह ! तो तीसरी तस्वीर थी और वह छिपाकर दादा के पास भेज दी गयी थी। उस तसवीर को देखा था यह अनुपमा को याद नही आ रहा था। वह तसवीर, तो वह तसवीर ही अनुपमा के दुर्भाग्य का कारण है। न, अब उन सब कामो पर अनुपमा परेशान न होगी।

बीरन बाबू बोले, 'शान्त होकर बठिए। मन मे कोई चिन्ता न करें। मन म फिकर रहने से फोटो में उसका शैडो आ जाता है।'

बीरेन बाबू न झटपट तसवीर खीच ली, क्योकि बाहर वेटिंग लिस्ट बढने लगी थी।

सुलोचना ने कह ही डाला, 'ओ, आपके स्टूडियो आने म बडा डर लगता है। कितनी लडकियाँ शादी के बाजार मे वेट करती हैं, वह यहाँ आने पर समझ म आता है।'

वीरेन बाव ने कहा, 'कोई चिन्ता नही। फोटो स्टूडियो की फोटो सबको पार लगा देगी। यहाँ कुछ देर बैठिए तो देखेंगी कि निमत्रण पत्र भी आ जायगा। फोटो स्टूडियो का केस लग जाने पर बहुत लोग निमन्त्रण पर बुलाने आते हैं। लेकिन जाना नही हो पाता। पुराना पुलिस का काम भी तो छोड नही सकता। पैनल म हूँ। पुकार आते ही जाना पडता है। आपके बाबा को मालूम है।

उसके मतलब समझ मे आये। सुलोचना के पिता को भी वीरेन बाबू जानते है।

'बाबा कैसे हैं?' वीरेन बाबू ने पूछा। 'लडकी के ब्याह की फिक्र जब न रही तो अच्छे ही रहना चाहिए।

'बाबा ठीक ही हैं।,' सुलोचना ने जवाब दिया 'लेकिन चिन्ता बढ गयी है। एक अच्छा लडका ढूढ दीजिए न, वीरेन बाबू। मेरी इस ननद के लिए।'

'देखिए न अब क्या होता है,' फोटोग्राफर वीरेन बाबू ने दिलासा दिया।

इसके बाद और कुछ न हुआ। मात्र कुछ पीडा के महीने बेकार बीते। फोटो स्टूडियो के बीरेन बाबू एक के बाद एक नये प्रिंट सप्लाई करते रहे।

पहले तो सुलोचना खुद ही फोटो स्टूडियो से हाफ साइज़ प्रिंट ले आती। अब सुलोचना खुद अकसर न जाती। अनुपमा से कहती, 'प्लीज़, जब बैठी ही हो तो ज़रा फोटो स्टूडियो तक घूम आओ न। लेकिन प्लीज़, अपने दादा न कह बठना कि तुमको ही फोटो लेने भेजा था। वरना हाने पर मेरी खरियत नही है।

अनुपमा को बडा अटपट लगता। दुनिया भर के काम उसे दो, तो भी उस कोई आपत्ति नही होगी। और तो और, सौदा लाने तक म। अभी उस

दिन तो दादा टूर पर गये थे। अनुपमा खुद ही सडक के मोड के बाजार से तरकारी ले आयी थी। सुलोचना ने कह कर भद्रता दिखायी थी। कहा था, 'मैं भी तुम्हारे साथ चलू।'

'एक आदमी जो काम कर सके, दो की क्या जरूरत?' अनुपमा ने भावज को समझाने की कोशिश की।

'बाजार मे तमाम बदमाश लोग होत है न।' सुलोचना ने कहा। 'इसीलिए तो इस बस्ती की औरतें बाजार जाना नही चाहती।'

जब बाजार नही जाना चाहती तो अनुपमा को क्या भेज रही हो? यह प्रश्न सीधे-सीधे पूछना उचित था। किन्तु अभी परिस्थिति तो नही है। दिन उल्ट हैं। अभी जिस सुलोचना ने पूछा था, यह भी साथ जायगी या नही!

सुलोचना ने स्वीकार किया, 'भामिनी को भेजा जाता। लेकिन एक रुपये मे आठ आने की चीज आयेगी। रेल के बाबू के घर मे क्या इतना बर्दाश्त किया जा सकता है?'

हाँ, एक बात है। दादा अब लोअर डिवीजन बाबू नही है। यहा आकर ही अनुपमा को यह पता लगा। शादी के दो महीने बाद ही कोई प्रोमोशन हुआ है। अवश्य यह पत्नी के भाग्य से हुआ। लेकिन घर नही बताया गया। क्या मालूम, यह सुलोचना के निर्देश से ही हो, या यो ही हो, या किसी रहस्य से? मा चिटठी लिखती हैं—तारकेश्वर सेनगुप्त एल०डी० क्लाक, सी० सी० एस० ऑफिस, ईस्टन रेलवे, कोयलाघाट।

अनुपमा ने भाई से बताया था। तब वह नयी-नयी आयी थी—हालत तब ऐसी न थी। भाई ने कहा था, 'सचमुच भद्दी भूल हो गयी, इतन दिन बाद अब लिखने से ।'

अनुपमा समझ गयी। अब लिखने से सचमुच गलतफहमी हो सकती है। माँ भी इतनी दूर से क्या समझ बैठेंगी—सारा कुसूर बहू के सर ही मढ देंगी। उससे अच्छा कि कोई जरूरत नही। लोअर डिवीजन क्लाक और अपर डिवीजन क्लाक मे ऐसा क्या अ तर है?

बाजार करने मे जिसे आपत्ति न थी, फोटो स्टूडियो जाने मे उसके कदम नही बढते थे। लेकिन अनुपमा भावज को पूरी तौर पर दोष नही दे

सकती। सारा काम सुलोचना ही क्यो करे ? इस घर म शादी हुई है, पति की बहन की शादी के लिए उसे भी भागदौड करना पडे, यह कैसी बात है ?

अनुपमा को देखत ही फोटो स्टूडियो के बीरेन बाबू सब समझ जाते है। अभी तक फोटो ने काम नही किया, साथ ही यह भी समझ जाते हैं। बीरेन बाबू चाहते है कि उनकी फोटो मे काम हो जाय। पहली बार जो कापी का प्रिंट लेता, उसीमे काम निकल जाने पर बीरेन बाबू को कोई आपत्ति नही है। एक्स्ट्रा कापी से यह स्टूडियो और कितना फायदा कर सकता है ? इसस तो पहली बार ही काम मे आ जाने से फोटो स्टूडियो का अच्छा विज्ञापन होता है। वर को साथ लेकर, झिलमिलाती साडी पहन सिर पर बडा सा लाल सिंदूर का लटकन झूल रहा हो, बहन या भाई को साथ लेकर लडकिया फिर फोटो खिचाने आती। अब रुपया पैसा सब कुछ नया दामाद देता। और बीरेन बाबू न मनमाने ढग से इस युगल फोटो का रेट बढ़ा रखा है। आदमी उस समय स्पेशल मूड म रहता है। दाम दरपर सोचने का वक्त नही रहता।

दो-एक जिद्दी लडकिया बात जरूर छेडती। पूछती, 'बाप रे, पहली बार तो फोटो का दाम इतना नही था।'

बीरेन बाबू हँस कर जवाब देते, 'वह तो एक की फोटो थी। दो की फोटो का दाम ज्यादा नही होगा ? दो तरह के लोगो पर फोकस कर ऐड-जस्ट कर फोटो खीचने मे बहुत वक्त लगता है।'

हर लडकी के साथ इसीलिए फोटो स्टूडियो के मालिक अच्छा सबध रखते हैं, जिससे कि काम हो जाने पर वे ठीक समय पर वर के पल्ले पड-कर किसी और स्टूडियो म न चली जायें।

अनुपमा की ओर देखकर बीरेन बाबू सब समझ गये। उन्हें कुछ कहना नहीं पडता। वे बस इतना ही पूछते, कितनी कापिया बना दू ?' अब की बार फोटो का रेफरेंस नम्बर वह रजिस्टर म लिख लेत।

उस वक्त अनुपमा को बडा अटपटा लगता। शम के मारे मिट्टी म मिल जाना पडता। लगता कि वह बहुत छोटी हो गयी है। कहाँ का कौन है जान नहीं, पहचान नहीं। दादा फोटो बाटते जा रहे हैं और अनुपमा

इधन जुटा रही है—फोटो लेन के निए खुद ही दुकान पर आयी है।

बीरेन बाबू पूछते ह, 'साइज ?'

सुलोचना ने पहले फुन साइज ली थी, उसके बाद हाफ साइज। पोस्टकाड साइज जेब म रखन म भाई को सुविधा होती थी। उसके बाद क्वाटर साइज पर उतर आये।

हर फोटो भेजते वक्त दादा लिख देते, 'फोटो से कुछ भी समझा नही जा सकता है। कृपा कर किसी दिन तक्लीफ कर खुद लडकी को देख जायें। आशा है, नापसन्द न होगी।'

दादा यह बात क्या लिखते थे ? यह अनुपमा समझ न पाती, क्योकि बात बिलकुल झूठ थी। इन कुछ बरसो मे किसी ने अनुपमा को अभी तक पसन्द नही किया। लेकिन दादा पूरी आस लगाए बैठे हैं।

असल म बात दादा की अपनी नही है। भावज ने पिछली बातें सिखा दी है। सुलोचना के पिता न इसी ढग से चिट्ठी लिखी थी। इसी स अन्त म काम हो गया था।

कल ही अनुपमा ने नयी फोटो की खुद डिलीवरी ली थी। भाई ने उस तसवीर को देखकर भावज के साथ झगडा भी किया था, 'इस बार प्रिंट अच्छा नही आया है, सुलोचना। डिलीवरी के वक्त देखा क्या नही ?' भाई ने चिढकर कहा।

भावज ने चुपचाप बात को दबा दिया। 'एक ही फोटो स प्रिंट लेने पर खराब हो जाता है।' भावज ने मौका पाकर थोडा ब्लफ भी दिया था।

आज सवेरे से अनुपमा चुपचाप कमरे मे एक कोने मे लेटी है। उसकी उठने की ही तबीयत न हो रही थी।

भावज बाहरी कामकाज म भामिनी से उलझी हुई थी। भाई ने आकर देखा कि अनुपमा चुपचाप लेटी हुई है।

'बावली, तू जमीन पर इस तरह क्यो लेटी हुई है ? खाट पर जाकर लेट जा।

खाट माने शादी मे मिली भाई भावज की चारपाई, जो आधा कमरा

घेरे हुए थी।

'तू सालीमूली तकलीफ क्या उठा रही है, बावली ?' दादा ने फिर पूछा, 'मैं नरा यह बिस्तर उठाय दे रहा हूँ।' बावली का पतला गद्दा और चादर तह किया हुआ चारपाई के नीचे पड़े रहते थे।

बावली बोली, 'तुम्हे तकलीफ न करना होगी, मैं रखे देती हूँ।'

दादा उस समय खिड़की पर बैठे तेजी से चिट्ठी लिख रहे थे। चिट्ठी क्या होगी, यह अनुपमा को मालूम है। अखबार में बाक्स नम्बर का जवाब।

यह एक अद्भुत दृश्य होता है। अंतिम जीवन मे बाबा को भी कोई काम न था। दिन रात उस नन्दीग्राम में अखबार का इन्तज़ार करते रहते थे। अखबार के पहले पृष्ठ पर भी नजर डालने का वक्त न मिलता। साधे वैवाहिक विज्ञापन के कॉलम पर टूट पड़ते।

कुछ देर बाद ही माँ पूछती, 'क्या हुआ ?'

बाबा कहते 'वैसा कुछ नही। सिर्फ तीन हैं। हो क्या गया ! देश के सब वैद्य[1] लड़के क्या दाल चावल-तेल की तरह गायब हो गये ?'

मा को ऐसा सन्देह न होता। कहती, 'होंगे कहाँ से ? वैद्यों के यहाँ क्या लड़के ज्यादा होते हैं ? लड़कियां ही तो अधिक हैं—यह तो तुम्हारे सिवा दुनिया मे सब को पता है।'

पिता बात पर विश्वास न करते। कहते, 'तो कहना चाहती हो कि खोका के ब्याह के वक्त लड़कियों के बाप टूट पड़ेंगे ? कोई मुश्किल न होगी ?

'वह बातें अभी मत कहो,' माँ ने उसी समय डाटा था। 'पहले लड़की को पार लगाओ—उसके बाद लड़के की बारी है।'

बाबा उस वक्त मान जाते और फिर चिट्ठी लिखना शुरू करते। कई दिन तक मुह बन्द किये कई पोस्टकार्ड छोड़ आते। उसके बाद निराश होकर फिर पुराना मसला शुरू करते।

'पता है। इतनी चिट्ठियाँ लिखता हूँ, वे कहाँ जाती है ?' बाबा एक

1 वैद्य—बंगालियों की एक ऊँची जाति।

सिगरेट सुलगाकर माँ से पूछते ।

'ठीक जगह ही जाती हैं। लेकिन तुम ढग से लिख नही पाते हो। लोग तुम्हारी चिट्ठी पढकर विश्वास नही कर पाते। विश्वास किये बिना वे जवाब क्यो दें ?' माँ ज्यादा ज़ोर देकर कहती।

'वह क्यो ?' बाबा बहुत आपत्ति करते। 'यह तो मेरा रेल का ड्राफ्ट नहीं रहता। नन्दीग्राम हाई स्कूल के हेडमास्टर तारिणी चटर्जी का ड्राफ्ट था। सुनो न !' यह कह कर बाबा ज़रा ज़ोर मे पढना शुरू करते

'महाशय, अत्र पत्रे आप मेरा श्रद्धा सहित नमस्कार स्वीकार करें। आ०बा०प०से आज पता चला ।'

'हाय राम ! बाप कहने की बात क्या है ?' माँ रसोईघर से सिहर पडती।

'बाप किस लिए कहूँगा ? वह शाट मे कहा था। आ०बा०प० माने आनन्द बाजार पत्रिका।'

'शाट मे तुम करो। लडकी की शादी तुमसे न होगी। ज़रा-सी चिट्ठियाँ लिखने मे भी तुमको आलस।' मा ने झिडका।

तब से सक्षिप्तीकरण छोडकर बाबा ने पूरी बात लिखना शुरू किया, 'सविनय निवेदन, आज के 'आनन्द बाजार पत्रिका' के विज्ञापन से पता चला कि आप अपने पुत्र के लिए एक प्रकृत सुन्दरी लडकी की खोज मे है। खुशी के साथ बता रहा हूँ कि मेरी कन्या कल्याणी अनुपमा सेनगुप्त सब प्रकार से आपके महान परिवार की पुत्रवधु होने के योग्य है। श्रीमती सब लक्षणो से युक्त, बी०ए० पास होने पर भी घर के कामा म निपुण और सिलाई के काम मे होशियार है। पात्री का देवारि गण[1] है। हम पश्चिम बगीय है, वैद्य हैं, आलम्बायन गोत्र नीलकण्ठ गुप्त के वशधर हैं।'

पिता ने अब गव के साथ माँ को सुनाया, सभी पश्चिम बग की जगह प०ब०लिखकर सक्षिप्त कर देते है। लेकिन मैंन तुम्हारी बात के अनुसार पूरा लिखा है।'

---

1 जन्म के समय लग्न राशि गण, आदि में एक लक्षण—देवारि गण अर्थात राक्षस गण।

मा सन्तुष्ट हो गयी और चिटठी भी पोस्ट हो गयी। लेकिन कोई जवाब न आया। फिर भी बाबा का चिटठी लिखना बन्द न हुआ।

अब वही टेंडिशन अक्षत रख कर दादा भी चिट्ठी लिखते। चिटठी की भाषा जरूर कुछ बदल गयी थी। सुलोचना के परामर्श से देवारिगण की बात हटा दी गयी। सुलोचना बोली, 'राक्षस-गण लिखने से कौन जान बूझ कर जवाब देगा ?

दादा ने पाच रुपये खर्च कर एक कुडली भी बनवा ली। इस सशोधित जन्मपत्री मे बहुत-सी उन्नति हो गयी। बावली की उम्र दो बरस कम हो गयी और राक्षस-गण से कुमारी अनुपमा सेनगुप्त का सीधे देव-गण मे प्रमोशन हो गया था।

'छुटपन मे अगर इतना लिखते तो तुम्हारा लिखना बहुत अच्छा हो गया होता।' अनुपमा ने एक बार अफसोस के साथ भाई से कहा था।

बावली को क्या दुःख है, यह भाइ ने निश्चय ही समझ लिया था। लेकिन कुछ न समझने का बहाना कर छोटे लडके की तरह बोला, 'आ बावली ! तू इस वक्त मुझे हँसा मत, चिट्ठिया अभी खतम करनी होगी।'

भाई ने आजकल एक और राह निकाल ली थी। पोस्ट आफिस की। और बहुत लोग ऐसा न करते। कोयलाघाट जाने की राह मे अखबार के दफ्तर मे नेकजर्नी कर बडे भारी बक्स मे बाक्स नबर की चिट्ठिया छोड जाता।

'बावली ! दादा अनुपमा को बुलाते। 'आज क्या तेरी तबियत खराब है ?'

थोडी देर पहले ही भाई ने बावली की खाँसी की आवाज सुनी थी। चिट्ठी पर से नजर हटाये बिना दादा बोले, इस मौके पर बुखार-जुकाम लेकर न बैठ जाना।

दादा यह बात क्यो कह रहे हैं, इसे बावली समझती है। जुकाम-बुखार म लडकियो का रग बिलकुल जल जाता है। आँखो की कोरो म कलौंछ दिखायी देती है। लडकी देखने आने के मामले मे यह बहुत खराब होना है।

लेकिन वह सब लेकर अनुपमा दिमाग खराब करना नही चाहती। इस समय उसे पिता की बात याद आती। पहले पिता कहते, 'मेरा

बड़ा दामाद इंजीनियर है। मेरा छोटा दामाद डॉक्टर होगा।'

बात मा को बुरी नही लगती यद्यपि उन्होंने मजाक किया जाति से वैद्य, तो पेशे से भी वैद्य चाहिए।'

कई महीनो म बाबा ने डॉक्टर की आशा छोड दी थी। बहुत-से डॉक्टरो के बॉक्स नबरा पर लिखन पर भी कोई परिणाम नही निकला था। एक शरीफ आदमी ने बस एक छपा उत्तर भेजा था। नाम पता बताया नही। सिफ बॉक्स नबर का रेफरेंस था। '7वी अगस्त के मेरे विज्ञापन के उत्तर म आपके पत्र के लिए असख्य धयवाद। इस बीच मेरे पुत्र न विवाह के सम्बध मे राय बदल दी है। इसलिए मिलने का कोई अथ ही नही। आपकी कया के लिए सुपात्र की प्राथना करता हूँ। इति बाक्स नबर 2465।'

यह चिट्ठी पाकर भी बाबा कुछ सतुष्ट हुए थे। मा से कहा था, 'डॉक्टर लडका आजकल जल्दी नही मिलता, सरमा। स्टूडेंट रहत ही वे सब ठीकठाक कर लेते हैं।

'तुमसे कहा है ? इस नदीग्राम मे बठे बैठे तुमने सब जान लिया,' मा ने टिप्पणी की थी।

'कई शायद पढते रहते है।' अपने पक्ष का समथन करते हुए बाबा बोले थे, 'लेकिन बहुत स डॉक्टर लडकी तलाश करते है। विज्ञापन म ही लिखा रहता है कि डॉक्टर लडकी को वरीयता है।'

'तो बाबली को डॉक्टरी पढाने स होता।' बाबा इस तरह अफसोस भी करते। और मा साथ ही-साथ बोलती रहती, 'तुम लोगो का मजाक मत बनो।'

डॉक्टर से उतर कर चाटड अकाउटेंट और अफसर पात्रा की ओर पिता ने नजर डालना शुरू कर दिया।

'सी० ए०[1] लोगा की आजकल बडी तनख्वाह होती है।' बाबा फिर माँ के साथ सलाह करते। इसके सिवा उनके चरित्र-वरित्र भी और ढग के होते है—उन लोगो को तो डॉक्टरा की तरह रातो को जाग कर नाइट ड्यूटी

1 चाटर्ड अकाउन्टेन्ट।

नही देनी होती है। इसीलिए सी० ए० लोगा को प्रेम-स्नेह कम होता है। समझी।'

पति की बात पर विश्वास करने पर भी माँ के मन म सवाल उठा था। थोडा शरमा कर उन्होने पति को फिर घेरा, 'हाँ, तुम सब जान कर बैठे हो।'

'मैंने अपनी आखो से देखा है, सरमा। बहुत अधिक पढाई मे उन्हें किसी ओर नजर डालने का समय नही मिलता। लोकनाथ बाबू हमारे इस्टेब्लिशमेंट के हैड असिस्टेंट थे, उनका लडका तो हमारी आँखो के आगे सी० ए० बना। बाप की बातो के अनुसार यह लडका ब्याह करने पर तैयार हो गया।'

अब पिता को अफसोस हुआ, 'हम अगर सेनगुप्त न होकर बोस घोष होते! लोकनाथ बाबू मित्तिर हैं। मेरे साथ उनका जैसा प्रेम था! एक बार पकडने पर इनकार न कर सकते।'

मामूली-सी बात के लिए अवसर खोये जाने के इस वृत्तात से मा चिढ जाती। माँ उस समय पिता पर बहुत बिगड उठती। 'लडकी पेट से ही पढ कर तो बीस बरस की नही हुई। देख देखकर बस दूसरी जात के साथ प्रेम क्या किया? दासगुप्त, सेन, दत्तगुप्त—इन सब मे क्या तुम्हारे आफिस मे एक भी न था?

सचमुच सरमा, बहुत बेवकूफी हो गयी थी,' बाबा ने बडी सहजता से अपना अपराध मान लिया। 'यह मामूली बात उस वक्त दिमाग म क्या नही आयी?'

आती कैसे? मैंने ही तुम को परेशान किया,' अब माँ ने दोष अपने सिर पर ले लिया। 'पहली लडकी को ऐसे राजी-खुशी ले गया। मैंने सोचा, इस बार भी ऐसे ही कोई आ जायेगा।'

डॉक्टर-इजीनीयर-सी० ए० की आशा पिता ने ही की थी। बाबा की मृत्यु के बाद माँ की उम्मीदें कम हो गयी थी। किसी भी सुपात्र स शादी कर लेने को वह तैयार थी। उसी तरह वह चिट्ठियाँ लिखती थी। लेकिन माँ को लिखने का अभ्यास न था। परिणाम होता कि धीरे-धीरे चिट्ठी लिखने मे बहुत समय लग जाता। उन चिट्ठियो म भी निश्चय ही गलतियाँ रहती।

नही तो उत्तर क्यो नही आता ? इतने कष्ट से लिखी चिट्ठी, पैसा लगाकर भेजी जाती—क्या कोई पढता ही न था ?

अनुपमा का मन खराब हो जाता। माँ के कारण कष्ट भी होता। लेकिन मा बिलकुल निराश न होती। बेटी से कहती, 'नया कुछ नही है। सबको ही यह तक्लीफ करना पडती है।' उसके बाद किसी दिन टप से जवाव आ जाता।

उसके वाद मा न उसे भाई के पते पर भेज दिया। भावज न खुद ही सादर निमन्त्रित किया। लेकिन वात क्या थी, उस पर सदेह होता था। मा न क्या छिपाकर कोई आवेदन भेजा था ? या कोई अभियोग है ? अनुपमा ने करवट बदली। इस सवेरे के वक्त ये सब बातें सोचने से क्या फायदा ?

दादा ने इतनी देर म चिटठी के साथ अनुपमा की तसवीर की पर्किग शुरू की। सुलोचना ने इस नये कायदे को सुझाया। कई अच्छी पार्टिया देखकर पहले ही तसवीर भेज दो। लिख दो कि कृपा कर तसवीर वापस कर दें।

कल जब अनुपमा स्नान गह मे गयी थी, उसी समय शायद दादा और सुलोचना मे इस सबको लेकर कुछ बातचीत हुई थी। बात को अनुपमा ने ठीक से नही समझा था। कौन पहले चिढ गया था, इसका भी अदाज न लग सका। अनुपमा ने सिफ यह सुना कि दादा कह रहे थे, 'दोपहर को तो तुम्हे कोई काम नही रहता। बैठे बैठे लिख सकती हो।'

अनुपमा को अचानक कमरे मे देखकर दोनो चौंक पडे थे। स्नान गह से इतनी जल्दी उसके आने की वात न थी।

उसके वाद से ही भाई ने जसे बहुत कोमल होकर ध्यान से कई चिटिठया लिखी थीं। कल कही जाकर शायद मुलाकात भी की थी। आज सवेरे भी फिर काम शुरू हुआ।

'बावली, क्या तेरी तबीयत ठीक नही है ? तू आकर चारपाई पर लेट जा न।' भाई की वात से अनुपमा को चैन न आ रहा था। इससे तो अच्छा था कि दादा कल की तरह कहते, 'क्या हो रहा है, वावली ? धूप चढकर दोपहर हो गयी है, अभी तक एक कप चाय नहीं मिली,' तो बहुत अच्छा रहता।

परसा जो लोग आये थे, वे विज्ञापन की पार्टी न थे। सुलोचना के पिता के परिचित एक घटक[1] ने मुलाकात करायी थी। घटक के अलावा साथ मे तीन लोग थे—लडके का पिता, माँ और भाजा। भाजा सात-आठ बरस का रहा होगा। उसे भी बुलाकर इस काय मे लाने का क्या मतलब था, यह भगवान ही जानें।

मुह म पान दबाये मालकिन बोली थी, 'मुझे छोडकर रह भी नही सकता है। इसी से लाना पडा।'

सुलोचना भी मालकिन की हाँ मे हा मिलाते हुए बोली, 'हाय मा ! आप लोग क्या पराये हैं ? नाती को साथ म नही लायेंगे तो किसको लायेंगे ?'

मिठाई का इतजाम तीन लोगो के लिए था। इस बीच कुछ ज्यादा मिठाई खरीदने के लिए भामिनी भागी।

घटक अपना काम कर रहा था। बोला, 'सिफ मुह पर ही नही, पीछे भी जो कहने की बात है, कहूँगा। ऐसा परिवार कम ही मिलता है। लडकी के पिता धरणीधर सेनगुप्त का सा आदमी इस युग मे नही मिलता।'

'वह कहा हैं ?' अब मालकिन ने पूछा।

'वह नही रहे' सुनकर मालकिन बहुत असतुष्ट हुई थी। 'यही आप लोगो मे खराबी है, घटक बाबू। लडकी का पिता नही है यह तो आपने साफ साफ नही बताया था।'

घटक ने फौरन तक दिया, 'बाप नही रहे, इसलिए कोई असुविधा नही है। ऐसे पिता-तुल्य दादा सरकारी सर्विस मे हैं।

उसी समय अनुपमा खाने की प्लेट लिये कमरे मे आयी। डिशा को रखकर नमस्कार किया। लेकिन मालकिन मानो देखकर भी न देख रही हो। वे मुह बिगाडे बैठी रही। शरीफ आदमी बोले, 'अगर कुछ पूछना हो तो पूछ लो।'

'तुम्हारा नाम क्या है ?' मालकिन ने अब लडकी की ओर देखा।

इस प्रश्न के क्या माने ? लडकी का नाम, बाप का नाम, भाई का

---

1 वह व्यक्ति जो विवाह सबधों के लिए लडके-लडकी की तलाश करता है।

नाम, घटक ने सब कुछ तो पहले ही बता दिया था।

फिर भी अनुपमा को नाम बताना पड़ा। मालकिन उस वक्त दुलारे नाती को रसगुल्ला खिला रही थीं। नाती ने हाथ में लगा रस अनुपमा की साड़ी से पोंछ लिया।

हैं हैं होने वाली थी। नाना डाँटने चले। लेकिन नानी बोली, 'वह ना समझ है। उसकी क्या समझने की उमर हो गयी है कि लड़की देखने आने पर कैसा व्यवहार करना चाहिए?'

तब घटक बोले, 'बी० ए० पास लड़की। आप लोगों को बड़ी आसानी होगी।'

मुँहफट मालकिन उस समय खुद बिस्कुट खा रही थीं। घटक को सुना दिया, 'बी० ए० पास लेकर क्या धोकर पियेंगे, घटक मशाई?'

खाना पीना कर वे लोग बोले, 'अच्छा भाई, उठें।'

इस बीच शरारती लड़के ने उठते उठते पाँव की ठोकर से एक कप तोड़ दिया। मालकिन खफा होकर बोलीं, 'फिर जो कभी तुझे लड़की देखने ले जाऊँ!'

उसके बाद ही सब जान बूझकर मालकिन बोलीं, 'चिंता मत कीजियगा। बाद में खबर भिजवा दूँगी।'

उनके थोड़ा आगे जाने पर घटक ने भागे भागे आकर कहा, 'बहुत फेवरेबल लग रहा है। मेरा राह-खर्च जल्दी से दे दीजिये।'

राह-खर्च वसूल करने के लिए ही घटक आगे आये थे, क्योंकि उनके बाद तो कोई खबर न रहती। कोई हाँ या न कहने की भलमनसी तक इनमें न होती।

उस दिन भामिनी तक चिढ़ गयी थी। वह बोली, 'इन घटक लोगों को क्या मुँह लगाती हो, दीदी? एक नंबर के डाकू होते हैं। यह मोटी मालकिन को जाने कितने घरों को ले जाता होगा। जानता है कि इनको लड़की पसंद न आयेगी, फिर भी ले जाता है। यही उनका पेशा है दीदी। पार्टी से कहेगा, मैंने तो दिखा दिया, अब लड़की पसंद न आये तो क्या करूँ? दो एक साल विनो को भी पकड़ा था। उन्हें फुसलाता कि लड़की पसंद आये या न आये एक बार देख तो लें, बहुत ज़िद कर रहे हैं।

यह सब सुनकर अनुपमा के साथ सुलोचना भी कांप उठी, 'क्ह क्या रही हो ?'

भामिनी बोली, 'ये झूठे होते हैं। देखा नही, लडकी का बाप नही है, यह बात उनसे छिपा गया था। और मोटी मालकिन तो दरवाजे के बाहर पाँव रखते ही बोली, जिस लडकी का बाप नही वहा शादी की बात ही नही उठती। बूढे मालिक फिर भी कुछ कहन जा रहे थे लेकिन मालकिन न डाँटा—इन बातो मे तुम जरा भी नाक न घुसेडना। अपने जीवन से भी सबक नही मिला। लडकी का बाप न रहने पर ससुराल मे दामाद का सम्मान नही होता।'

'यह घटक फटक सब छोडो, दीदी। मेरी बात सुनो। भामिनी न उपदेश दिया। 'हमारी पाँची माँ से एक कवच बनवा लो। माँ का नाम लेकर उस कवच को शनि आर मगलवार को पहनने से सूपनखा तक राजकुमारो को पसद आ जायेगी। ज्यादा खच भी न होगा।'

और अधिक बरदाश्त न हुआ। अनुपमा न भावज से कहा, 'उस औरत स चुप रहन को कहगी ?'

भावज अनुपमा की हालत समझ रही थी। भामिनी से बोली, 'बाद म बातें करना। अभी चुप रहो, भामिनी !'

किसी किसी दिन लडकी देखने वालो की पार्टी और अनुपमा का जीवन उलट पलट जाता। वह दृश्य, बँधी-बँधायी बातें आँखो के आगे, काना मे जाकर ऐसी अशाति उत्पन्न करती जिन पर काबू पाने म तीन दिन का वक्त लग जाता। इसी बीच अनुपमा को सिरदद की दवा खानी पडती। नही तो वह किसी तरह आख उठाकर न दख पाती।

लेकिन सुलोचना इतनी परेशान न होती। भाई से कहती, 'पहले से तो अच्छा है। पहले तो नन्दीग्राम स सिफ चिटठी ही छोडना होता, कोई जवाब ही न मिलता। अब फिर भी दो एक इटरव्यू होते है।'

आज भी वह इटरव्यू है। सिरदद पूरी तरह दूर होने के पहले ही परीक्षा है। दादा ने कहा, 'तेरा दुख समझता हूँ, बाबली। लेकिन बता तो क्या करूँ? लडको की नौकरी के इटरव्यू और लडकियो के यह लडकी चुनने के इटरव्यू। इन यत्रणाओ के हाथा से छुटकारे की राह तो भगवान

ने अभी भी नही निकाली।'

दादा कम सहज भाव से जिम्मदारी भगवान के सिर मढ़कर शात रहते। भगवान ने तो केवल बगाली लडके लडकिया को ही पदा नही किया और भी तमाम लोगो को पैदा किया है। वहाँ क्या हो रहा है, इसे हम क्या नही जान पाते ?

दादा ने अब प्यार से पुकारा, 'बावली !' कुछ सोचकर दादा बोले, 'नौकरी का इटरव्यू भी कम सरल नही होता, बावली। बहुत-कुछ करके लोगा को आजकल नौकरी मे सलेक्ट होना होता है।

बावली फिर भी मुह नही खोल रही है। दादा के लिए अचानक उसका गुस्सा बढ जाता है। दादा की ओर देखकर बावली मन ही मन कह रही है, दादा तुम चाहते तो बावली को इस हालत से ।"

दादा को शायद कुछ शक हुआ। नही तो अचानक बावली को सतुप्ट करने के लिए क्यो कहत 'तो मैं माने लेता हूँ कि लडका के मुकाबले लड कियो का यह इटरव्यू बहुत मुश्किल होता है क्योकि इटरव्यू अनजान जगह होता है, जान पहचान वाला कोई उसमे अपनी नाक तक नही घुसेडता है। लडकी दखने का इटरव्यू अपने घर पर होने से यत्रणा डबल हो जाती है।'

वह भी अच्छा है। दादा, तुमने अब एक बहन का दुख समझना सीख लिया। तब अगर एक बात और समझते, तो क्या उनका नुकसान बढ जाता ?

बावली, क्या तरा सिरदर्द बढ रहा है?' भाई आज इतने कोमल कैसे हो गये ? बावली को बहुत कष्ट होता है इसलिए या डर लग रहा है। बावली सब कुछ साफ साफ मा को चिट्ठी मे लिख देगी। लेकिन उससे ही क्या होता है ?

अच्छा दादा, तुम ता देखते हो कि तुम्हारी दुलारी बहन को कितनी पीडा है। अनजान, आधे पहचाने तमाम लोगो की बीच बीच मे इस घर पर चढाई होती है और वे तुम्हारी बहन का चुनाव न कर किस तरह अपमान कर चले जात हैं। रसगुल्ला चखते वक्त ही वे जानते हैं कि अनुपमा सेनगुप्त का सेलेक्शन नही हुआ है फिर भी वे लाग किस तरह का

झूठा अभिनय कर हँसते हँसते चाय के प्याले म चुस्की लगाते हैं।

लडकी गोरी नही है ये जानकर ही ये सारी पार्टिया अनुपमा सेनगुप्त को दखने आती हैं, फिर भी हर बार क्या रग की बात उठती है? क्या लोग उस तरह बेशर्मी से जानना चाहते हैं कि खच कसा करेंगे? मा के निर्देश के अनुसार दादा रुपयो का जो अदाज बताते हैं, उससे काला रग धोकर दूर नही किया जा सकता है।

दादा, इस सब म तुम्हारा अपमान नही होता है? मेरी तो बात ही छोड दो। मा तो छुटपन से ही सावधान करती आ रही हैं कि लडकी बनकर जब पदा हुई हो तो बहुत-कुछ सहना पडेगा। सहन न कर सकने पर लडकी ही नही होती। अमल डॉक्टर ने एक बार माँ से कहा था कि शायद भगवान भी मन-ही मन वही चाहते है, क्योकि दखा जाता है कि पदा होने के बाद पहले बरस लडके बहुत भोगते है। विदश मे बहुतेरे नाना नानी चाहत हैं कि लडकी की पहली सतान नातिन ही हो। ऐसा होने पर पहले बरस नासमझ मा को बच्चे के कारण कम कष्ट होगा।

अमल डॉक्टर की बात सच है या नही, पता नही। लेकिन अगर कुछ भी सच हो तो लडकी होने से मुझे अपमान बरदाश्त करने की सामर्थ्य बढानी होगी। लेकिन दादा, तुम तो मद हो। ये सब लाग जब तुम्हारी चिट्ठिया के जवाब नही देते, घर बैठे अपमान कर जाते है, भेजी हुई फोटो को लौटाने की बात याद नही रखते तो तुमको कैसा लगता है?

दादा, तुम चाहते तो इस सब से अपने को और इस अनुपमा सेनगुप्त को बचा सकते थे। तुम्हारे यहा एक बहू तो रहती ही।

दादा, तुम क्या बाबा की उन बाता को भूल गये? गुलमोहर के क्वाटर म ही तो वह माँ को आश्वासन देते थे कि बावली के भविष्य के लिए तुम इतनी परेशान न हाना सरमा। शादी पक्की जरूर होगी। अच्छा लडका भी मिलेगा। ऐसी गुणवती हमारी बेटी है। रग के सिवा और किसी बात मे हमारी यह बेटी बडी बेटी से कम नही है।

माँ कहती, ऐसी बडी बडी बातें मत किया करो। अति दर्पो हत लका।'

बाबा कहते, 'दप की क्या बात है? मेरे बेटे बेटी गुणी हैं बहुतेरे

लडके-लडकिया से अलग हैं, यह सच है। इसमे दप की क्या बात है?'

मा फिर भी अनात भय से सिहर उठती। बाबा ने उस समय कहा था, 'लडकी के ब्याह मे हमे कोई कष्ट न दे सकेगा। वैसी जरूरत हुई तो बदली का इतजाम कर लूगा। लडका, लडकी जब दोना ही हैं तो ऐसी चिंता की क्या बात है?'

बातचीत माँ को बुरी न लगती। उस समय बात को भूलने पर भी पिता की मृत्यु के बाद जवाब लिखते लिखते थक्कर पिता की बात माँ के दिमाग मे आ गयी थी।

दिमाग मे ठीक स नही आयी थी। एक के बाद एक विज्ञापन देखता कि पात्र पात्री दोना की आवश्यकता है। 'पात्री उज्ज्वल श्यामवण। पी यू। भाई बैंक कमचारी है। बदली म आपत्ति नही है।'

इसके पहले तक माँ कहती कि लडकी का ब्याह न होने तक लडके के ब्याह की बात ही नही उठती। यह घडा गले मे बाँधकर मैं किस तरह लडके की बहू को घर में लाने की बात सोचू?

अनुपमा फिर भी कहती, सभी यह बात कहे तो बस लडकियो का ही ब्याह होगा। लडको के ब्याह की बात ही न उठेगी।'

'तू चुप रह, बावली। सबकी बातें सोची जायें तो दुनिया न चलेगी।' मा न झिडकी लगायी।

इसके बाद कुछ दिनो तक यह बदली के विवाहो के विज्ञापन देख-देखकर उन्होन और मतलब निकाल लिये।

उस बार मौसी के घर पर बहन की शादी के वक्त सभी इकटठा हुए थे। दादा, तुम भी वहा थे।

मौसी से सहसा शादी की बात उठायी। समथ लडकी अथवा लडका होने पर बडा का और कोई चिंता की बात नही रहती है। मौसी बोली थी, ओ सरमा, तू तारक की बात क्या बिलकुल भूल गयी? मेस मे ही रहकर जिंदगी बिता देगा? पेट म गडबड हो गयी तो इसमे ताज्जुब क्या है? उन सब जगहा मे नौकर-नोकरानिया का जो हाल है। उसे यह पेट का रोग है, लेकिन दूसरी जगह न होने से पट का दद दूर न होगा।'

इसके बाद मौसी न माँ का और भी डर दिखाया था। 'रोजगार म

समय लडके को मेस मे होटल में, डालकर इस तरह सो न जा, सरमा। कुछ हो गया तो रोते न बनेगा।'

इसके बाद ही मा न बदली की बात उठायी, 'हाँ, दीदी, यह अदली बदली चीज़ कसी लगती है ? अगर बेटे की बहू से कुछ कह दिया तो उस तूफान को मेरी बेचारी बेटी को झेलना पडेगा। बिना अपराध।'

मौसी बोली थी, 'अदली-बदली का तो युग है, सरमा। यह पाकिस्तानियो के अनजान लोगो के हाथो पुरखो की जमीन देकर पाक सकस मे जायदाद बदलकर चले आये। एक्सचेंज न होता तो यह भी तो न होता, तू मेरे इस बेटे के ब्याह मे भी न आ पाती।'

'जायदाद की अदला-बदली और बेटे-बेटियो की अदला-बदली क्या एक चीज हो गयी ?' मा उस समय भी अपनी राय स्थिर नही कर पा रही थी।

'हाय माँ ! बेटे बेटियाँ भी तो भगवान की दी हुई सपत्ति हैं।' मौसी न साथ ही-साथ व्यवस्था दी।

'क्या पता, दीदी ! इस तरह अदला-बदली मे अ त मे क्या हाल हो, यह तो अभी तक नही देखा।'

पास ही कुमुदिनी खडी थी। उसे खीचकर मौसी बोली, 'ज़रा मेरे देवर की लडकी को आँखो के आगे देख लो। अदला-बदली का केस है, जो साला वही बहनोई, जो ननद वही भावज है। इसमे खराबी की क्या बात है ? हाँ रे कुमू, तेरे बदली के ब्याह को तो पाच बरस हो गये हैं, बता तो तुझे क्या असुविधा हुई है ?'

कुमू के सिर पर सिंदूर की मोटी रेखा झलझला रही थी। मीठी सी मुसकान के साथ वह बोली, 'कही कोई असुविधा तो नही हुई। उल्टे दादा के घर आने पर दादा की बहू ज़रा ज्यादा ही दुलार कर अपने बाप के घर का समाचार लेती है। कहती है, मेरी अच्छी कुमू बाबा के ब्लडप्रेशर पर ज़रा ध्यान रखना। मैं भी पूछ लेती हूँ, माँ की अम्लरोग की पीडा के लिए स्पेशल खाना बनता है या नही ?'

दादा, तुम उसी समय वहाँ आ गये थे। तुमने खुद भी कुमू की बात सुनी थी। एक जोडा भाई बहन अदला-बदली शादी कर लें तो ससार मे

कोई नुकसान नही है, उल्टे वे सुख से हैं।

दादा, तुम उस समय भी गुडी गुडी बॉय थे। किसी तरह की आपत्ति न की। मौसी ने ही खबर लेना-देना शुरू किया। तमाम लोगो न मा के पास चिट्ठी लिखना शुरू किया। अब चिटिठयो की सख्या कुछ बढ गयी। लडके के जोर पर लडकी को पास करने वाली पार्टियो ने बडा जोश दिखाया। तब जोडे जाडे फोटो आना शुरू हो गये। व सब लिफाफे मुझे ही खोलना पडे थे।

अनुपमा ने अब भाई की ओर देखा। भाई अभी भी झुके हुए चिटठी लिख रहे थे।

अनुपमा की इच्छा हो रही थी कि जरा दादा को पुकारे। कहे, दादा, इच्छा करते ही आज की यह हालत टाली जा सकती थी। श्यामपुकुर स वह सबध आया था जो मुझे देखकर फौरन राजी हो गये थे। तुमको लडकी दिखाने के लिए जो खातिर के साथ बुला गये थे। इस बीच सहसा एक ही डाक म किसी ने इन सुलोचना दासगुप्त की बात लिखकर भेज दी। फोटो स्टूडियो की फोटो हम लोगो के पास भेज दी थी। लेकिन वह बदले का केस नही था। यो ही लक टाई करने के लिए चिट्ठी छोड दी थी। आफिस से, या पता नही कहा से उनको पता चला था।

तुम श्यामपुकुर की उस लडकी को और चुपचाप सुलोचना को देख आय। चालाकी स माँ को और मुझे भी सुलोचना दासगुप्त के घर लडकी देखने भेज दिया।

मैंने तुमसे पूछा था, दादा, तुम्हारी क्या राय है? तुमने पहले बुद्धू की तरह कहा, जो अच्छा हो वही ठीक है। जसे तली मछली पलटकर खाना न आता हो। उसके बाद मेरी जिरह के दबाव में मान लिया था कि श्यामपुकुर की वह बदनी वाली लडकी जिसके माथे के पास इतना बडा-सा काला दाग था, वह तुमको पसद न थी। तुम्हारे मन म तो थी सुलोचना दासगुप्त—लडकी देखन जाकर ही हृदय दे आये थे। फोटो स्टूडियो की खीची तीन नबर की स्पेशल फोटो जो तुम्हारी जेब म घूमती रहती थी, उसका पता जरूर उस वक्त भी मुझे न था।

मैंन ही उस वक्त तुम्हारी तरफदारी की थी, दादा। कहा था, 'तुम्हें

कोई चिंता नही, दादा ! जो पसद न हो, उससे शादी करना डबल अन्याय है।'

तुमने बुद्धू की तरह पूछा था, 'यह क्या ?'

'अपने ऊपर अन्याय और जिससे शादी करने को तैयार हो रहे हो उस पर अन्याय। मैंने तुमको समझाया था।

मेरे समझाये बिना भी तुम शायद एक ही राह जाते। लेकिन फिर भी तुमने मेरी बात उठायी थी। मैंने कहा था, 'मैंने तो अभी तक लडके का नही देखा है। इसलिए मनपसद होने की बात ही नही उठती।'

उस समय मन निराशा से इतना नही भरा था। तुमने अचानक कह दिया, 'बावली, मैं इससे अच्छा तेरा ब्याह करा दूगा।'

असल मे सुलोचना दासगुप्त की काली-काली आँखें आध घटा देखकर और बीच बीच म छिपकर फोटो स्टूडियो की स्पेशल फोटो पर नजर रखे उस समय तुम अजीब से हो गये थे।

मैंने सोचा था कि तुम शायद उस समय भी बहन के भविष्य की बात सोचोगे। लेकिन माँ को ठीक रखने की जिम्मेदारी मुझ पर ही थोप दी। मेरी बात के अनुसार श्यामपुकुर के लडके के बारे मे एक झूठी बात भी तुमने लिखकर माँ को भेज दी। वह सबध टूट गया। और सुलोचना दासगुप्त के पिता की मीठी मीठी चिट्ठी जल्दी-जल्दी आती और मेरे बीच म पडने से सारा मामला ही ठीक ठाक हो गया। सुलोचना सेनगुप्त सारी बातें जानती है यह ब्याह के बाद उसके मुह से सुना। उस समय अवश्य ही सुलोचना का बहुत कोमल व्यवहार था। खास मुह से ननद का हाथ पकडकर किस तरह कहती थी, 'तुम्हारा ऋण कभी न भूलूगी, भाई।'

उसी ऋण की बात सोचकर ही तुम्हारी पत्नी ब्याह के छह महीने बाद मुझे यहा ले आयी, यह अदाज लगाती हूँ। शायद डर भी हो कि खफा होकर मैं श्यामपुकुर का यह भेद किसी दिन मा से न कह दू।

किन्तु दादा, मै जो कुछ भी कहूँ, मैंने तुमसे बहुत आशा की थी। तुम चाहते तो उस दिन बावली का कोई इतजाम कर सकते थे। सच कहूँ कि मैंने आशा लगायी थी कि तुम मेरी बात नही सुनोगे। सीधे कहोगे, बावली ज्यादा मत बोल। मैं श्यामपुकुर की उस लडकी से ही ब्याह करूँगा।

शाम को वे लोग आये थे। अनुपमा आज जरा ज्यादा प्रयत्न से तयार हो रही थी, क्योकि लडके के साथ ही आन की सभावना है।

लडका न आया। दल के नेता, उमके भाई तारकेश्वर सेनगुप्त को बीच बीच म श्यामाचरण बाबू कहकर बुला रहे थे, पहले तो अनुपमा समझ न सकी। दादा ने भी शायद लाचार होकर श्यामाचरण नाम पर जवाब दिया था। भले आदमी न कहा था, 'ज़माना है, इन लडकियों मे भी पालिटिक्स है। यह बहुत खराब बात है। आपका क्या ख़याल है, श्यामाचरण बाबू ?

'वह तो है ही,' दादा ने हा मे हा मिलायी थी।

'लडकी का चुनाव अब बहुत मुश्किल काम हो गया है, श्यामाचरण बाबू।' भले आदमी ने कहा था।

इसमे क्या कहना है !' दादा का मानना पडा था।

'देख सुनकर जन्मपत्री मिलाकर आपने शायद लडकी पसद की, ब्याह भी हो गया। तब शायद सुना कि लडकी पॉलिटिक्स करती है। उस समय बताइये तो कैसा लगेगा ?'

'वह भी शायद उग्रपथी पालिटिक्स है,' मालिक को सतुष्ट करने के लिए दादा ने अब जरा अपनी निजी राय दी।

मालकिन ने लडकी की ओर देखा। 'रग तो फोटो मे समझ मे नही आता ?' मालकिन ने मुह बिचकाया।

'सो पढाइ लिखाई मे रग उस तरह थोडा-बहुत काला हो ही जाता है।'

अनुपमा चुप थी। 'मुह आख, गढन बढन भी तो देखना पडता है,' सुलोचना दरवाजे के पास से अतिम प्रयत्न कर देखती है।

'वह सब देखने कौन आता है, बेटी ?' मालकिन ने अब सुलोचना की ओर देखकर जबान खोली। 'घर की बहू को हम तो सिनेमा जाने नही देते। हम रग देखना होगा। गढन बढन कितने दिनो की होती है ? ब्याह के बाद वह सब गृहस्थ के यहाँ कितने दिन रहती हैं ? उस समय तो रग ही सब कुछ रहता है।

मालकिन दूर भविष्य की ओर देखकर नाती-नातिन की बात साच

रही थी, यह अब समय में आया। वह सीधे सीधे बोली, 'बेटी काला रंग होने से बाल-बच्चे सब काले होंगे।'

भामिनी झांक रही थी। उससे दीदी की तकलीफ देखी न गयी। बोली, 'वह क्या कह रही हो, मां? काली हांडी में क्या सफेद भात नहीं बनता? वह घोषाल-पत्नी इतनी काली है, लेकिन उनकी छोटी लडकी कैसी मेमसाहब की तरह गोरी गोरी हुई। सब-कुछ उसकी इच्छा है।'

मालकिन ने तिरछी आंखों से देखा। इस तरह की बातचीत वह जरा भी पसंद नहीं करती थी। चिढकर पूछा, 'यह कौन है? लडकी की बुआ है क्या?'

सुलोचना डरकर भामिनी को हटा ले गयी। दादा ने कहा, 'नहीं, वह कोई नहीं है। वह हमारे यहां काम करती है।'

'एक बात है श्यामाचरण बाबू।' भले आदमी ने फिर मुंह खोला, 'यह मकान तो आप लोगों का है?

दादा घबरा गये। 'जी, यह मकान? देश में हमारा मकान है।'

'देश में तो भिखारी का भी मकान होता है। बात इस मकान की है, श्यामाचरण बाबू।' भलेमानुस ने कहा।

दादा की समझ में न आया कि क्या कहें?

भले आदमी ने सहसा जेब से और भी कई चिट्ठियां व कागज निकाले। 'आपकी भतीजी ने तो इस बार बी० टी० परीक्षा पास की है?'

'जी।' भाई का दिमाग चकरा रहा था और अनुपमा को हँसी आ रही थी, खिलखिलाकर हँस पडने की।

'जी, मेरी बहन है। मेरा नाम तारकेश्वर सेनगुप्त है।'

'ओ हो! कैसी शर्म की बात है, देखिये तो। आप तो रेल के बाबू हैं। किराये के मकान में रहते हैं। याद आ गया। आपकी चिट्ठी मैंने रिजेक्ट कर दी थी। अपना मकान न होने से हमारा काम नहीं चलता। एक दो किराये के कमरे में आप कहां लेटेंगे और दामाद कहां सोयेगा?

'कुछ खयाल न कीजियेगा तारकेश्वर बाबू। मेरे छोटे बेटे का यह काम है। बडी गलती हो गयी। श्यामाचरण राय के नाम के साथ इस लिस्ट में पता लिख दिया है। आपका रिजेक्ट पता इसके बाद ही था।

देखिये न।' यह कहकर भले आदमी लिस्ट की आग करने लगे।

अनुपमा ने देखा कि उसमें बहुत से नाम-पते लिखे थे। कम से-कम तीस होंगे।

'आप भी तो अच्छे हैं, महाशय। तब से श्यामाचरण बाबू कहकर बुला रहा हूँ, आपने बिलकुल नहीं टोका।' भले आदमी अब दादा को ही डाँटने लगे।

दादा उस समय नम्रता से विगलित होकर बोले हमारे दफ्तर के काजीलाल बाबू की तरह तमाम लोग इसी तरह ग़लती करते हैं। पहचान लोगों को अनजाने नाम से बुलाते हैं। तब जवाब देना ही पड़ता है, नहीं तो बहुत खफा होते हैं।'

इसके बाद अनुपमा से न रहा गया। खिलखिलाकर हँस पड़ी। शान्त पात्री का इस तरह पट-से हँसते देखकर पति-पत्नी दोनों ही सन्नाट में आ गये।

हँस क्या रही हो, बेटी ? हँसने की क्या बात है ? ग़लती हर आदमी से होती है। इस हँसने का मतलब तो आदमी का अपमान करना होता है। पत्नी ने खुद ही आग बुझाने की कोशिश की।

'आपकी बहन को क्या हँसने की बीमारी है ?' यह प्रश्न करते हुए वे दोनों 21/2 तकालकार सेकेंड बाईलेन से बाहर आ गये थे।

भाई और भाई की पत्नी दोनों ही उस दिन अनुपमा से चिढ़ गये थे। लड़के के मा-बाप के सामने इस तरह हँसना ! यह तो अपमान करना है।

उसके सिवा ये सारी बातें फैल जाती हैं। बहुत तेजी से फैल जाने पर फिर कोई रास्ता नहीं रह जाता।

दादा की पत्नी ने सुना दिया था। 'उस बार मुझे देखने आये। एक बुढ़िया को मेरे जूड़े की ओर देखकर सदेह हुआ। बोली जूड़ा खोलो। जूड़ा खोले बिना राह नहीं थी। बुढ़िया ने तब खुद चोटी में हाथ लगा खींच खींचकर देखा कि बाल नकली तो नहीं हैं। घर भर के आगे कितना अप मान था। वह हाथ पर हाथ रखे देख रहे थे। कपड़ा को टटोला। फिर भी मैंने गुस्सा नहीं दिखाया। बाबा ने कहा था—तूने बड़ा अच्छा किया,

सुलोचना। इधर-उधर गुस्सा दिखाने से क्या फायदा ?'

भाई ने फिर भी कहा था, 'हँसी आने पर आदमी कितनी देर उसे दबा कर रख सकता है ?'

भाई को इसके लिए भाभी की डाट खाना पड़ी थी। अनुपमा जब चूल्हे पर से चाय की केटली उतारने गयी थी तो उसी वक्त भावज ने कहा था, तुम बहन को बहुत सपोर्ट मत किया करो। फुफकार से लोग दूर हट जाते हैं। मरी मा कहती है कि जान-बूझकर नागिन को कौन घर ले जायेगा ?'

अनुपमा का जवाब देना उचित होता। लेकिन जवाब दिया नही। अब सडक पर निकलकर फोटो स्टूडियो जाने के रास्ते मे जवाब याद आ रहा था। लेकिन पहले ऐसा न होता था। कालिज मे पढने के वक्त, गुलमोहर ऐवेन्यू के क्वाटर मे रहते वक्त, अनुपमा इतनी देर न किया करती थी। मन मे जो आता, वह साथ के-साथ कह डालती।

अब लडकी देखने के य इंटरव्यू मानो स्लो प्वाइजन का काम करते थे। अनुपमा सेनगुप्त को मानो धीरे धीरे जड बनाया जा रहा था। अनुपमा की समझ म आ रहा था कि वह क्रमश जड होती जा रही है। लेकिन कोई चारा न था।

लडकियों को ऐसा ही बनना पडता है। लता और पौधा को लता की तरह ही बनना पडेगा। बांस का पेड बनकर खडे रहने से कोई धर्म न रहेगा।

शायद ईश्वर ने सब-कुछ उत्पन्न किया है। उसे मान लेने के सिवा चारा ही क्या है ?

फोटो स्टूडियो के भीतर जाकर अनुपमा आज आश्चर्य मे पड गयी। यह जो बीच-बीच मे कापी लेने आना होता है, इससे मन थोडा हलका हो जाता है। अनुपमा समझती है कि अकेले 21/2 तल्लावार सेकेंड बाइलेन के अँधेर मकान म बैठन से अब कष्ट नही होता। दुनिया म कितनी ही लडकियाँ हैं। माँग मे सिंदूर लगाने मे कठिन मोह म वे सिर झुकाकर इस फोटो स्टूडियो म बीरेन बाबू के काले कपडे से ढँके कैमरे के आगे पोज बना

कर खडी रहती है। दिनो दिन, महीने महीने यह काम फोटो स्टूडियो म होता रहता है लेकिन किसी को कोई तकलीफ नहीं होनी। इस देश म लडकिया का अपमान करने के लिए ही जसे उस फोटो स्टूडियो का डाक रूम ब्लक होल मानूमट की तरह राजपथ पर शोभित हो रहा है।

बीरेन बाबू काउटर पर न थे। इसके मतलब कि वह अदर तसवीर खीच रहे हैं। काले परदे का एक हिस्सा खिसकाकर लेटेस्ट विषय-वस्तु को देखने के लिए अनुपमा ने अन्दर की आर झांका और थोडा चौक पडी। सुनन्दा चौधरी थी न ?

उनकी सुनन्दा दी। प्राफेसर सुनन्दा चौधरी। बेंगाल कथेलिक कॉलेज की अध्यापिका सुनन्दा चौधरी। फोटो स्टूडियो के बीरेन बाबू ने उसके चेहरे पर बडी पावर की रोशनी डाल दी थी। सुनन्दा चौधरी शेली, कीटस, बायरन आदि पढकर अत म कैसी कोमल होकर काले कैमरे की ओर देख रही हैं। एक काले बक्स मे से कोई जादूगर जम इस तरह स लडकिया को मेस्मेराइज करता हो उन्ह स्तब्ध किये दे रहा हा।

तो सुनन्दा दी अत मे फोटो उतरवाने आयी ! दुनिया मे सारी बगाली लडकियो की जो गति होती है, सुनन्दा दी का भी वही हुआ ?

अब सुनन्दा चौधरी निकल आयी। और निकलते ही अनुपमा को देखा। जैसे पहचानी-सी लग रही थी। फिर भी सुनन्दा चौधरी को पुरानी छात्री याद नही पड रही थी।

'सुनन्दा दी ? आप ? अनुपमा खुद ही आग बढ गयी।

तुम ? अनुपमा सेनगुप्त हो न ? लडकियो के ऐस्से कपीटीशन म फर्स्ट आयी थी न ?' तो सुनन्दा दी कुछ भी नही भूली हैं।

'हमारे टाइम मे ही तो आप बेंगाल कैथेलिक कॉलेज मे गयी। उसके बाद क्या हुआ ? सेकेंड पाट परीक्षा के कुछ पहले ही कॉलेज छोडकर चली गयी।'

सुनन्दा दी ने चश्मा पोछ डाला। अनुपमा को याद आया कि वो एजुकेशन कॉलेज की एकमात्र महिला अध्यापिका के लिए लडकिया के ग्रुप को बडा गव था। यही सुनन्दा दी ही तो उस बार लडकियो का ग्रुप लेकर राजगिर घूम आयी। जिसके लिए इतना गव था, उन्ही सुनन्दा दी न

अचानक नौकरी छोड दी। मान फिर कॉलेज न आयी। लडकियो की बडी इच्छा थी कि वे सुन्दा दी को अलग से फेयरवेल दें। लेकिन इसका अवसर न मिला।

सुन्दा दी के बारे म उस समय बहुत सी अफवाहे फैली थी। कोई कहता था कि सुन्दा दी का अचानक ब्याह ठीक हो गया है। कोई कहता कि किसी लडके प्रोफेसर के साथ कुछ हो गया है। प्रिंसिपल ने कह दिया है कि बात अनाउस होने के पहले एक को कॉलेज छोडना पडेगा।

और किसी ने बताया कि यह सब झूठी बात है। सुन्दा दी को और भी बेटर चास मिल गया है। ऐसी ब्राइट लडकी यो ही मास्टरी कर अपने को बरबाद क्यो कर रही है ?

शोभना, वह और भी चालाक थी। उसने चुपके से जो कुछ अनुपमा को बताया उसस तबीयत घिनघिना जाती थी। पता नही, किसने सुन्दा दी को धोखा दिया। लडका की अपेक्षा लडकियो का धोखा खाना लडकियो के लिए खतरनाक होता है—भगवान ने जान-बूझकर लडकियो को वैसा ही बनाया है।

यह सब सुनकर उस समय अनुपमा को बहुत गुस्सा आया था। रमला ने कहा था, 'शायद सुन्दा दी भगवान पर बहुत खफा हैं। उस दिन ट्यूटोरियल क्लास म मुझसे पूछा—बताओ तो भगवान क्या लिंग है ? मैं तो भाई शरम से गड गयी। सिर खुजाकर बोली—वे तो सबस ऊपर हैं, उनका क्या लिंग है ? सुन्दा दी बोली—पुल्लिंग। इस बारे मे जरा भी सदेह नही है—नही तो उन्होंने लडकिया को ऐसा क्यो बनाया ?'

वही सुन्दा दी इतन दिना बाद फिर दिखायी दी। और वह भी फोटो स्टूडियो म।

सुन्दा दी जब तक वसी ही ठूठ थी। सुन्दा दी गरदन सीधी कर, सिर उठाये, छाती फुलाये चलती थी। सुन्दा दी उस समय ही लडकियो से कहती थी, 'तुम इस तरह कुबडी होकर क्यो चलती हो ? तुमको किस बात का डर है ?'

छोटी-सी ही तो लडकिया थी। वे चुपचाप रहती, कोई जवाब न देती। सुन्दा दी कहती 'कॉलेज म पढाई लिखाई करने आयी हो। यहाँ

लडके लडकिया म कोई अतर नही है। फिर भी तुम यह रग रोगन क्या पातती हो ?

लडकिया फिर सिर झुकाये खडी रहती—उनकी चूडिया की आवाज के सिवा कुछ सुनायी नही पडता था। शोभना बाद म कहती, तुमको क्या, तुम तो कहकर छुट्टी पा गयी। तुम्हारा सा फिगर, तुम्हारा सा शरीर का रग, तुम सा पढन लिखन का रिकाड, तुम सी काली आखें होन पर हम भी मेकअप न करते।'

लेकिन उस वक्त कोई कुछ न बोलती। सुनन्दा दी कहती, 'यहा तुम माडन एजुकेशन लेन आयी हो। और सब लडकियो को तुम राह दिखाओगी, वह न होकर तुम लिखना पढना सीखकर और भी कमजोर होती जा रही हो। बस इडिया म ही यह सब होता है।'

लडकिया सुनन्दा दी पर श्रद्धा भी करती थी, लेकिन थोडा डरती भी थी। शोभना कहती 'अजीब बात है बाबा। मैं तो मा तक से कुछ नही कहती।

'तू शायद घर जाकर सब बातें मा से बता देती है ? एक और लडकी न चुटकी ली।

'हाँ भाई। को एजुकेशन कॉलेज मे भरती होने के वक्त मेरी मा न मुझे छू कर कसम दिलायी थी। सारी बातें न बताऊँ और मा अगर बीमार पड जायें तो ?

सुनन्दा दी फोटो स्टूडियो से निकल आयी। 'ओ ! सुनन्दा दी, कितन दिनो बाद आपसे भेंट हुई ? बडा अच्छा लग रहा है।'

सुनन्दा दी प्राय पहले की ही तरह थी। बस थोडी दुबली हो गयी थी।

अब सुनन्दा दी ने अनुपमा के हाथ के लिफाफे की ओर देखा। उस लिफाफे म क्या हो सकता है यह सुनन्दा दी जानती हैं। फिर भी पूछा, 'किसका फोटो है ?'

अब अनुपमा का चेहरा लाल हो गया। 'सुनन्दा दी, आप तो बगाली लडकियो की दुख की बात जानती है।' अनुपमा की आवाज कुछ काँप रही थी।

'कभी कुछ जानती थी। बहुत दिना बाद लौटकर देख रही हूँ कि हालत

और भी बुरी हो रही है।' गभीरता से सुनन्दा चौधरी बोली।

सुनन्दा चौधरी ने अनुपमा के कपाल की ओर देखा। 'इस देश मे यही एक सुविधा है। कपाल की ओर देखते ही समझ मे आ जाता है। मिर्चो का पाउडर तो दिखायी नही पड रहा है। उसके मतलब कि अभी तक शादी नही हुई है। या किसी दूसरी जात के किसी से शादी कर वह सब हिसाब खत्म कर दिया है?'

सुनन्दा दी की बातें अभी तक उस्तरे की तरह तेज थी। बोली, 'फोटो खिचाई है शायद, अनुपमा?'

अनुपमा उस समय भी हकला रही थी। सुनन्दा दी से बहुत शर्म लग रही थी। फिर सुनन्दा दी खुद भी तो फोटो खिचाने आयी थी। अब तो अनुपमा सेनगुप्त और सुनन्दा चौधरी मे विशेष अतर न था।

'इस देश की धरती भी कोमल है, लडकियाँ भी कोमल हैं। फिर भी और अधिक कोमल बनने के लिए लडकिया ट्रेनिंग लेती हैं। अनुपमा इतना लिखना पढना सीखकर भी तुम लोग ऐसी कोमल क्यो हो?' सुनन्दा दी ने अब झिडकी दी। 'चार-पाच बरस किताबें हाथ मे लेकर कॉलेज जाने से हमारे देश म क्या फायदा होता है अनुपमा?'

सुनन्दा दी बोली, 'अकेली निकलती हो न? या साथ मे कोई छोटा-सा भाई या भतीजा गार्जियन है?'

'नही, सुनन्दा दी? लडकियो के लिए कलकत्ता मे वह जमाना नही है।' अनुपमा न प्रतिवाद किया।

गभीर होकर सुनन्दा दी ने जवाब दिया, 'ठीक कहती हो! लेकिन कितनी ही लडकिया को इस कलकत्ता मे अकेले चलने-फिरन म मुसीबत लगती है।'

क्या कह रही हैं सुनन्दा दी? अनुपमा न फिर प्रतिवाद किया।

सुनन्दा दी बोली, 'दुनिया के किस देश मे आज लेडीज ट्राम है?'

'यह तो भीड के कारण है, कॉलेज ऑफिस जाने का और कोई साधन न होने से,' अनुपमा ने जवाब दिया।

'जवाब इतना सीधा नही है अनुपमा। इसे बहुत ज्यादा शराफत की ओट मे लडकियो को पीछे ढकेले रखने का एक षड्यत्र भी है।'

सुनन्दा दी ने घड़ी की ओर देखा। बोली, 'तुम्हारे साथ म जब कोई मद गाड नही हैं, तो यहा खडे-खडे क्या करोगी ? मरे साथ चलो। जरा देर हो जाने से आशा है घर के लोग पुलिस को खबर कर देंगे।'

अब अनुपमा के आश्चय म पडने की बारी थी। सुनन्दा दी एक स्कूटर की ओर बढ गयी।

लडकियो को स्कूटर चलाते अनुपमा ने नही देखा था। वह सोच रही थी कि क्या करे ? सुनन्दा दी बोली, 'तुमको कोई फिक्र नही। बबई दिल्ली मे हजारो लडकियाँ स्कूटर चलाती हैं। अगर डर न लगे तो बैठ जाओ।'

लेकिन सोचने के पहले ही अनुपमा स्कूटर के पीछे बैठ गयी। सुनन्दा दी की ठोकर से थोडा चिढकर स्कूटर ने गरज कर चलना शुरू किया।

अनुपमा को अच्छा लग रहा था। जैसे एक नयी तरह का एडवेंचर हो।

चलते चलते धमतला के पास एक दूकान के आगे सुनन्दा दी ने स्कूटर रोका।

फिर अनुपमा को सीधे अदर ले गयी और चाय का ऑडर दिया।

सुनन्दा दी, इतने दिनो तक आप कहाँ थी ? अनुपमा न पूछा।

'बहुत जगह,' सुनन्दा दी ने जवाब दिया। 'पहले कुछ दिनो विदेश म थी। वापस आकर मास्टरी मे घुसने की तबीयत थी। लेकिन सोचा, लडकियो को मास्टरी करने से क्या फायदा ? उनका तो इस देश मे कुछ होगा नही।'

अनुपमा न ताज्जुब से सुनन्दा दी की ओर देखा। सुनन्दा दी बोली, फिजिक्स, कमिस्ट्री, हिस्ट्री, इकोनॉमिक्स, बगाली लडकियो को कुछ भी सिखाओ, वह अत मे रसोईघर मे कालिख लगाये वाशिंग सोप, बेबी फूड, टैल्कम पाउडर मे ही जिंदगी बिता देंगी। अपनी किसी पुरानी छात्रा को देखकर नही लगता कि मैंने उन्हे ऐंथ्रपलॉजी पढायी थी।'

सुनन्दा दी ने चाय के कप म चुस्की ली। बोली, 'इसी से अत मे इस साबुन-सोडा-बेबीफूड की लाइन मे लग गयी।'

सुनन्दा दी कैसी सहजता से बातें करती जा रही थी। उन बातो म व्यग्य था, लेकिन वैसी ज्वाला न होकर कुछ वदना ही थी।

सुनन्दा दी बोली, यह सब काम बम्बई मे ही अच्छे होते है। हजार हो, वह जगह विलायत के नजदीक है।' सुनन्दा दी वही किसी मार्केटिंग सर्विस कपनी मे काम करती थी।

बोली, 'विभिन्न कपनिया हमारे प्रतिष्ठान के पास आती हैं। हम उन्हें लडकियो के भेद बताते है। पति के टूथ ब्रश का क्या रग होने से, टूथ पेस्ट का साइज कितना होने से औरतें खुश होगी, सफेद प्रेशर कुकर से रगीन प्रेशर कुकर औरतो को कितना अच्छा लगगा—यही सब सूचनाएँ जमा करती हम घूमती है।

'उसी काम से कुछ दिनो के लिए कलकत्ता आयी हूँ। मेरी तो तबीयत न थी। उनसे कहा, मैं बगाली लडकिया की तबीयत नही समझती। उन्हे विश्वास न हुआ। जबरदस्ती भेज दिया।'

'क्या हुआ ? चाय ठडी क्यो हो रही है ?' सुनन्दा दी ने डाटा।

उसके बाद पूछा, 'किसकी फोटो लेने आयी थी ? अपनी ? बाहर-वाहर जाने की तबीयत है क्या ? मैं तो पासपोट फिर रिन्यू कराना चाहती हू। इसीलिए पासपोट की फोटो खिचाने गयी थी।'

अनुपमा का चेहरा फीका पडा जा रहा था। पासपोट फोटो खिचाने मे परेशानी बहुत कम होती है। इस स्पेशल मरेज फोटो से पसे भी कम लगते हैं। मरेज फोटो में बहुत परेशानी हैं, हर स्पॉट मिटाना पडता है, मोटे काच के बीच से डबल करके देख लेना पडता है, जिससे कि लडके की तरफ वाला का खराबी न दिखायी पडे।

'फोटो खीचना तो बहुत पहले ही हो गया था, सुनन्दा दी।' अनुपमा कुछ भी छिपायेगी नही।

'अतिरिक्त कापियाँ लेने आयी थी। बहुत बार ले गयी हूँ। इस बार अठारह का ऑडर दिया है।

'अठारह !' सुनन्दा दी ने इस बार चाय का बडा घूट ले लिया, 'इतने फोटो लेकर क्या करेगी ?

'दादा बहुत सी अनजान जगहो को भेजेंगे।'

सुनन्दा दी सिर पर हाथ रखकर बठ गयी। उसके बाद आजकल क्या होता है ?' सुनन्दा दी न पूछा।

'ज्यादातर तो चिट्ठियो का जवाब ही नही आयेगा। दो एक लोग भलमनसी कर फोटो वापस भेज देंगे—वह भी हो सकता है कि गलत फोटो हो। अनुपमा सेनगुप्त की फोटो के बदले लौट आयेगी तनिमा दास की तसवीर। दो एक लोग आखिर म लडका देखने आयेंगे।'

'उसके बाद ?' सुनन्दा चौधरी ने पूछा।

'दादा के कुछ और रुपये चाय और जलपान मे खच हो जायेंगे। दादा की पत्नी भी कई दोपहरो मुझे लेकर परेशान रहगी। उसके बाद वे लोग आकर पूछेंगे तुम्हारा नाम क्या है ? किस स्कूल म पढा है ? किस ईयर मे पाट टू दिया ? गहस्थी के काम आते हैं न ? खाना वाना पकाने म तो आपत्ति नही है ? मेरी भावज साथ ही-साथ जवाब देंगी गहस्थ घर म जन्मी है, खाना वाना बनाने मे आपत्ति होने से कसे चलेगा ?'

उसके बाद ?' सुनन्दा चौधरी ताजी खबरो को जानने के लिए बहुत उत्सुक थी।

'पूछेंग गाना आता है ? गिटार ? मैं बताऊँगी, आता है, लेकिन वसा कुछ नही ? उसके बाद वे चाय के कप मे आखिरी चुस्की लगाकर उठ जायेंगे ? कहगे, खबर भेज देंगे। लेकिन खबर कभी न भेजेंगे।'

'तब ?' सुनन्दा ने पूछा।

तब दादा और भावज और चिट्ठियाँ लिखेंगे।'

सुनन्दा दी गभीर होकर बोली, 'ज्यादा लिखाई पढाई करने के कारण ही क्या यह मुश्किल है ? बी०ए० पास करना ही सामान्य बगाली लडकियो पर अधिक बोझ है ?'

अनुपमा बोली, 'मट्रिक लडके म भी तो आपत्ति नही है। कोई पक्की नौकरी होनी चाहिए। भावज का तो कहना है—नौकरी होने के मतलब ही होते हैं एम० ए० पास। साक्षात्कार मे लडके की मा से कहती है मौसी, लडकी के इस बी० ए० पास को लेकर बिलकुल परशान न हो। वह तो किसी तरह हो गया है। घरेलू लडकी बिलकुल हाथ सिकोडकर बठेगी ?

'उसके मतलब बी० ए० पास करना भी एक अपराध है।' सुनन्दा दी ने अब एक सिगरेट सुलगायी।

सुनन्दा दी ने तिरछी नजर से देखा कि अनुपमा उनकी ओर देख रही

है। 'क्या हुआ ? सिगरट पीना अभी तक बगाली लडकिया के लिए शायद अपराध है ?

अनुपमा चुप रही। सुनन्दा दी बोली 'लडकिया क्या पहनें, किस तरह बाल बाधें, किस तरह चलें, क्या खायें—यह सब शायद अब भी मद ही तय करते हैं।'

सुनन्दा दी ने खूब सा धुआ छाडा, इस सिगरेट को लेकर ही कालेज मे शोर हुआ था। कामन रूम मे लडके मास्टरा के सामने सिगरेट सुलगायी थी, इसलिए कसा शोर मचा। नग होकर सडक पर चलने पर भी विदेशो मे इतना शोर न हाता। वाइस प्रिंसिपल ने एतराज किया। को एड कालेज है—लडकियाँ देखेंगी। हज़ारो मर्दों को हर रोज़ सिगरेट पीते हुए लडकिया दखती हैं, उससे कुछ भी नहीं हाना। सारा कुसूर इस औरत प्रोफेसर के कॉमन रूम मे बठकर सिगरट पीने से है।'

सुनन्दा दी ने अपने का सँभाल लिया। बाली 'ये बातें छोडो। अपना हाल कहा। जब तुम कहती हो कि बी० ए० पास हो तब तो कोई प्राब्लम ही नहीं है। किसी पति के लिए लडकिया जब उस डिग्री का गगाजल मे डुबाने के लिए तैयार हैं, तो रुकावट कहा है ?' सुनन्दा चौधरी ने धुआँ छोडा। 'जात ? बाम्हन, कायथ, वैद्य, राढी, बारेन्द्र, वैदिक—फला कपनी की ब्रा की तरह हजार साइज होती है, रग और कप साइज की पसद गडबड पैदा करती है ?'

अनुपमा के मामले मे वह भी सच न था। सुलाचना न एक दिन बात बात म कहा था, 'इस ज़माने मे वह सब लेकर कोई उस तरह स दिमाग परेशान नही करता। क्या कहते हो ? यह कहकर उन विनापनो के जबाब दन लगा। वही जहा लिखा रहता कि असवण म आपत्ति नहीं है। लेकिन उससे कोई नतीजा नही निकला। बहुत होता तो फोटो भेजन का अनुरोध आता।

इसके बाद ? सुनन्दा दी व्यग कर रही थी या सचमुच परेशान थी यह समझ म नहीं आ रहा था।

अनुपमा बोली 'दूसरी बार अखबार म विनापन दिया गया। बहुत लडको के गार्जियन हैं जो विनापन नहीं देते, लेकिन छुट्टी के दिन विनापन

पढ-पढकर जवाब देते हैं।'

सुनन्दा दी बोली 'लडको के लिए विनापन देने पर किस तरह उत्तर आते है, तुम्हारा कुछ अदाज है, अनुपमा? हमारे आफिस की मिसेज अनीता रे जानती हैं। 'दैनिक प्रभाती' और 'दनिक निर्भीक' मे से किस पत्र की शक्ति अधिक है यह परीक्षा कर देखने के लिए एक काल्पनिक बैंक काय-कर्ता सुदर ग्रेजुएट पात्र के लिए योग्य पात्री का विनापन दिया। दोनो अखबारो से ही रोज दो थले चिट्ठिया आती। दो सप्ताह हो गये और अभी तक चिट्ठिया का अत नही।'

अनुपमा ने अब मुह खोला। 'अखबारो मे सिफ वेकार की हजारो अप्लीकेशन पाने की खबर छपती हैं, यह खबर भी तो नही निकलती।'

'अखबार को अविवाहित लडकिया तो नही चलाती है, अनुपमा।' सुनन्दा दी ने मजाक किया।

सुनन्दा दी की वात सुनकर अनुपमा वहुत ही हतोत्साहित हुई।

सुनन्दा दी बोली, 'देखो दुनिया मे और कही औरतो का इतन असम्मान नही होता है कहने से यहाँ की औरतें भी मेरे ऊपर बिगडती हैं विदेशो मे औरतो का इतना सम्मान है, फिर भी वे सतुष्ट नही वे और चाहती हैं। घर के काम के लिए पैसे चाहती हैं फेयर सेक्स प रहे अत्याचार और अन्याय से निपटने के लिए वे उठने लगी हैं। औरतें किसी दिन स्ट्राइक भी कर सकती हैं।'

'वह क्या होता है सुनन्दा दी?' अनुपमा ने पूछा।

'बहुत सीधी बात है। लडकियाँ शादी के लिए ही तैयार न होगी। ब्याह होने पर भी वे सेक्स के लिए उत्सुकता प्रदर्शित नही करेंगी। बाप, पति या लडका किसी की गुलामी औरतें न करेंगी।'

अनुपमा को इस सबका विश्वास ही न हो रहा था।

सुनन्दा दी बोली, 'आई विश यू सक्सेस, अनुपमा। अब विनापन देन से तुमको वर मिल जाये। इस बीच क्या कर रही हो, बताओ तो?'

'यह सब क्या पूछ रही हैं, सुनन्दा दी?' इस बीच लडकिया क्या करती रहती हैं? खाती हैं सोती हैं अखबार पढती हैं, भाई के कपडो पर इस्त्री कर देनी हैं, भावज की सहायता करती हैं चीजो के दाम बढ रहे हैं इसलिए

परेशान रहती है, बीच-बीच मे सिनेमा चली जाती हैं, मंदिर के सामने जाकर आखें बद कर बहुत देर तक प्रार्थना करती हैं, कहती हैं—भगवान, ऐसे नही चलेगा, मेरा दुख दूर कर दो—मेरी ओर मुह उठाकर देखो भगवान—यह कहकर और भी कई बार सफेद पत्थर क फश पर सिर झुकाती हैं।

सुनन्दा दी ने पूछा, 'हजारो लाखो बगाली लडकियो से अगर कह दिया जाये कि पिता के प्रचार, रुपये और अपने रूप न रहने से तुम्हारा ब्याह न होगा, तो क्या होगा ?'

अनुपमा चुप रही।

'और शादी होने पर भी वैसा कुछ फायदा न होगा। माथे पर सिंदूर लगाने के बाद दुख कम न होगा, क्योकि इस देश मे लडकियो का सम्मान ही नही है।'

सुनन्दा दी यह सब क्या कह रही हैं ?

सिगरेट पीते पीते सुनन्दा दी बोली, 'मेरी एक अमेरिकन दोस्त है। उनका कहना है कि शादी बहुत जरूरत की चीज है। हर मद को शादी करना उचित है, लेकिन किसी औरत को अवश्य ही इस लाइन म जाना उचित नही है।'

'उस देश मे औरतें जाग गयी हैं' सुनन्दा दी ने अनुपमा को ताज्जुब मे डालकर कुछ बातें बनायी। 'विवाह-जैसी चीज का भविष्य बहुत उज्ज्वल नही है। बहुतेरी शादी का शोर शराबा न कर अपने पसद के आदमी के साथ रह रही हैं—बधन नही, पर प्रेम रहता है।'

अनुपमा का चेहरा लाल हो गया। ये बातें अनुपमा की कोई सहेली सपने म भी नही सोच सकती, इस बात को वह जोरो से कह सकती है।

सुनन्दा दी हँसी। 'सोच क्या रही हो ? ये सब बातें यहा कहना वसा ही है, जसे क्लास फाइव की छात्राओ को अँग्रेजी आनस की कविता पढाना। यह देश अभी इन बातो को सुनने के लिए तयार नही है।'

अनुपमा हैरानी म सुनन्दा दी चेहरे की ओर ताक रही है। वह बोली, वे जिस तरह से उठ खडी हुई हैं। उससे पुरुषो का अत्याचार स्त्रियाँ बहुत दिन तक सहन नही करेंगी—यह जोर देकर कहा जा सकता है।

उनके कपडे क्रमश आदमियो के कपडो की तरह हो गये हैं। रूज, लिपस्टिक, कार्सेट विदा हो गये हैं। अब कचुकी कपनिया के विजनेस के समाप्त होने की बारी है। इस बीच वे सिर ठोक रहे है।'

'उस देश की स्त्रिया के पास कितना रुपया है, सुनदा दी। वे जो चाहे कर सकती हैं ?' अनुपमा धीमे से बोली।

'रुपये हैं। लेकिन अमरीका मे ज्यादातर रुपया पैसा औरता के हाथा म है ऐसी एक अफवाह फैली थी। यह झूठ है इसको एक अमेरिकन महिला न हिसाब लगाकर दिखा दिया था।

लडका के लिए और भी मुसीबत आ रही है। बेबी का बिस्तर उलटने की टेनिंग अब लडका को लेना होगी। लडकिया न सिद्ध कर दिया है कि गृहवधू का काम मान मद एक दजन स्पेशलिस्ट के काम बिना पैसे करा लेत है।

एक दजन ?' ये बातें अनुपमा के दिमाग मे कभी न आयी थी।

'दशभुजा नही, उस देश में औरतें द्वादशभुजा हैं। यहा तो हर औरत को हजार हाथा वाली काली बनना पडेगा। विश्वास न हो तो मिला लो।' यह कहकर सुनदा दी हिसाब बताने लगी 'बिना वेतन रसोईदारिन, बतन साफ करने वाली कपडे इस्तरी करने वाली धोबिन, रफू करने वाली दर्जिन बाजार करने वाली, डायटीशियन नस लडके-लडकियो की आया, कमोड साफ करने वाली जमादारिन, टूटी फूटी चीजा को मरम्मत करने वाली मिस्त्री, बगीचे की मालिन और गाडी चलान वाली ड्राइवर। इसमे हर काम को अलग-अलग करने पर हजारो डालर खच करके भी कोई ठिकाना नही मिलेगा।'

औरतें इतना काम करती हैं।' अनुपमा न खुद कभी हिसाब लगाकर नही देखा था।

'और भी है।' सुनदा दी कहती रही, बिना पैसे की मास्टरनी, हिसाब रखने वाली बाबू, पति की सेक्रेटरी, चीफ होस्टेस, पति की सामाजिक साथी, और बिस्तर पर आराम करन आन पर भी छुटकारा नही।'

अनुपमा का चेहरा सफेद पडता जा रहा है यह देखकर सुनदा दी चुप हो गयी। बोली 'यह सारी बातें छोडो। तुम अपनी बात कहो

अनुपमा ! तुमको सबसे अधिक कष्ट क्या है, बताओ तो ?'

अनुपमा को बडी जरूरत थी शादी हो जाने की। अपने लिए बहुत कुछ सोचकर बोल नही रही थी। सबसे अधिक दुख और अपमान को याद कर अनुपमा का शरीर कैसा हो उठता, सारा शरीर घुलने लगता, शरीर-भर का रक्त चेहरे पर जमा हो जाता।

21/2 तर्कालकार सेकेंड बाईलेन की तसवीर आखो के आगे आ जाती। वहा एक ही कमरा था। उसी कमरे म तीन लोगो को रात का शरण लेना पडता—दादा को, उनकी छ महीने शादी की हुई पत्नी को और अनुपमा को।

तर्कालकार सेकेंड बाईलेन की पहली रात ही अनुपमा को बडी असुविधा हुई थी। दामजिले पर जाने वाले बरामदे के सिरे पर लेटने की बात भी अनुपमा न सोची थी। उस पर भावज न एक खिडकी लगायी थी। अनुपमा ने कहा था, 'मुझमे बहुत साहस है सुलोचना। 'अपना साहस तुम अपने पास ही रखो—वर आये तो उसे दिखाना। यहा नही।' भावज ने जवाब दिया था।

कई दिन बाद अनुपमा ने फिर बात उठायी। सुलोचना कुछ घबरा गयी। मानो आवाज मे पहले सा जार न रहा हो। लेकिन फिर भी वह राजी न हुई थी। कहा था, तुम्हारे कमरे के बाहर बरामदे मे सोने मे खैर नही है। भामिनी के म्र सारे मुहल्ले को कल पता चल जायेगा।'

उस पर भी अनुपमा ने जार दिया था। यह ऐसी बात थी कि भाई से बात नही की जा सकती थी। भावज से बताने म भी बहुत अटपटा लगता था। रात आते ही अनुपमा की बेचनी बढ जाती थी। लगना, कलकत्ता शहर मे हर तरफ इतने मकान है, फिर उस इस तरह एक कमरे मे क्यो लटना पडता है, जहाँ कि और भी दो लोगा ने ठिकाना किया है ?

'तुम लोगा का यह कष्ट मुझे अच्छा नही लगता सुलोचना।' अनुपमा बाली।

एक कष्ट है बावली ! दुनिया म तमाम लाग कितने कष्ट पात ह।' भावज ने फिर भी हँसकर जवाब दिया था और कहा था, 'फिर कष्ट ही कितने दिना का है ? झट-स शिवतला जाकर बाबा के ऊपर थोडा जल चढा

आओ ताकि फट मे वर मिल जाये।' शायद भावज उस वक्त भी पति की बदली की शादी की बात मे बावली की भूमिका की बात भूल नही सकी थी।

सुनन्दा दी ने पूछा, इतना क्या सोच रही हो ?'

'हम लोगो के सोचने के क्या अर्थ होते हैं सुनन्दा दी ? हमारी बात किसके कानो तक पहुँचती है ?'

सुनन्दा दी अजीब था। फौरन पूछा, 'समझ लो, यह सारी बिनब्याही लडकियाँ बिनब्याही ही रह गयी। हजारो लाखो एप्लीकेशनें लिखकर भी, सूचना केंद्र पर भाग-दौड करने पर भी और शिव के ऊपर टनो बेलपत्र चढाकर भी कोई काम न निकला। तब क्या होगा ?'

'सुनन्दा दी मुझे कुछ न चाहिए चाहने लायक हमारे पास है ही क्या ?' कातर भाव से अनुपमा ने जवाब दिया। 'सिर्फ ।' यही तक आकर अनुपमा रुक गयी।

'रुक क्यो गयी ?' सुनन्दा दी ने मीठी-सी झिडकी दी।

अलग रहने के लिए एक कमरा मिलने पर बुरा न होता। सुना है विदेशो म तमाम लडकियाँ अपने कमरो या होस्टलो मे रहती हैं।'

उस हालत में तो फिर नौकरी चाहिए, अनुपमा। नौकरी के हर दरवाजे के आगे भी तो लाखो आदमी जमा हैं—वहाँ लडकियो की बात कौन सुनेगा ?'

अनुपमा और भी हतोत्साह हो गयी। मैं यह सब-कुछ नही जानती सुनन्दा दी। घर के बाहर निकलने की ट्रेनिंग तो मिली नही। सुनन्दा दी, आपको तो बहुत कुछ मालूम है। मेरा कुछ ठिकाना कर दीजिये। मैं कुछ नही चाहती। किसी तरह एक निरापद बिस्तर मे रात बिताने म जितने रुपये लगें, उससे ही मैं सतुष्ट रहूँगी, सुनन्दा दी।' अब अनुपमा हाँफने लगी।

सिगरेट पियोगी अनुपमा ? सिगरेट पीने से तो मर्दों म कान्फीडेंस आता है।' सुनन्दा दी ने पूछा।

इतने लोगो के सामने यह सब पीने की हिम्मत अभी तक नही हो रही

है, सुनन्दा दी। आप मुझे माफ करें।'

सुनन्दा दी खुद एक सिगरेट सुलगाते हुए बोली, 'तुम्हारा भला न कर सकूं तो बुरा न करूंगी। सिगरेट पीने से तुम्हारा काम न होगा। गलती शुरू से ही लग रही है। सुनन्दा दी ने एक लंबा कश लिया।

'रुपया की आज़ादी के सिवा और कोई आज़ादी हमारे लिए इस दुनिया में संभव नहीं है। जिन लोगों का कहना है कि बंदूक की नली ही शक्ति का स्रोत है, वे भी धीरे-धीरे समझ रहे हैं कि शक्ति का स्रोत मनी बैग है।'

सिगरेट के धुएँ से सुनन्दा दी खुद ही धीरे धीरे अनुपमा के निकट अस्पष्ट हो गयी थी।

अब धुआँ बहुत कुछ हट गया था। सुनन्दा दी बोली, 'इसके मतलब कि तुम कोई कामकाज तलाश कर रही हो? कामकाज न मिलने से भाई-भावज के कोटर से निकलने का तुम्हारे पास कोई रास्ता नहीं है।'

अनुपमा करुण भाव से बोली, 'सुनन्दा दी, अगर कोई सहायता कर सकती हैं तो मैं चिरकाल आपकी ऋणी रहूँगी।'

सुनन्दा दी सोच साचकर बोली 'शिक्षित बेकार, अशिक्षित बेकार, भूमिहीन बेकार, हरिजन बेकार—इनकी सहायता करने की बात कभी कभी अखबारों में आती है। लेकिन यह सब आदमियों के लिए—औरतों के लिए कुछ करने की बात कोई नहीं सोचता। लेकिन कागज़ पत्तर में ऐसी एक हालत बना कर रखी है कि कोई तुम्हारा दावा स्वीकार न करेगा। कहेगा, सभी जगह औरतों का समान अधिकार है। और तो और, मिलिटरी ड्रेस पहन पैराशूट लेकर आसमान से कूदने की औरत-अफसरों की फोटो तुमको दिखा देंगे। सब लोग सोचेंगे, इतना सुख तो औरतों को कभी न था। इंडिया की औरतों को कोई दुख नहीं है।

अनुपमा के दिमाग में इतनी बातें नहीं घुसतीं। वह केवल कुछ रोजगार की स्वतन्त्रता पाकर ही धन्य हो जायेगी।

सुनन्दा दी बोली, 'लडकियों को इतनी तकलीफ है उनकी इतनी उपेक्षा है इतना अपमान है, ऐसा निलज्ज शोषण है, फिर भी किसी को बुरा नहीं कहा जा सकता। सभी तुमको मर्दानी औरत या, 'लिब वोमन'

कहकर ठप्पा लगा देंगे। इस देश के सारे मर्द धर्मपुत्तर युधिष्ठिर, और सबसे अधिक जो अफसोस की बात है कि तमाम औरतें भी वही विश्वास करती हैं।

अनुपमा समझ रही थी कि सुनन्दा दी बहुत बिगड़ गयी हैं। गुस्से में कहीं असली बात ही न भूल जायें।

'कोई भी काम ठीक रहेगा, सुनन्दा दी,' अनुपमा ने अब याद दिलाया।

सुनन्दा दी ने कुछ सोचा। 'पक्की नौकरी मेरे हाथ में कहाँ है? पर बीच बीच में यही घर घर घूमकर पत्नियों से बातें करने के लिए कि किस साबुन से वे पति की बनियान धोना पसंद करती हैं कौन-सा टल्कम पाउडर बदन पर छिड़ककर पति देवता को बाँध रखने की कोशिश करती हैं—यह सब जानने के लिए दो एक लड़कियों की जरूरत हो सकती है। लेकिन पक्का काम नहीं है। कुछ दिनों की नौकरी—बेटर दन नथिंग।'

अनुपमा उसके लिए भी उत्सुक थी। इस तरह चुपचाप बैठे-बैठे तो वह पागल हो जायगी। आजकल रात में उसे नींद ही नहीं आना चाहती थी।

सुनन्दा चौधरी बोली, 'देखूँ, अपना पता दे दो। इस बीच अगर कोई आदमी तुम्हें पसंद कर ले तो फिर बात ही नहीं है।' यह कहकर उन्होंने छोटी नोटबुक में अनुपमा का नाम पता लिख लिया। अपने आफिस का कार्ड भी अनुपमा को दिया।

अब घड़ी की ओर देखकर सुनन्दा चौधरी घबरा उठीं। 'मेरी एक मीटिंग थी। तुम अकेली वापस जा सकती हो?' सुनन्दा चौधरी स्कूटर के पुर्जे को परों तले दबाकर चलती गाड़ी पर चढ़ गयीं।

'अरे अनुपमा? तू यहाँ?' बहुत दिनों बाद एक पहचानी आवाज़ सुनकर अनुपमा चौंक पड़ी।

अनुपमा किसी पहचान के व्यक्ति को खोज निकालने की भगवान से प्रार्थना कर रही थी क्योंकि अनुपमा साथ में एक पैसा भी न लायी थी। सुनन्दा दी के साथ स्कूटर पर चढ़कर सीधे इस न्यू मार्केट की बस्ती चली

आयी थी।

कौन कहता है कि भगवान प्राथना नही सुनते ? अनुपमा को खुद पुकारना न पडा। सामने बचपन की सहेली शोभना खडी थी।

कस लाल, उजले, गोल मटोल केले के वृक्ष की तरह शाभना लग रही थी। यही शोभना किसी दिन गुलमोहर एवेन्यू के पास बांधाघाट म रहती थी और इसी ने अनुपमा को कलकत्ता के कालेज मे भर्ती होने की सलाह दी थी।

शोभना की मौसी भी साथ म खडी थी। शोभना बोली, 'मौसी, हमारी प्राणा सी सहेली अनुपमा। बहुत दिन हुए खो गयी थी। आज फिर भेंट हा गयी।

मौसी का एक ही काम रह गया था, अपरिचित लडकियो की माग की आर दखना। मौसी बोली, 'तुम्हारा भी अभी ब्याह नही हुआ है ? क्या बात है तुम्हारी—तुम लोगा ने क्या दल बाधकर कुआरी रहन की कसम खायी है ?

अनुपमा क्या जवाब देती ? इस देश की लडकिया शादी के मामले मे कोई कसम नही खाता, यह जानकर मौसी निश्चय ही मजाक कर रही है।

शाभना बोली, 'तेरी तो माग खाली रहने की बात नही है। कॉलिज मे हाथ दखकर बहुत दिनो पहले ही तो कहा था कि तरा वर बहुत गोरा हागा—तेरी दूर देश म शादी हागी।'

'उसके मतलब अब समझ म आ रहे है तून हाथ देखना बिलकुल नही सीखा। सिफ झूठी बातें कहती थी।' अनुपमा न जवाब दिया।

शोभना भी कम न थी। बोली 'उस बार लडकियो क कॉमन रूम म बठकर तूने जा कहा था, वह भी मुझे याद है। कहा था, मेरे छ लडके-लडकियाँ होग। मेरे हाथ म दो लडके और चार लडकिया हैं।'

'अरे मा, कब क्या कहा था, वह भी तुझे याद है ?'

शाभना की मौसी भी बडी मजाकिया थी। बोली, 'तुम्हारा जमाना अभी बीता नही है—हाथ म लिखे रहने पर सभी हो सकता है।

'तुम भी अजीब हो, मौसी !' शोभना ने डाटा। 'हाथो की रेखा उन्ह

देखना ही नही आता। मन मे जो आया, वही सहेली के गले मढ दिया और मजाक उडाया, अब पकडाई म आ रही है। सोचा था, ब्याह कर दूर चली जायेगी, कभी मुलाकात न होगी।

अब अनुपमा को मालूम हुआ कि शोभना की मा नही रही। वह हँस मुख खुश इसान अब न रही। अनुपमा को बहुत प्यार करती थी।

अनुपमा के पिता के बारे म भी शोभना को पता चला। उसे याद आया कि अनुपमा के पिता उन दानो को बीच-बीच म सिनमा ले जाते थे।

शोभना तो असुदरी नही थी। विज्ञापन की भाषा मे उसे 'प्रकृत सुदरी' ही कहा जा सकता था। पात्र के अभिभावक लाग और बधु बाधव पात्री से जो आशा करते, लगभग सभी शोभना मे था। शोभना दुबली भी नही हो गयी थी। कलकत्ता के इस दूषित पानी और विषाक्त हवा को खीच-खाँचकर भी अधिक समृद्धशालिनी थी।

अनुपमा के सवाल का जवाब मौसी ने ही दिया। बोली, 'ऐसी लडकी का ब्याह न हो, यह कभी सभव है? शुरू मे दीदी ने खुद देर कर दी। किसी साधु सयासी ने जाने क्या-क्या छिपाकर भविष्यवाणी की थी। दीदी ने किसी से कुछ नही बताया। सिफ मेरे दबाव मे पडकर कहा था कि शोभना की शादी मैं तीन बरस बाद करूँगी। थोडी बडी हो जाये। लेकिन मुझे भी कसम दिलायी थी कि यह बात किसी से कहूँगी नही। जसा कुछ है, समय बीत जाने दो। और जमाई बाबू को तो जानती हो, बिलकुल मिट्टी के माधो हैं। किसी भी बात मे ज़ोर देकर कुछ नही कहते। खास कर दीदी के मुह पर बात करने का सवाल ही नही उठता था।'

शोभना अब मौसी को रोकने चली। ओह मौसी। सडक पर खडे खडे तुम क्या मेरी तेईस बरस की लाइफ-हिस्ट्री कहे जाओगी?'

'शोभना!' मौसी ने डाटा, 'बात बात मे इन अभागे तेईस बरसा का रेफरेंस देती है। मैं सब जगह इक्कीस बताती हूँ। लोगो के कानो मे पडने पर मुश्किल होगी।

शोभना सचमुच मज़ाकिया और शरारती थी। बोली 'स्कूल के रजिस्टर मे नाम लिखाते वक्त माँ ने दो बरस कम कर दिये थे उसके बाद

अब तुमने काट दिये दो बरस—यह करते-करते शोभना की उम्र रह जायेगी बारह।'

शोभना की मौसी कुछ शरमा गयी। बोली, 'इसमे गलत कुछ नही है। दुनिया भर मे लोग यही करते हैं। बस देखना होगा कि ब्याह के वक्त वर की असली उम्र लडकी की असली उम्र से कम न हो।

अनुपमा ने शोभना की मौसी को छुटपन म देखा था। उन्होने अब शोभना की बाकी बातें भी सुना दी। 'वह जो बताया। उसके बाद दीदी एक दिन चल बसी। काल-अशौच इत्यादि करने के बाद एक बरस और बीत गया। उधर दीदी के चले जाने से बहनोई बाबू भी अजीब से हो गय। कोई तलाश नही, खोज खबर नही। दिन-रात चुपचाप बैठे रहते। लडका भी बाहर था। ऐसी हालत मे कुछ न होता। इतने दिनो तक मैं भी मेरठ म थी। अभी कुछ महीने हुए बदली हुई है।'

अब मौसी के चेहरे पर दबी हुई मुसकराहट की झलक दिखायी दी। बोली, फिकर मत करो। मैंने आप ही बात पक्की कर ली है। जल्दी ही अच्छी खबर मिलेगी।'

अनुपमा को मुह खोलकर बस का किराया न मांगना पडा। शोभना बोली, 'ओफ, कितने दिनो से तुझसे भेंट नही हुई। चल तुझे घर पहुँचा दें, जरा तेरी भावज को देख आयें।'

शोभना के लिए सडक पर ही गाडी खडी थी, यह अनुपमा ने लक्ष्य नही किया था।

गाडी पर बैठकर शोभना बोली, 'बाबा को ऑफिस पहुँचाकर गाडी मौसी और मेरे कंट्रोल में आ जाती है। बाबा आजकल किसी बात मे कुछ नही कहते। मौसी की बात पर तो कोई बात ही नही।'

इस गाडी और दो मुसाफिरो को लेकर 21/2, तर्कालकार सकेंड बाई लेन मे जाते अनुपमा को कुछ अटपटा लग रहा था।

अब मौसी ने ही रक्षा की। बोली, 'शोभना, मेरे पास बहुत समय नही है। *कुत्ते को देखने डॉक्टर पक्के बारह बजे आयेंगे।* हमे उसके पहले ही घर लौटना पडेगा।'

लाचार मौसी गाडी से उतरी ही नही। तर्कालकार सेकेंड बाईलेन के

मोड पर गाडी से उतरकर शोभना बोली, 'मौसी, मैं गयी और आयी। अगर हो मका तो इस लडकी की भी छुट्टी कराकर ले आऊँगी। तुम एक से ढाई सौ तक गिनती गिनो—इस बीच ही देखोगी कि तुम्हारी शोभना तुम्हारे पास लौट आयी है।'

मौसी ने सचमुच ही ढाई सौ गिनना शुरू कर दिया। फिर शोभना बोली, 'बावली, मेरी प्यारी सखी, तू झगडा मत करना, कितने दिन बाद तुझसे भेंट हुई है, आज मैं तुझे ले ही जाऊँगी।

झगडा तो दूर की बात, अनुपमा ने अब शोभना को थोडा ताज्जुब मे डाल दिया। अनुपमा ने पूछा तेरे यहा कमरे का क्या हाल है?

'कमरे की कोई असुविधा नही है—बहुत से कमरे पडे है। मेरा अपना एक कमरा है—उसमे भी दो सिंगल बेड डबल किये हुए हैं।

अनुपमा अपने आप ही बोली, तो भावज से कह देना, म कल सवेरे लौटूगी।'

ढाई सौ तक की गिनती के कुछ देर बाद ही शोर मचाती हुई शोभना ने लौटकर मौसी से कहा, 'देखो मौसी, जो कहा वह किया।'

उन लोगो न पहले मौसी को उनके घर पर उतार दिया। अनुपमा तभी 21/2 तकालकार सेकेंड बाईलेन का दृश्य सोच रही थी। भावज लाल पेंसिल लेकर 'पात्री चाहिए' के विज्ञापन के स्तभ म एक के बाद एक निशान लगा रही हैं।

शोभना बोली, 'तेरे दादा को कैसी स्वीट बहू मिली है।' भावज स बोली अब आप उठ पडिये, भाभी। इस बावली का विदा कीजिय। कॉलेज में बहुतरे लडके उसके पीछे लगते थे। लेकिन तब अनुपमा सनगुप्त वेरी-वेरी गुड गर्ल थी। दादा, बाबा, माँ से कंसल्टेशन के बिना किसी लडके स बात ही न करती थी।

भावज उस वक्त क्या सोच रही थी, उसे अनुपमा लिखकर द सकती थी। वह शायद मन-ही मन बावली को कोस रही थी। कह रही थी, निकम्मी लडकी उस वक्त सती बनकर किसी को पकड न सकी। वसा होता तो आज हमें इस झंझट में न पडना पडता।

बावली डरी। भावज ने हँसकर पूछा, 'उन लडको का पता दो न, भाई।'

'वह लडके क्या अभी पडे हुए हैं, भाभी ! गगा की मछली की तरह टोकरी से निकालते निकालते ही गायब हो गये।' शोभना ने जवाब दिया।

बावली के जाने के मामले में भी सुलोचना ने ऐक्टिंग की। 'दादा से पूछकर जाना। वह आकर डाँटेंगे।'

'इस तरह की स्वीट बीवी पर खफा होना इपॉसिबल है यह मैं जानती हूँ, भाभी। यह बातें मुझसे कहने से कोई फायदा नही।' शोभना छिपा और दबाकर बात न करती थी।

'अगर कोई देखने आये ? लडकी देखने आने वालो का कोई ठिकाना नही।' सुलोचना ने झूठ मूठ की चिंता दिखायी।

'लडकी विलायत तो नही जा रही है। जल्दी से किसी दूकान से फोन कर दीजियेगा। सजा-सँवारकर सीधे पीढे पर बठान के लिए रेडी कर बीस मिनट मे भेज दूगी। उस बीच आप उन्ह चाय-समोसे खिलाइयेगा।'

'ओ , तुम्हें सब पता है।'

'पता न रहे तो कैसे चलेगा ? हम बगाल की लडकियाँ हैं।' शोभना ने जवाब दिया।

रात बिताने की बात उठाने के मौके पर अनुपमा बडे ध्यान से सुलोचना के चेहरे की ओर देख रही थी। कितनी ही छिपाने की कोशिश करो, उनका मह बहुत चमक उठा था। इस बारे में अनुपमा को शक न था।

थोडा सभलकर सुलोचना बोली थी, 'अरे बाप ! बाहर रात काटना। उनसे पूछे बिना ?'

आपसे गारटी कर रही हूँ—ननद को कल इटक्ट वापस कर दूगी । फॉर योर इन्फार्मेशन, इसके पहले भी, स्कूल में पढने के वक्त, हमारे घर अनुपमा बहुत रातें काट गयी है। मैं भी आप लोगो के गुलमोहर के मकान में रह आयी हूँ। रात भर हम फुसफुसाकर बातें करते थे।'

भावज न और बात न बढायी—शायद इस डर से कि कही सारा मामला ही चौपट न हो जाये। बोली, 'देखो, अभी रात भर की बात मत

करो। उससे आंखों के नीचे काले दाग पड़ जायेंगे । उसके बाद अचानक मन कोई दमन आ जाये !'

अनुपमा मन-ही मन बोली, 'आंखों के पास काला किसके हो जाता है—तुम्हारे या मेरे, यह कल ही पता चल जायगा ।'

जाने के पहले भावज ने तसवीरों की खोज ली। उनको उनके हाथों में देते वक्त शोभना बोली, 'एक मुझे दीजिए, भाभीजी।

भावज ने सोचा, शोभना के पास भी कोई पता हो सकता है । उसी आशा में बड़ी उत्सुकता से एक फोटो दे दी।

लेकिन शोभना के दिमाग में वह सब न था। मौसी के उतरने के बाद शोभना बोली 'सारी तसवीरें तो अपाशा के पास गयीं—कम से-कम एक सहेली के पास रहे। असम्मान न होगा।'

बहुत दिनों बाद आज अनुपमा को मानो मुक्ति का स्वाद मिला हो। अपनी सब बातें शोभना से कहकर कलेजा हलका किया। प्रतिदिन का यह अपमान, तिल तिल कर घुटने की यह पीड़ा जसे अब अनुपमा को सहन न हो रही थी। सिर्फ जो बात शोभना से न कही कि यह रात को रहने का प्रस्ताव उसने खुद क्यों किया। शोभना के दिमाग में सवाल उठा था, क्योंकि इससे पहले कितनी ही कोशिश करने के बाद भी वह अनुपमा को इस घर में न ला सकी थी। शोभना ने कहा था, 'मैं कितनी भाग्यशालिनी हूँ। तू एक बार कहने पर तैयार हो गयी।'

अनुपमा शोभना का धोखा नहीं देना चाहती थी। तबीयत में आया कि अपनी सारी बातें शोभना से खुलकर कहे। रात को क्यों उस 21/2 तर्कालकार सेकेंड बाईलेन में असह्य हो जाता है, वह शोभना को बता दे। लेकिन उसे बहुत ही सकोच हो रहा था। वह शोभना को बहुत प्यार करती थी लेकिन सबध ने कभी अश्लीलता की हद पार नहीं की थी।

दोपहर को बहुत गपशप के बाद अनुपमा ने बँगला अखबार अपनी ओर खींच लिया। नजर स्वभावत पात्र पात्री कॉलम पर चली गयी। बात शोभना की नजर से बची न रही।

शोभना का मन अभी तक हावड़ा की अंधी गलियों की तरह तंग और अँधेरा न था। उसने खुद भी कभी अनुपमा के लिए फिक्र करना शुरू किया

था। कहा था 'लोग क्या चाहते हैं ? तुझ सी पत्नी को पाकर किसी को भी धन्य होना चाहिए। मेरे भाई अगर विदेश जाकर विलायती पत्नी का सेलेक्शन न कर डालते तो मैं तुम्हे ही इस घर मे ले आती।'

अब अनुपमा बोली, 'बच्ची शोभना, तुम अपन चरखे को तेल दो।'

शोभना ने कहा, 'विज्ञापन का जवाब न देकर सोचा है कि इस पत्र से तेरे लिए एक विज्ञापन दे दू बावली।'

शोभना रुपयो के लिए नही सोचती थी। किसी से पूछना भी न होगा। पिछले जन्मदिन पर मौसी के पास से नकद एक सौ रुपये शोभना के बग म आ गये थे, जिनके लिए उसे किसी को जवाबदेही न करना था।

अनुपमा बोली, 'विज्ञापन पहले दिये गये हैं। बहुत तकलीफो मे भाई ने विज्ञापन के लिए रुपये निकाले थे। लेकिन वसा कोई जवाब न आया। एक भलेमानस ने लिखा था उनका मकान लिंटल पडने के लिए रुका है। लडके की शादी के पहले मकान पूरा करने के लिए सत्ताईस हज़ार रुपया की जरूरत है। इस बारे मे राज़ी हो तो पत्राचार चल सकता है।

'राज़ी क्या चीज होती है रे ?' शोभना थोडी बुद्धू है।

'माने लडकी के अभिभावक अभी सत्ताईस हज़ार रुपये नकद लेकर मुलाकात कर सकते हैं या नही ?' भावज ने कहा था, 'सत्ताईस हजार रुपय होने पर पति की क्या जरूरत है ? उन रुपयो के सूद से किसी भी लडकी का निर्वाह हो जायेगा।'

'फिर चिट्ठी नही आयी ?' शोभना ने जानना चाहा।

'आयी थी न ! मेदिनीपुर के एक गाव से छठे दर्जे तक पढे एक बेकार युवक ने लिखा था—वह अभी शादी के लिए तयार है। दूसरी जाति मे आपत्ति नही है। लडकी ही विचारणीय है। लेकिन गोरी होनी चाहिए। फौरन मनीआडर से राह खच भेज दें, क्योंकि कलकत्ते-से बडे शहर मे जान की मेरी सामर्थ्य नही है।'

शोभना सिहर उठी। लेकिन अनुपमा कैसे सहज भाव से बातें बता रही थी और साथ ही थोडा थोडा मुसकरा रही थी।

इस सब पर शोभना विश्वास ही नही करना चाहती थी। 'ज़रूर विज्ञापन लिखने मे कोई गलती हुई होगी। बावली के लिए एक विज्ञापन

वह खुद ही लिखना चाहती है।'

अनुपमा हँसकर बोली, 'उस आदमी का जवाब जरूर मिलेगा। जो लिखता है कि उन्माद आश्रम मे पाच बरस रहकर मैं कई महीनो से अपने घर मे रह रहा हूँ। शादी म आप कैसा खच कर सकते हैं, वह अगली डाक से लिखें।

'लगता है कि उस आदमी को और कोई काम नही है। लेटे लेटे चिटठी लिखकर अपने-आप अखबार के पोस्ट बॉक्स मे डाल आता है। डाक खच भी नही लगता।

शोभना अनुपमा को और हतोत्साह न करना चाहती थी। कहा था, 'गाडी जब है, तो चल घूम आयें। तबीयत हलकी हो जाये।'

गाडी पर बठकर वे निरुद्देश्य बडी देर तक घूमती और गप्पें लगाती रही। कॉलेज की पुरानी सहेलिया कहा खो गयी, उस बारे मे बातें हुईं।

'क्लास के फस्ट बाय अमलेश की याद है ? वह अब आई० पी० एस० हो गया है। पुलिस का कोई नामी गिरामी है। शोभना ने बताया।

'सेकेंड बॉय श्रीमन्त को भी आई० सी० आई० मे एक अच्छी पोस्ट मिल गयी है। इसी बीच दो एक बार विलायत और अमेरिका घूम आया है।' शोभना से उसकी एक बार मुलाकात हुई थी। 'साथ मे मेम सी गोरी पत्नी थी।'

अच्छे अच्छे लडके मोटे तौर पर अच्छे ही रहे। लेकिन लडकियो के मामले मे वह बात बिलकुल नही है। तनिमा सान्याल ऐसी अच्छी छात्रा थी—पूरे कॉलेज म सेकेंड आयी थी। लेकिन अब दत्तपुकुर के पास एक लडकिया के स्कूल मे मास्टरनी है। उसका पति भी पास के एक प्राइमरी स्कूल म टीचर है और तनिमा सान्याल म कितनी सभावनाएँ थी ! लेकिन तनिमा सान्याल मे रूप न था।

रूप तो अमलेश म भी न था, यह अनुपमा को याद आया। लेकिन उससे उसकी उन्नति मे रुकावट न आयी।

तनिमा से एक बार शोभना की मुलाकात हुई थी। उसी ने विशाखा की बात बतायी। क्लास की सबसे खराब लडकी थी। ज्योंही विशाखा टेस्ट परीक्षा मे घुस रही थी कि सुनन्दा दी ने हॉल से बाहर निकाल दिया।

उसके वाद कोई खवर ही नही मिली। तमाम लडकियो न सोचा था कि वेचारी विशाखा की ज़िंदगी ही खराव हो गयी।

विशाखा का क्या हुआ—तुम न बता सकोगी। दस रुपये शत,' शोभना ने अनुपमा को चलेंज किया।

आहा! सबका दिमाग तो एक-सा नही होता। शायद ज़िंदगी म बडी तक्लीफ मिली होगी। अनुपमा ने शोभना को हलकी-सी झिडकी दी।

तू ठेंगा समझी!' शामना ने झिडका। 'उस विशाखा के हाथो म तनिमा को फूला का गुच्छा देना पडा। विशाखा आयी थी छात्राओ को प्राइज़ देने। शरीर के रग और पिता के रुपया के ज़ोर से विशाखा ए०डी० एम० की मिसेज हो गयी थी।'

'तनिमा न कहा था, विशाखा का रग अव और भी ब्राइट हो गया लगता है।'

बहुत से लडके भी तो विशाखा की तरह कॉलेज से निकाले गय थे। जैसे राधाकात नगन। लेकिन उसमे से कोई भी विशाखा म बाजी न मार सका। इस तरह की विशेष सफलता इसी तरह की लडकियो का प्रिविलेज है, अनुपमा ने मन-ही मन सोचा।

राह मे अचानक एक और व्यक्ति से भेंट हो गयी। 'प्रणता है न? उसे शोभना ने ही पहले देखा। प्रणता इस वक्त गाडी पर वठ रही थी।

'हलो, हलो प्रणता।'

प्रणता क्या? ससार मे एकमात्र औरतें ही पुरानी सहलियो को दख-कर पूरा नाम नही लेती। वह प्रणता मित्र थी। लेकिन माग मे सिंदूर भर-कर वह घोप से हाजरा या जो तवीयत हो बन सक्ती है। मर्दो के लिए यह गडबड नही है। मित्र वनकर स्कूल म पढने पर ज़िंदगी भर मित्र रह जायेंगे, कोई परिवतन न होगा।

प्रणता वडी कीमती साडी पहन थी। सिर के बाल भी बडे स्टाइल से वँधे थे। शादी के वाद भी प्रणता का फिगर विगडा नही था।

प्रणता उस तरह की लडकी है जिसके जीवन मे कोई समस्या नही दिखायी दती। पढने लिखने मे साधारण। दखन मे मँझोली—लेकिन मध्य

वित्त बगाली की-सी मुदरी। गाडी पर कॉलेज आती थी। टेस्ट-परीक्षा के पहले ही पिता न रिश्ते शुरू कर दिये थ और वेटिंग लिस्ट म दो तीन अच्छे लडको के नाम लिख रखे थ। इन सुपात्रो के लिए पिता को विज्ञापन नही करना पडा था। आत्मीय स्वजनो, बधु-बाधवो स कह रखा था, उसी से काम हो गया था।

फाइनल परीक्षा के बाद एक सप्ताह बेकार न बठना पडा। बी० ए० पास का समाचार निकलन के पहले मडवा यूनिवर्सिटी से प्रणता को ब्याह की डिग्री मिल गयी थी।

लडको के पैनल की तयारी तक इ ह मालूम थी। किंतु कौन भाग्यवान अत म इस प्रणता मित्र के स्वत्वाधिकारी हुए इन दो सहेलियो को पता न था।

प्रणता भी इ ह देखकर बहुत खुश हुई। बोली, 'हाय मा! तुमने अभी तक ब्याह नही किया। हाऊ लकी! तुमको देखकर मुझे ईर्ष्या हो रही है। सच कह रही हूँ। विश्वास करो।'

प्रणता मित्र अब प्रणता विश्वास हो गयी थी।

'व क्या करते हैं? शोभना ने पूछा।

'करेंगे क्या? विलायत से चाटड पास करन के बाद आकर यहा विलायती आफिस मे नौकरी करते हैं।'

'ब्याह चीज बिलकुल सुविधा की नही होती, अनुपमा।' प्रणता न दुख प्रकट किया। ब्याह के बाद अब तक तीन बार विलायत गये—लेकिन, मुझे बस एक बार ले गये थ। तुम लोग बताओ यह क्रूएल्टी है या नही!'

वडी निष्ठुरता है। अनुपमा और शोभना सहमत हुइ।

'सी० एस० पी० सी० म खबर कर' मन ही मन शोभना ने कहा।

प्रणता बोली, तुम अच्छी हो—फ्री सिटिजन आफ फ्री कट्री! और हमारी हालत दखो। बच्चो के लिए सोच के मारे नीद नही आती। अच्छे स्कूल म भर्ती कराना भी वडी भारी समस्या है। यह सब सुनते है। बहुत पहले से प्रयास किये बिना शायद भर्ती ही न हो। उनको कोई फिकर ही नही है। बस कहते है अजमेर या दून भेज दूगा। बताओ तो एक तो लडका है उसे बाहर भेजकर हाथ पर हाथ रखकर बठा जाता है?'

शोभना ज्यादा फक्कड थी। बोली, 'वाह वा ! वारी जाऊँ ! हाथ पर हाथ न रखकर एक और इतजाम करो—गवनमट को दो म तो आपत्ति नही है।'

प्रणता को इस समय मजाक अच्छा न लग रहा था। बोली, 'मजाक नही भाई। ला मार्टीनियर या सेंट जेवियर म तेरी कोई जान पहचान है? मित्र इन्स्टीट्यूशन मे उनके आफिस के क्लक के वडे भाइ काम करते है। मैंन कहा, माफ करो राजा, वहुत होगा तो डाल वस्को या सेंट लारेंस। उससे नीचे नही जा सकूगी।' प्रणता सचमुच काल्पनिक भय से टूटी जा रही थी। 'वेटे की पढाई लिखाई लेकर एसा शोर शरावा होगा, यह जानती तो कौन शादी करती? ओ, तुम लोग वहुत अच्छी हो—कसी तितलियो सी उडती फिरती हो।'

'तितली नही—मॉथ।' शोभना न जवाब दिया।

अनुपमा वोली, सचमुच तरे लिए हमे फिक्र हा रही है। अगर उन स्कूला मे मैनज न कर पायी तो क्या होगा?

प्रणता बोली, मैन नोटिस दे रखा है।'

'नोटिस? डाइवोस कर रही है क्या?,

'जरूरत पडी तो वह भी करना पडेगा। उनसे कहा है, ट्रासफर करा कर विलायत चलो—वहाँ स्कूल मे भेजना मुश्किल नही होगा।'

'प्रणता, तू अभी भी कविता पाठ करती है? तसवीर वनाती है? कविता लिखती है? उस बार तुझे कौन सा प्राइज मिला था?'

'तेरा तो दिमाग खराब है। वह सब कब का उठाकर सीके पर रख दिया। वह सब अब तुम लोगा के लिए है।

यह प्रणता पहले कितनी अडडेवाज थी। कॉलेज के पास रेस्तराँ मे बठकर सहेलियो के साथ घटो वाने किया करती थी। घर लौटने की बात याद न रहती थी—बूढा ड्राइवर मुह वाय फाटक के सामने खडा रहता। आज की प्रणता कैसे सहज भाव से बोली चलू भाई वह लच के समय लौटेंगे। एक मिनट भी देर नही करते। खाना गरम कर खडे रहना पडता है। तुम लोग अच्छी हा—तुम लोगो के पास तो यह सब फालतू बातें नही हैं।'

अनुपमा प्रणता को भली लडकी समझती थी। उस बार शोभना का हाथ कट जाने पर प्रणता कैसी रोयी थी! वही प्रणता आज अनुपमा को बडी निठुर लगी। इनका दुख जसे उसन समझन की कोई कोशिश ही न की, उलटे ईर्ष्या दिखा गयी।

शोभना अभी तक प्रणता सी आत्मकेंद्रित नही हुई थी। दूसरा के लिए सोचने की, अपनी परिधि के बाहर देखने की मानसिक उदारता अभी भी उसमे है।

घर लौटकर शोभना ने झटपट दो बँगला अखबारो के पात्र पात्री कालमो म नजर डाली। बोली तू तो एक अखबार खरीदती है। भावज से कहना कि दूसरा अखबार अब से मैं ही ध्यान से देखती रहूँगी। मेरी आखो स निकल जाना बहुत मुश्किल है। सनगुप्त बराबरी का घर देखते ही जाल फेंक दूगी। असवण म भी आपत्ति नही है यह तेरी भावज ने कह दिया है।'

अनुपमा ने शरमा कर प्रतिवाद किया, खुद तो खाने को नही, चले शक्करा को बुलाने!' लेकिन शोभना ने जवाब दिया एक सौ बार करूँगी। खुद खाने का न मिले तो कहा लिखा है कि शक्करा को न बुलाया जाये ?

उन्ही विज्ञापनो की ओर अब नजर गयी। एक के बाद एक दो सप्ताह विज्ञापन अनुपमा की भावज की नजरा म आया। काम मे लगे (1200) पात्र के लिए अच्छी लडकी चाहिए। जाति की रोक नही है। उम्र कम से-कम 23, पात्री स्वय पत्राचार कर सकती है। बाक्स ।'

भद्र महिला विज्ञापन का लोभ नही छोड सकती। किन्तु ननद से मुह खोलकर कहने का साहस नही है। ननद की सहेली को अलग बुलाकर इशारा किया था— भाई, आजकल बहुत लोग पात्री के साथ डाइरेक्ट मिलना पसद करते है। इसमे हज भी क्या है ? लेकिन दुहाई है भाई, मेरा नाम न लेना।'

शोभना ने अब नीला पैड और कलम लकर एक सुदर सा और छोटा-सा पत्र लिख डाला। उसके बाद सहेली की ओर बढाकर पूछा, कैसा

हुआ—जवाब ?'

अनुपमा पढ़ कर मुसकरा कर बोली, 'सुदर है, खूब रोमटिक। पान की चिटठी का उत्तर दिये बिना राह नही है।'

शोभना साथ-ही साथ बोली, मेरी लिखावट अच्छी नही है। तुम्हार हाथ की लिखावट पढन से इसकी क्षमता डबल हो जायेगी। इसलिए भली लडकी की तरह चिटठी की नकल कर डालो।'

अनुपमा का चेहरा लाल हो गया। शोभना ने चिटठी उसके ही लिए लिखी थी, इसे वह पहले न समझ सकी।

इस तरह की चिट्ठी दो एक बार लिखना दिमाग मे न आया हो ऐसी बात न थी, लेकिन हिम्मत न हुई। उसके सिवा कोई प्राइवेसी न थी। जो भी चिट्ठी आती, वही भावज साथ-ही साथ खोल लेती। मा को भी अनुपमा ने लिख दिया था—बहुत सावधानी से लिखना, यहा सब लोग चिटठी पढ लेते ह।

शोभना बोली, पता यही का दे दे। इस घर की सारी चिट्ठिया पहले मेरे पास आती है। मैं ही डिस्ट्रीब्यूट करती हूँ। तुझे कोई चिन्ता नही। अनुपमा सनगुप्त नाम से किसी अनजान हाथो की लिखी चिट्ठी मिलने से सीधे तुझे भेज दूगी। किसी का पता न चलेगा।'

अभी भी क्या करे यह अनुपमा तय न कर सकी। 'तुझे क्या हो गया है ?' शोभना ने झिडकी दी।

शरीर अजीब सा हो रहा है। अनजान आदमी को चिटठी लिखकर कहना होगा—मुझस व्याह कर पार लगाओ।'

क्या करेगी ? जिस देश मे जैसा रिवाज हो। धोती खोलकर नदी पार की जाती है।' शोभना ने मजाक किया।

साथक जनम औरत होकर इस दश म पैदा हुई इस लाइन को जीवन स मिटा दन का सिद्धात अनुपमा ने लिया था। फिर भी अगर सृष्टिकर्ता के हुकम से फिर इसी देश म पदा होना पडे तो लडकी बनाकर न भेजना भगवान ! बहुत हो चुका ! मन ही मन अनुपमा बुदबुदायी।

उसके बाद लाज शरम हटाकर चिटठी लिखने बैठी। महाशय, आज की 'दनिक प्रभाती पत्रिका म आपका विज्ञापन देखा। पात्री के हाथ

का लिखा पत्र आपने माँगा है, इसलिए खुद ही लिखने बैठ गयी।'

अनुपमा इस चिट्ठी का लिखने की कल्पना कुछ महीने पहले न कर सकती थी।

अनुपमा सनगुप्त तुम कहाँ उतरी जा रही हो ? अनुपमा को अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। यह चिट्ठी वह बिलकुल न लिखता कि 21/2 तकालकार सेकेंड बाईलेन के उस एक कमरे के मकान से छुटकारा मिलना बहुत जरूरी है। वहाँ से निकल आने के लिए अनुपमा सब कुछ करने को तयार है।

भाई मुह खोलकर कुछ नहीं कहते। किन्तु भावज क्रमश ठंडी हो जा रही हैं—पहले का उत्साह, वह उष्णता अब नहीं है। रात सचमुच अनुपमा को असह्य हो गयी है। शरीर का सारा रक्त मानो चेहरे पर जमा हो जाता है। दीवार की ओर मुँह फेरकर अनुपमा कहती, हे धरती, तुम फट जाओ। अब सहा नहीं जाता।

आज फिर रात 21/2 तर्कालकार सेकेंड बाईलेन से खिसक आने पर अनुपमा अपने को बहुत हलका अनुभव कर रही थी। लग रहा था, मानो उसने कोई बडा भारी काम कर डाला हो।

बीच म अचानक दूसरी असुविधा पदा हो गयी। शोभना की मौसी शाम को सशरीर आ पहुँची। खबर लायी वे लोग आज ही आ रहे हैं। लोग मान मौसी के बेटे के दफ्तर के साथी।'

अनुपमा को लगा कि इस हालत मे चले जाना ठीक रहेगा। कि ब्याही सहेली को देखने आये तो उस समय किसी दूसरी सहेली का मौजूद रहना ठीक नहीं है। घर पर कोई विवाह-योग्य लडकी रहने पर उसे अलग रहने की प्रथा है। दो एक बार मुश्किल हो चुकी है। वर की पा एक लडकी का देखन ... लडकी क ... ।

मौसी अनुपमा ... जा रह ... के लिए

बेचारी आयी—उ ... यी।'

तभी घर लौट ... की ... है

अनुपमा मानस चक्षु

को तुमन किस धातु

व खराब हा जायेंगी। लडकिया ऐसी भगुर क्यो हैं, ईश्वर?

शायद चेहरा लाल किये ही अनुपमा को उसी शाम को 21/2 तकाल मार सेवेंड वाइलन वापस चले जाना पडता किन्तु शोभना ने उस यात्रा म बचा लिया। प्यारी प्यारी आवाज म वह बोली, 'बाबली के चले जान पर मैं किसी से भी वात न करूँगी।'

'आ शामना, इन सब मामला म अनजान मत बनो,' अनुपमा ने अपने-आप ही कहा।

लेकिन शोभना का एक ही बात थी। 'देर कितनी लगगी? मैं जब तक इटरव्यू दूगी, बाबली तब तक मर कमरे मे बैठे बैठे शरदिन्दु बद्योपाध्याय का 'रिमझिम' पढेगी। इटरव्यू समाप्त होने पर दोनो बातें करेंगी—नही ता मेरा सिरदद दूर न होगा।'

इसके बाद मौसी कुछ भी न बोली। बिना मा की लडकी थोडी दुलारी हा जाती है, यह मौसी को पता था। बहनोई से रिपोट करने से भी फायदा नही। य बारीक बातें उनके दिमाग मे न घुसेंगी। वह लडकी के ब्याह म कितन रुपये खच कर सकत हैं, बस यह साली को बता दिया था।

इसलिए मौसेरे भाई के दफ्तर के साथी यथासमय इस मकान मे आकर लडकी के आमने सामन हुए।

उस समय अनुपमा मौजूद न रही। शोभना के बेडरूम मे लेटे लेटे एक कहानियो की किताब लेकर वक्त बिता दिया। अनुपमा को लगा कि यह बँगला कहानिया की किताब बडी अच्छी है। बँगला लडकिया न ही गल्प-उपन्याम को बचाय रखा है, अनुपमा न ऐसी बात सुनी थी। लेकिन आज-कल की बँगला किताबा मे लडकियो के सुख दुख की कोई बात ही न रहती। इसीलिए शरत्चद्र ने बगाल की लडकिया का दुख समझकर एक दो बातें बतान की कोशिश की थी। उसके बाद के पुरुष लेखक जस लड-किया की बात भूल ही गय हो। नारी को भोग की, बहुत हुआ तो प्रेम की, पात्री समझकर सैकडो पृष्ठ माननीय साहित्यिको न लिख डाल। औरता का चरम अपमान, अध पतन और सकट की कोई बात ही कही प्रकाशित नही होती। और औरतें भी किस तरह मुह बद किये कोई विरोध प्रगट किय बिना वही सब कहानियाँ निगलती जा रही हैं!

का लिखा पत्र आपने मागा है, इसलिए खुद ही लिखने बैठ गयी।'

अनुपमा इस चिट्ठी को लिखने की कल्पना कुछ महीने पहले न कर सकती थी।

अनुपमा सेनगुप्त तुम कहा उतरी जा रही हो ? अनुपमा को अपने स प्रश्न का उत्तर नही मिलता। यह चिट्ठी वह बिलकुल न लिखती किन्तु 21/2 तर्कालकार सेकेंड बाईलेन के उस एक कमरे के मकान से छुटकारा मिलना बहुत जरूरी है। वहा से निकल आने के लिए अनुपमा सब कुछ करने को तयार है।

भाई मुह खोलकर कुछ नही कहते। किन्तु भावज क्रमश ठडी होती जा रही है—पहने का उत्साह, वह उष्णता अब नही है। रात सचमुच ही अनुपमा को असह्य हो गयी है। शरीर का सारा रक्त मानो चेहरे पर जमा हो जाता है। दीवार की ओर मुह फेरकर अनुपमा कहती, हे धरती तुम फट जाओ। अब सहा नही जाता।

आज फिर रात 21/2 तर्कालकार सेकेंड बाईलेन से खिसक आने पर अनुपमा अपने को बहुत हलका अनुभव कर रही थी। लग रहा था, मानो उसने कोई बडा भारी काम कर डाला हो।

बीच म अचानक दूसरी असुविधा पैदा हो गयी। शोभना की मौसी शाम को सशरीर आ पहुँची। खबर लायी वे लोग आज ही आ रहे हैं। य लोग मान मौसी के बेटे क दफ्तर के साथी।'

अनुपमा का लगा कि इस हालत मे चले जाना ठीक रहेगा। बिन ब्याही सहली का दखन आये तो उस समय किसी दूसरी सहेली का मौजूद रहना ठीक नही है। घर पर कोई विवाह योग्य लडकी रहने पर उसे भी अलग रहने की प्रथा है। दो एक बार मुश्किल हो चुकी है। वर की पार्टी एक लडकी को देखने आकर दूसरी लडकी को पसद कर बैठी।

मौसी अनुपमा को बात उठान जा रही थी। 'एक दिन के लिए तो बेचारी आयी—उसमे भी बाधा पड गयी।'

तभी घर लौटने पर भावज के चेहरे की हालत कसी हो सकती है इसे अनुपमा मानस चक्षुओ से देख सकती थी। हाय ईश्वर बगाली लडकियो को तुमने किस धातु से गढा है ? कहीं एक रात भी बिताने का सहारा नहीं।

शोभना तभी बच्चो की तरह बोली, 'बावली, मुझे बडा डर लग रहा है।'

डर ! सदा डर मे सहमे रहन के लिए और डरने के लिए ही तो इस देश मे लडकिया पैदा होती है। सुनन्दा चौधरी न तो कहा ही था, 'समस्त प्राणी जगत मे नारी पर ही सबसे अधिक अपमान का बोझ लाद दिया गया है। तुमको क्या पता, औरतो के सिवा और किसी मादा पशु को रेप नही किया जाता।'

अनुपमा का सारा शरीर घिनघिना उठा था। सुनन्दा दी न कहा था, 'उस देश म औरतें कहती हैं, जननी जठर म थूकन के लिए सुसभ्य मर्दो न दो रास्तो का आविष्कार किया है—पतिता वृत्ति और बलात्कार। उस देश मे तीसरा तरीका नही मालूम है। उनके लिए उन लोगो को इस कलकत्ता शहर म आना चाहिए। वह है बगाली लडकिया की पति की खोज।

शोभना फिर बोली, 'बावली मुझे बहुत डर लग रहा है।' अनुपमा तब भी बात नही समझी थी। झिडक दिया, 'आ शाभना, मुझे आज जरा सान दे।'

सचमुच शोभना का मुकाबला नही। अनुपमा के लिए उसके स्नह मे सचमुच कोई खोट न थी। शोभना न कहा 'तेरे लिए अब मैं कमर कसकर तैयार हो जाऊँगी। मैं ही चिट्ठी-पत्री लिखती रहूँगी।' उसके बाद कहा था, 'आ तरे दादा पर मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है। बदली की शादी करने मे कौन सा आसमान फट पडता ?'

जो अनुपमा किसी दिन हावडा स्टेशन से उतरकर अपन दादा के घर आयी थी, अब वह अनुपमा नहीं है। इन कुछ महीनो की उपेक्षा और अनादर से वह अनुपमा सूख गयी। दादा और भाभी का अब मानो डर अधिक हाता जा रहा था। कुछ ही महीनो म कोई व्यवस्था कर माँग मे सिंदूर भरकर अनुपमा को विदा कर देने का जो सपना भावज ने देखा था, वह भी अब मिटता जा रहा है।

एक गहरी रात म दादा ने भावज से कहा था, 'ब्याह कहाँ से होगा ?

थोड़ी देर बाद ही शोभना परीक्षा हॉल से लौटकर अपने बिस्तर पर पड़ गयी थी। इंटरव्यू देकर वह बहुत थक गयी थी।

अनुपमा ने शोभना की ओर देखा। मौसी ने भी कमरे में आकर बता दिया, 'सारी शोभना! रिजल्ट अभी तक डिक्लेयर नहीं हुआ है।' उन्होंने अनुपमा से कहा, 'सहेली के लिए प्रार्थना करो।'

अनुपमा बोली, 'प्रार्थना की कोई जरूरत नहीं। आज शोभना को जैसा सजा दिया था रिजल्ट मिलना निश्चय है।'

मौसी खुश होकर चली गयी। लेकिन अनुपमा बहुत खुश न हो सकी। शादी के लिए आदमी लोग लड़कियों के शरीर के सिवा क्या और कुछ नहीं देखते? सुनंदा दी ने उस दिन कहा था, 'मध्य युग के स्लेव मार्केट में भी लड़कियों का इतना अपमान न था, क्योंकि शरीर पसंद हो जाने पर मालिक पैसे गिन देते थे। अब रुपये भी चाहिए, मन मुताबिक शरीर भी चाहिए।

'क्या सोच रही है?' शोभना ने पूछा।

लेकिन अनुपमा उस बेचारी को बेकार उत्तेजित नहीं करना चाहती थी। इसीलिए बोली, 'तू अब रेडी हो जा, शोभना। मैं कितनी भाग्यशाली हूँ, इसे अब समझेगी।'

अगर ऐसी भाग्यशाली होती तो अपनी ऐसी हालत क्या है? अनुपमा के अंतर से ही मानो किसी ने प्रश्न किया।

अनुपमा ने हँस कर कहा, मैं खरगोश की तरह हूँ। खरगोश और सब चीजों को हजम कर लेता है, लेकिन खुद हजम नहीं होना चाहता!'

शोभना ने रात को लेटे लेटे उस दिन कहा था 'बावली, सो गयी क्या?'

'बहुत दिनों के बाद आज मैं आराम से सोऊँगी, शोभना। मेरे कमरे में एक जोड़ा बिस्तर और नहीं है।' बावली ने मन का दुख दबाकर नहीं रखा।

शोभना ने तभी पूछा, बता तो, मेरा क्या होगा? उस प्रश्न का गूढ़ अर्थ उस समय बावली न समझी। इसी से मजाक में बोली, होगा क्या? फूल की सेज के लिए तैयार हो जा।'

इस काट की बात ने बावली को बहुत बेचैन कर दिया था। ऐसे कोई काटता है, सुलोचना, तुमने क्या मेरे दादा को घायल कर दिया था?

सुलोचना ने कहा था, 'बिच्छुए का काटना मालूम है? एक बार काटने पर बादल की गरज बिना छोड़ेगा ही नहीं।'

सुनन्दा दी की बात अनुपमा को याद आ गयी। उस दिन सुनन्दा दी ने कहा था, 'सिनेमा में एक दिन रेडलाइट एरिया का दृश्य देखा था। गाहक को फँसाने के लिए अभागी औरतें जो भावभंगी करती हैं उससे भी कुछ और अश्लील दृश्य इन पात्रों के आगे इंटरव्यू में दिया जाता है। तुम्हें कुछ कहने को नहीं, तुम्हें कुछ पूछना नहीं—सब कुछ इकतरफा रहता है। तुम एक कमोडिटी हो। पसंद आने पर मद तुमको लेगा, नहीं तो अपनी लंबी लिस्ट में लिखे दूसरे कैंडीडेट के मकान पर धावा बोलेगा। स्नो, पाउडर, सेंट लगाकर, साड़ी पहनाकर, एक और नारी-देह को सुल्तान के आगे हाजिर करना होगा—वे मुआयना करेंगे। इस देश को अभी तक सभ्य देश कहा जाता है। बता सकती हो, इस देश की लड़कियाँ विद्रोह क्यों नहीं करती हैं? गलती कहाँ पर है?' सुनन्दा दी ने सिगरेट पीते-पीते ही सवाल किया था।

ये सारी भद्दी बातें नाटकीय क्षण में अनुपमा को याद आ गयीं। तब नजर में काट किस तरह रहेगी?

व्यक्ति बड़ी देर तक आश्चर्य से अनुपमा को देखता रहा। बड़े चोखे चोखे कई प्रश्न भी किये। जानकार परीक्षक हुए बिना इस तरह के पब्लिक सर्विस कमीशन से स्टाइल का अभ्यस्त कैसे होता?

उन सारे सवालों का जवाब अनुपमा ने यथासाध्य दिया था। उस समय मानो उस व्यक्ति के चेहरे पर छिपे संतोष का भाव दिखायी दिया हो। यह भाव सुलोचना की जानकार आँखों में भी छिपा न रहा।

व्यक्ति के जाने के बाद सुलोचना ने कहा था 'लड़के के चेहरे का भाव देखकर रिजल्ट समझ में आता है। केस बड़ा अच्छा लग रहा है।'

अनुपमा ने कहा था 'साँप की टोकरी तुम-सा मदारी ही पहचानता है।

'मेरा साँप तो टोकरी ही में है।' सुलोचना ने फौरन जवाब दिया।

लडकों की नौकरी कहाँ है ? नौकरी माने ही होते हैं शादी।'

'रहने दो रहने दो, और लेक्चर मत दो।' भावज का चेहरा गुस्से से भर उठा था। घायल नागिन की तरह सुलोचना ने जो फुफकार छोड़ी थी, उसे आधी रात के उस अँधेरे में भी अनुपमा समझ गयी थी।

इस बीच खबर आयी कि मा की तबीयत ठीक नहीं है। उस तरह के बहाने पर कलकत्ता से नन्दीग्राम भाग सकने पर अनुपमा बहुत खुश होती। लेकिन मा ने सीधे सीधे लिख दिया था, 'मेरा जीना मरना दोनों बराबर हैं। तुम अगर मेरे सुपुत्र हो तो बावली की शादी का ठिकाना किये बिना उसे यहाँ मत भेजना।'

मा ने और भी लिखा था, 'सभी के भाग्य में शुरू से ही पति बडा आदमी नहीं रहता—गुणवती नारी अपने पुण्यफल से सामान्य पति को भी असामान्य बना देती है। इसलिए पात्र के लिए बहुत सोच विचार करने की जरूरत क्या है ?'

सुलोचना जैसे इस मौके की ही राह देख रही थी। इधर-उधर की नौकरी वाले कई नान मैट्रिक पात्र की भी तलाश शुरू की। अनुपमा ने सब जानकर भी कोई रुकावट न डाली। उसने विरोध करने की शक्ति ही जैसे खो दी हो।

इनमें से ही एक व्यक्ति एक दिन अनुपमा को देखने आया था। उसके लिए दोपहर से तमाम जोड तोड हो रहे थे। स्वयं पात्र का सामना यह पहली बार था। पात्र के आत्मीयों ने कुछ दिन पहले ही हरा सिगनल देकर लड़की को फाइनल राउंड में रख दिया था।

सुलोचना की छटपटाहट मानो बहुत बढ गयी थी। मजाक में कई अप्रिय सत्य परामर्श अनुपमा को देने में उसने दुविधा न की। हाय अनुपमा ! तुमने ही किसी दिन कालेज में अरिस्टाटल शेली, कीट्स और कीट्स पढे थे ? और तुम्हारी भावज ने मजाक का अभिनय करते हुए कहा था, 'आत्मीय स्वजन के आगे परीक्षा और पात्र के आगे परीक्षा एक नहीं होती। पात्र की इंटरव्यू में कपड़े का साज सिंगार दूसरी तरह का होता है। पहली नजर जरा दूसरी ही तरह की होती है। आँखों की चितवन में काट होना चाहिए, समझी बावली ?

इस काट की रात ने बावली को बहुत बेचैन कर दिया था। ऐसे कोई काटता है, सुलोचना तुमने क्या मेरे दादा को घायल कर दिया था?

सुलोचना ने कहा था, 'बिछुए का काटना मालूम है? एक बार काटने पर बादलों की गरज बिना छोड़ेगा ही नहीं।'

सुनन्दा दी की बात अनुपमा को याद आ गयी। उस दिन सुनन्दा दी ने कहा था 'सिनेमा में एक दिन रेडलाइट एरिया का दृश्य देखा था। गाहक को फँसाने के लिए अभागी औरतें जो भावभंगी करती हैं उससे भी कुछ और अश्लील दृश्य इन पात्रों के आगे इंटरव्यू में दिया जाता है। तुम्हें कुछ कहने को नहीं, तुम्हें कुछ पूछना नहीं—सब-कुछ इकतरफा रहता है। तुम एक कमोडिटी हो। पसंद आने पर मर्द तुमको लेगा नहीं तो अपनी लंबी लिस्ट में लिखे दूसरे कैंडीडेट के मकान पर धावा बोलेगा। स्नो, पाउडर, सेंट लगाकर, साड़ी पहनाकर, एक और नारी-देह को सुल्तान के आगे हाजिर करना होगा—वे मुआयना करेंगे। इस देश को अभी तक सभ्य देश कहा जाता है। बता सकती हो, इस देश की लड़कियाँ विद्रोह क्या नहीं करती हैं? गलती कहाँ पर है?' सुनन्दा दी ने सिगरेट पीते पीते ही सवाल किया था।

ये सारी भद्दी बातें नाटकीय क्षण में अनुपमा को याद आ गयी। तब नजर में काट किस तरह रहेगी?

व्यक्ति बड़ी देर तक आश्चर्य से अनुपमा को देखता रहा। बड़े चोखे-चोखे कई प्रश्न भी किये। जानकार परीक्षक हुए बिना इस तरह के पब्लिक सर्विस कमीशन-से स्टाइल का अभ्यस्त कैसे होता?

उन सारे सवालों का जवाब अनुपमा ने यथासाध्य दिया था। उस समय मानो उस व्यक्ति के चेहरे पर छिपे संतोष का भाव दिखायी दिया हो। यह भाव सुलोचना की जानकार आँखों से भी छिपा न रहा।

व्यक्ति के जाने के बाद सुलोचना ने कहा था, 'लड़के के चेहरे का भाव देखकर रिजल्ट समझ में आता है। केस बड़ा अच्छा लग रहा है।'

अनुपमा ने कहा था 'साँप की टोकरी तुम सा मदारी ही पहचानता है।'

'मेरा साँप तो टोकरी ही में है।' सुलोचना ने फौरन जवाब दिया।

उस व्यक्ति की मुसक्राहट अनुपमा के मन के कैमरे मे भी आ गया थी। बाद मे कइ दिनो तक थोडा अकेलापन मिलने पर अनुपमा उस तसवीर को उलटती पलटती रही। जाने के पहले उस व्यक्ति की मुसकराहट बहुत कोमल हो गयी थी, अनुपमा की ओर कुछ ज्यादा देर तक देख कर भले आदमी न विदा ली थी। भावज ने ठीक ही कहा था, 'सब-कुछ अच्छी तरह याद रखना। अगर अत म विवाह हुआ तो इसका बदला लेगा।'

काम के बीच म भी वह व्यक्ति भुलाया नही जा रहा था। हाँ, इस टेम्पोरेरी काम की बात अनुपमा घर पर छिपा गयी थी। और कहने लायक था भी कुछ नही। सुन्दा दी की इस मार्केटिंग कपनी म मात्र कुछ दिना की नौकरी थी। डेली वज पेमेंट था। सुन्दा दी न कहा था, 'इन छह-सात दिनो के कैजुअल काम के लिए ही हजारो लडकियाँ छटपटाती हैं। देश की क्या हालत है!'

तमाम तरह की लडकियाँ है,' सुन दा दी न अफसोस से बताया था। 'कुमारी, मैरिड, विधवा, परित्यक्ता, बगालिया के घरा म इतनी पति परित्यक्ता औरतें चुपचाप आँसू बहाती रहती हैं, यह मुझे पता न था।'

इन पाँच छ दिना की नौकरी म यह वश और वह वश दोनो वशो का ही नाश न कर देगी। इस दुविधा म अनुपमा पडी थी। लेकिन घर स निकलन का सुअवसर अनुपमा छोडना नही चाहती थी। उसन घर पर बताया न था। केवल शोभना से सलाह ली थी। शोभना बोली थी, बताने की तबीयत न हो तो मत बताना। बता दना कि मेरे पास आयी थी। कोई असुविधा न होगी। कोई अर्जेंट बात होने पर मैं तो हूँ ही।'

सुन्दा दी ने कहा था, 'अनुपमा, हमारे इस काम से घर घर घूमो। अगर तुम्हारी आँखें खुल जायें तो देखोगी कि इस देश की औरता को क्रीतदासी बनाना कितना आसान है। सवाल करने पर देखोगी कि दाल, भात, तरकारी, कपडा धोने के साबुन बदन म लगाने के साबुन, स्नो सेंट, पाउडर और बेबी फूड के सिवा बगाली लडकियो की दुनिया ही नही है।

इसके बाहर अगर कुछ है तो वह है मैटिनी शो मे हीरो और करीब एक दजन दवता।'

अनुपमा कभी सुनन्दा दी का विश्वास ही नही करती थी। किंतु अब लगता कि सुनन्दा दी की बातो मे बहुत कुछ सच है। फिर भी अनुपमा ने उलटकर पूछा था, 'लडके क्या बहुत आराम से हैं, सुनन्दा दी?'

'रहने दे, रहने दे।' झिडकी दी थी सुनन्दा दी ने। 'आराम से कैसे रहगे? रवीन्द्रनाथ का 'अभागा देश' नही पढा है? जिसे तुम पीछे छोड देती हो वे तुमको पीछे घसीटते हैं। सब कुछ जान बूझकर जिन्होंने औरतो को इस हालत मे रखा है, वे दुनिया का राज्य पाकर भी उसकी रक्षा न कर सकेंगे।'

पहले कई दिनो का पारिश्रमिक अनुपमा के हाथ पर रखते हुए सुनन्दा दी ने कहा था, 'दो सौ-तीन सौ बरसो से बडे-बडे लेक्चर देने के बाद भी औरतो के लिए क्या हुआ है, जरा सोचकर देखो! राममोहन और विद्यासागर की दया से पति के मरने पर तुम्हे चिता मे न जलना पडेगा और विधवा होने पर भी तुम कागज पर दूसरा ब्याह कर सकती हो, उसके लिए डाइन कहकर छौंक नही लगाया जायेगा। सौ बरस और भी शोर शराबे के बाद कहा गया कि ठीक है, तुमको सौत के साथ गृहस्थी न करना होगी। मुसलमान औरत होने से वह भी किस्मत मे नही। बाप अगर विल करके तुमको अलग न कर जायें तो बाप की जायदाद मे भी कुछ हिस्सा मिलेगा। लेकिन वह नाम के लिए। तुम्हारी साथ मे काम करने वाली रत्ना—उसके सौत नही है, लेकिन पति की मिस्ट्रेस है। पिता के मरने के बाद कागज पर पिता के घर मे हिस्सा मिला है। किंतु लाइक गुड गल भाई के दिये कागज पर दस्तखत कर वह अधिकार छोडना पडा। वही करना पडता है—हर डिसेंट बहन वही करती है, बाप के घर का अधिकार छोडकर वह नाम कमाती है।'

सुनन्दा दी की ये बातें अनुपमा बहुत दर तक नही सुनना चाहती। मन में अजीब-सा कुछ घुमडने लगता। अनुपमा अब भी सबसे स्नेह करना चाहती थी—हे ईश्वर, हमे प्रेम करने की सामर्थ्य दो, सबका कल्याण हो। यही प्राथना करना ही तो माँ ने मुझे सिखाया था। मेरी बडी सामान्य प्राथना

है। रूपवान, गुणवान धनवान, कृती पति भी मैं नही चाहती। मुझे जरा सिर छिपाने लायक जगह दे दो, जिससे कि मेरी मा की फिकर दूर हो—मुझे भाई और भावज की बेचनी का कारण न बनना पडे। हे ईश्वर, मैं बहुत थोडे म सतुष्ट रहूँगी।

राह मे जाते जाते अनुपमा अपने मन ही मन म यह प्रार्थना कर रही थी। किंतु कहा है ईश्वर?

सुनदा दी के काम से सडक पर चलते चलत अचानक बस स्टड के पास उसी व्यक्ति को अनुपमा न देखा। वह बुशशर्ट और पैंट पहने बस की प्रतीक्षा मे खडा था। उस व्यक्ति ने एक सिगरट सुलगायी हुई थी।

अनुपमा उस व्यक्ति को दूर से देख रही थी। उसका शरीर उत्तेजना मे कॉपने लगा। सुलोचना की बात भी याद आ रही थी। कल ही भामिनी से बातें की थी। वह शायद अनुपमा को सुना सुनाकर। किस तरह स ब्याह का फूल खिलता है इसी की बातें थी। सुलोचना की किसी क्लास-फ्रेंड ने पात्र देखने आने के बाद के दिन ही पात्र को व्यक्तिगत पत्र लिखा था। उसम बताया था कि तुम मुझे बहुत पसद आय हो। मेरे जीवन म आप न आ सकें, यह बात मैं सोच ही नही सकती हूँ। लडकी न छिपकर लडके से मुलाकात भी की थी। और उससे आश्चयजनक परिणाम निकला था। वही लडकी अब आनद से पति की गहस्थी चला रही है।

अनुपमा को कुछ पसीना आने लगा। किंतु साहस कर अब वह आग बढ गयी। उस व्यक्ति को नमस्कार किया। यही व्यक्ति उस दिन अनुपमा को देखने गया था।

व्यक्ति पहले तो पहचान ही न सका। उसके बाद समझकर सिटपिटा-कर अनुपमा के मुह की ओर देखता रहा।

बातें करन का वैसा अवसर न था। उसके पहले ही एक और आदमी उनके बहुत समीप आ गया। जयतराय था। अनुपमा को लडके का नाम याद था। अनुपमा के हाथ म एक बस का टिकट था। उसी में शोभना का टेलीफोन झट-से लिख दिया और लडके की ओर बढा दिया। उसी वक्त बस आ गयी और दोनो भागकर बस म चढ पायदान पर खडे हो गय।

अपनी हिम्मत पर अनुपमा को खुद ही आश्चर्य हो रहा था। जयन्त

राय का पता, किस दफ्तर म काम करता है—यह सब अनुपमा को मालूम न था। रहता तो बिना कुछ सोचे विचार वही जाती। निश्चय ही घर पर सुलोचना के पास चिटिठयो की गड्डी मे इस जयन्त राय का पता है—लेकिन किस तरह उस चिटठी को मागे ?

टिकट पर टेलीफोन नबर लिखकर अनुपमा को बडी घवराहट हो रही थी। कभी लगता कि जबरदस्ती इस तरह का अपमान उसन क्या बुलाया ? सुनदा दी न तो उस दिन कहा था, दुनिया के सारे सुसभ्य देशो म औरता मे कम-स-कम एक सम्मान है। उन्ह प्रपाज' नहीं करना पडता ह। पाणिग्रहण की इच्छा मर्दों को ही व्यक्त करना हाती है।'

फिर याद आया कि अनुपमा सी बुद्धू नही होना चाहिए। टलीफान नवर तो लिख दिया, पर जल्दी म अपना नाम नही लिखा।

सदेह के झूले मे अनुपमा झूलन लगी। करीब दस घरो म सुनदा दी की वतायी सूचना बताकर, फाम भर कर अनुपमा शाभना के घर की ओर भागी।

शाभना अपन कमरे मे बैठी-बैठी कहानियो की किताब पढ रही थी। कहानी के अत को वह पढ रही थी। अनुपमा से वाली, जस्ट पाच मिनट। बडी नाटकीय अवस्था है। नायक-नायिका का मिलन होगा या नही अभी भी समझ मे नही आ रहा है। अमरेश गागुली एसा सस्पेंस डाल दत हैं! लास्ट मोमेंट तक समझ मे नही आता कि शादी होगी या नही।'

फोन की आर तिरछी नजर स अनुपमा न देखा। इस बीच शोभना न किताब खत्म कर डाली। वोली, 'ओह, खैरियत है। दा मिनट पहले तक कोई कुछ ठीक न था। किंतु अत मे प्रोफेसर सुदशन सन का एन०सी०सी० कडट शुक्ला चौधरी के साथ मिलन हो गया। देख लेना कि इस कहानी का सिनमा बनने से वहुत चलेगा। सुदशन के राल म कुमार बहुत अच्छा रहेगा। एन० सी० सी० कडट शुक्ला चौधरी का पाट कोइ भी कर सकती है, उसमे कुछ आता जाता नही। कठिन पाट वह सुदशन चौधरी का ही है। अपनी पहली पत्नी जीविन है या नही, उसी का सही पता नहीं।'

अब अनुपमा ने टलीफोन की बात बतायी। शोभना उछल पडी। हाँऊ माऊ खाँऊ। मरद की गध पाऊँ। शाभना असली बात जानन क

लिए बेचन हो उठी। उसने कोई रोमांस समझा था। अनुपमा उससे भी सब बातें साफ साफ बताने में सकोच कर रही थी। बस इतना कहा, 'कोई भलेमानस मुझे फोन करेंगे।'

'हजार बार फोन करने पर भी मुझे आपत्ति नहीं है। यहाँ सारी सुयोग सुविधाएँ तुमको मिलेंगी।' शोभना ने बताया। शोभना की बातों में ऐसी अन्तरगता का स्वर मिला था कि अनुपमा को मुग्ध कर दिया।

सजल नत्रो से अनुपमा ने पूछ ही लिया, 'पिछले जन्म में तू मेरी कौन थी रे? तेरी तरह और कोई तो मुझे प्यार नहीं करता। तेरा ऋण मैं किस तरह चुकाऊँगी?'

पहले तो शोभना थोडा घबरा गयी। बेचारी अनुपमा प्यार की भिखारी बनकर इस मित्रविहीन शहर में अकेली जीवन बिता रही है, यह उसकी समझ में आया है। लेकिन इस वक्त तो रोने की बात नहीं है।

अवसर को हलका करने के लिए शोभना बोली, 'पिछले जनम में मैं तेरी ननद भयानक औरत थी। भावज पर नजर रखने के लिए अब भी दूसरे रूप में आयी हूँ। नहीं तो तुम्हारे टेलीफोन को छिपकर कौन सुनता?'

क्रिग क्रिग कर टेलीफोन बज उठा।

'वशी बाजी वृन्दावन में।' शोभना ने मजाक किया। जरूर तेरा ही टेलीफोन है। इस समय मुझे कौन करेगा?' शोभना ने जोर देकर कहा। 'मैं क्या घर से निकल जाऊँ?'

शोभना के मजाक का अंत नहीं हो रहा था। उधर टेलीफोन बजता ही जा रहा था।

'तू उठा' टेलीफोन उठाने के लिए शोभना कोई उत्सुकता ही न दिखा रही थी।

और अनुपमा को डर लग रहा था कि फोन अगर सचमुच उन जयन्त बाबू का हो तो अनुपमा क्या कहेगी? शोभना की भलमनसी पर अनुपमा को गहरा विश्वास है। तभी वह कमरे से निश्चय ही निकल जायगी। लेकिन उससे मुसीबत तो दूर न होगी।

लाचार होकर अनुपमा को टेलीफोन उठाकर बडी मीठी आवाज में 'हलो' कहना पडा। उधर भारी और मखमल-सी मुलायम आवाज में

शोभना के नंबर की पुनरावृत्ति हुई। अनुपमा बडी नर्वस हो रही थी। वह व्यक्ति अब निश्चय ही कहेगा, अनुपमा, अनुपमा सेनगुप्त क्या आपके यहाँ हैं?' और नाम अगर भूल गया होगा तो मुश्किल होगी। जयंत किस तरह शुरू करेगा, भगवान ही जानें।

व्यक्ति ने अनुपमा का नाम नहीं लिया। उसी मखमल-सी मुलायम आवाज में पूछा, 'कौन, शोभना देवी ? बताइये तो मैं कौन हो सकता हू ?' आपकी मौसीजी आ गयी है ? मौसीजी ने ही आपसे फोन पर बात करने को कहा था।'

अनुपमा की इच्छा हुई कि और भी कुछ देर तक बातें सुने। किंतु शोभना की बात याद करते ही झट से फोन रखकर शोभना को बुलाया। शोभना उस समय कमरे से निकलकर बरामदे मे खडी थी। कमरे मे आकर वह बोली, 'क्या हुआ ? इस बीच मेरी पुकार क्यो ? मैं तो लास्ट राउंड मे भाई भावज के साथ नेगोशियेट करने के मौके पर काम करूँगी। अभी तो मैं जेलखाने का सिपाही हूँ—कैदी के इंटरव्यू के मौके पर ऐसी जगह खडी हूँ कि जहाँ से बातें न सुनी जायें, लेकिन देखा जा सके।'

'वह सब लेक्चर छोडो। उधर देखो कौन तुम्हे बुला रहा है ? ज्यादा देर होने से लाइन काट देगा। तब रोते न बनेगा।'

'मुझे कौन तंग करेगा ?' शोभना ने जाकर टेलीफोन उठाया। और दूसरे ही क्षण उसका चेहरा कैसा फीका पड गया। माउथपीस दबाकर शोभना ने फुसफुसाकर सहेली से कहा, 'सत्यानास हो गया ! वही आदमी है, जो मुझे देखने आया था।'

उतनी बात सुनते ही अनुपमा उछलकर कमरे से निकल आयी। किसी की बात को छिपकर सुनना बहुत गंदी आदत है यह बावली की मा ने छुटपन म ही सिखाया था।

अनुपमा बरामदे म खडी सडक पर जाने वालो को देखने लगी। इस समय इस मुहल्ले की सडक पर वैसी भीड नहीं रहती। लेकिन सडक बिलकुल सुनसान भी न थी। स्कूलो के लडके घर लौट रह थे। स्कूलों की लडकियो का भी एक झुंड कबूतरो की तरह गुटुरगू गुटुरगू करते-करते जा रहा था। वे किस तरह अकारण ही चंचल थीं। अकारण ही वे कैसे

हँस हँस कर एक-दूसरे के ऊपर गिरी पड रही थी। लडकियो की यह वयस ही सुख की होती है। जब व पूरी तौर पर औरत नही बन जाती—औरत बनन की यन्त्रणा क्या होती है जब तक उसका पता न चले। अनुपमा को याद आया कि सुनन्दा दी ठीक ही कहती है। इस दश मे लडके अठावन बरस के पहले रिटायर नही होत। किंतु जो लडकिया नौकरी मे नहीं जाती, उनमे हर एक का रिटायरमट तेईस चौबीस होता है। उसी म जो कुछ हा-हुल्लड खत्म हो जाय। इस सुभाप बोस, सूय सेन के बगाल देश मे बीस पार करते ही बुढिया बात झूठ नही होती।

'ब्याह न करन पर क्या होता है ?' अनुपमा न सुनन्दा दी से पूछा था। हाँ अगर किसी तरह रोजी रोजगार की व्यवस्था हो जाये तो ?'

उसका भी तुम्हारे इस शरीफ कलकत्ता शहर मे कोई रास्ता नही है।' कुढकर जवाब दिया था सुनन्दा दी न। यहाँ के लौडे गला फाडकर जतात है कि वे बबई दिल्ली स आगे हैं। बिलकुल झूठ। वर्किंग गल के हिसाब से अगर अकेले रहना ही पड ता बबई चले जाना वहाँ फिर भी थोडी स्वतत्रता मिल जायगी। लेकिन यहाँ ? माइ लाड ! दा महीन की कोशिश क बाद भी इस कलकत्ता शहर मे मैं एक किराये का घर न पा सकी। सभी मेरी असलियत जानना चाहत हैं।

'क्या जानना चाहते हैं ?' अनुपमा इस मामले म अनाडी थी।

'जानना चाहते है कि इस उम्र की औरत अकेली क्या है ? गार्जियन कहा हैं ? माग म सिंदुर क्यो नही है ?

क्या मुश्किल है ? गाँठ का पैसा लगाकर तुम्हारे मकान का एक फ्लैट लेकर रहना है। उसम तुम्ह इतनी बाता की क्या जरूरत ? लेकिन हमारे लिए कलकत्ते का दरवाजा बद है। हम अग्नि-परीक्षा दनी पडेगी। हमारे आफिस की मिसेज बनर्जी न सलाह दी कि कह दें कि आपके माँ-बाप आकर साथ रहग। मैं किसलिए झठी बातें कहूँ ? ऐंड व्हाई ? मैं छिपाकर तो कुछ करती नही। और एक मकान-मालिक आ !

सुनन्दा दी न अब सिगरेट सुलगायी थी। बहुत से मर्दों का खयाल है कि औरतें सिगरट पीन ही स चरित्रहीन हो जाती हैं। कहा था पूणदास रोड पर अपन घर के नीचे आपको फ्लैट न दे सकूगा। लकिन

दूमरी जगह ऐंग्लो इडियन मुहल्ले म मेरा एक फ्लट खाली होगा। वहा दख सकती हैं। आइये न, किसी दिन बात कर लें। कहकर शरीफ आदमी न डीलक्स होटल मे अपॉयटमेंट करना चाहा। मैं इनासेंटली तयार हो गयी। मुझे कुछ नही मालूम था। उसके बाद मैंन सुना कि गुलामउद्दीन स्टीट का डीलक्स होटल बिलकुल अच्छी जगह नही है। किसी अपरिचित से चाय की दावत स्वीकार करन के लिए वह जगह नही है। वहा लोग और बात के लिए जाते है।'

स्कूटर लौटाकर सुनन्दा दी चली आयी थी। बोली, 'यह तो यहा की हालत है। माग मे कार्पोरेशन के स्लॉटर हाउज की एक रबर स्टैंप न रहने से औरतो का स्वाभाविक जीवन बिलकुल अचल हो जाता है। पति परित्यक्ता, विधवा औरतें भी यहाँ अपक्षाकृत स्वतन्न और निरापद है। किंतु पुरुष गार्जियन-रहित कुमारी या डाइवोर्स्ड औरतो के लिए यह शहर जरा भी अच्छा नही है।'

खिडकी मे से अनुपमा न एक बार कमरे के अदर बातो म लगी शोभना की ओर देखा। बातचीत अभी चल रही थी। कितनी बातें थीं, बाबा रे, बाबा!

अनुपमा फिर सुनन्दा दी की बातें सोच रही थी। उस डीलक्स होटल के प्रसग ने अनुपमा को थोडा सोच म डाल दिया। इन सब मामला का वह बिलकुल न जानती थी। अनुपमा का खयाल था कि समस्या रोजी-रोजगार और पैसो की है। बैंक म पैसे रहन पर कोई भी लडकी होटल मे जाकर आराम से रह सकती है।

नो अदली चास!' कहा था सुनन्दा दी न बिलकुल टॉप होटल म ठहरना खतरे स खाली नही है। दो दिन थी तो तुम्हारे अमरीकी होटल म। कमरे म ऐसे टलीफोन आते हैं कि तबीयत घिन से भर जाती है। अदर से डबल लैंच लगा दन पर भी विश्वास नही। मिसज बनर्जी से कहा गयी तो वे सम्कृत कोटेशन पर चली गयी—हरिणी वैरी अरन माम की, या उसी तरह का कुछ कहा। हरिण को अपना मास ही शत्रु होना है।'

'तो फिर रास्ता क्या है?' अनुपमा ने डरकर सुनन्दा दी से पूछा।

'अब राह निकालने का वक्त आ गया है, अनुपमा। एक उपाय तो है

सब औरतो का एक साथ जाग उठना। जरूरत पडे तो शादी के मामले मे सब एक साथ स्ट्राइक कर दें। जब तक शादी मे यह रुपयो का लेन देन, नौकरानी लाना और मास का भाव-ताव चलेगा, तब तक सुहागरात बद ! लेकिन तुमसे कहे देती हूँ कि उसके लिए कोई तैयार न होगा। सभी रेल-पलकर किसी तरह चलती बस म चढन के लिए परेशान हैं। लेकिन अनुपमा शायद वम म और जगह न होगी। बगाल के हर घर म इतनी बिनब्याही वाली लडकियाँ इसके पहले किसी न नही देखी। किसी किसी पिता के प्राविडेंट फड, कोआपरेटिव लान और माँ के गहना के जोर से निकल जाती हैं। लेकिन एसी कितनी हैं ? उनमे भी असमानता रह ही जाती है। योग्य के साथ योग्य का मेल बहुत कम होता है। जिस देश मे पढना लिखना सीखकर लडकिया आग बढती हैं और डिफीडेंट पुरुष वग आर्थिक सघष म औरो स हारकर क्रमश पिछडता जा रहा है वहाँ ऐसा हाना निश्चित है।' सुनन्दा दी के स्वर म जितनी ही घणा निकली पडती थी, बेचारी अनुपमा का डर उतना ही बढता जा रहा था।

सुनन्दा दी न कहा था मैं अब यह सब साच नही सकती। सोचन की जरूरत भी नही है। तुम्हार दुलार इस कलकत्ता से भाग जान के लिए मैं छटपटा रही हूँ। कल ही मैंन बबई चिट्ठी लिखी है।'

'यहाँ खडी-खडी क्या कर रही हो ? अदर चलो। शोभना कहाँ है ? मौसी अचानक अनुपमा के पीछे आकर खडी हो गयी थी।

शोभना कहाँ है ! शोभना ?' कमरे मे घुसत ही शोभना की मौसी ने शोर मचा दिया।

मौसी शोभना के कमरे मे घुस आयी। अब शाभना न टलीफ़ोन रख दिया। बात खत्म हो गयी थी या मौसी क आन से यह जरूरत आ पडी यह समझ म न आया।

मौसी गुमसमाचार लायी थी। भानी स बातों तरे बाबा कहाँ हैं ? सोचा था कि पहल उन्हू ही बताऊँगी। वह जब अभी तक घर नही लौटे हैं तो तू ही रसगुल्ला खिला। तेरा काम हो गया है। गुड हान वाल घर न हो जब पास मार लिए हैं तो फिर क्या चिन्ता ?'

मौसी न सोचा था कि दबी उत्तेजना से शोभा का चेहरा लाल हो जायेगा, लेकिन कुछ भी न हुआ। शोभना को टेलीफान से पहले ही पता चल गया है इसे मौसी अब भी न समझ सकी।

उलटे मौसी ने मजाक किया,'सूकू, अब बाहरी आदमियो से लबी लबी टेलीफोन की अडडेबाजी बद। बातें करन वाला यो ही आ रहा है! बडा अच्छा लडका है। बाबू के दफ्तर का लडका है न! बहुत दिनो से बाबू देखता आया है। बाबू बता रहा था कि कोई मुकाबला ही नही।'

'हाँ! अच्छी बात है!' मौसी जसे बात भूल ही गयी हा। बोली 'बाबू भी कम शरारती नही है। उससे तुमे फोन करन को कह दिया था। समीरण अगर फोन कर बैठे तो फोन मत छोड देना—जो भी हो कुछ बातें करना। मैंने गोकि बाबू को डाटा था—कहा था, शादी के पहले ज्यादा मिलना जुलना उनकी फँमिली की रीति नही है। लडकिया तो बाद मे तुम्हारे बस के बाहर रहती नहीं—माथे मे सिंदूर चढाकर उसके बाद जितनी चाहे उतनी बातें करो, जहा चाहे ले जाओ कोई आपत्ति नही करेगा।'

अब मौसी ने शोभना को झिडकी दी, 'क्यो रे? थोडा हँस ता? या मौसी के आगे मन की खुशी जाहिर करन मे शम आती है। मेरे चले जाने पर तो कमरा बद कर नाचेगी।'

शोभना कुछ न बोल रही थी। अनुपमा सोच रही थी कि इस समय वह न होती तो अच्छा था। शायद उसकी बात सोचकर ही इस क्षण उल्लास व्यक्त करने मे शोभना को सकोच हो रहा है।

लेकिन मौसी अनुपमा की बात नही भूली थी। बोली, 'तुम बडी भाग्यवान लडकी हो। इसके पहले भी दो बार शोभना को दिखाया था, किंतु कोई फल न हुआ। जब तुम आयी, तभी पेड मे फल लगा।'

वे बातें बाद मे होगी, मौसी,' लगता था कि शोभना अब मौसी को विदा कर अनुपमा को कुछ चन देना चाहती थी। लेकिन मौसी बोली, 'बाद में होने-सा कुछ नही है। उठी बाई तो कटक जाई। इसी महीन मे तुम्हारा ब्याह है। आगे तीन महीन सूखे हैं। भाद्र, आश्विन और कार्तिक मे ब्याह की तारीख नही है।'

नीचे शोभना के चाचा की गाडी की आवाज ज्यो ही सुनायी पडी कि

मरे से शोभना को पुकारा। निश्चय ही पिता के साथ कोई जरूरी बात होगी।

किसी आदमी ने बडे विनय के साथ चिट्ठी का जवाब दिया था। किंतु पात्र की उमर पचास से ऊपर थी। दो टेलीफोन नबर भी दिये थे। आफिस के नबर से अनुपमा बहुत घबरा गयी। भाई के ऑफिस का नबर ही उसमे लिखा था।

चिट्ठी के नीचे नीलाबर दासगुप्त के दस्तखत थे। अनुपमा ने इस दासगुप्त का क़िस्सा भावज से सुना था। बहुत दिन हुए पत्नी की मृत्यु हो गयी थी। लडकी का ब्याह हो गया है। लडका भी ब्याह कर अलग रहता है। बूढे नीलाबर दासगुप्त बीच बीच मे खुद अखबार मे ऑफिस जाकर विज्ञापन दे आते। 'वय प्राप्त पात्री चाहिए, तीस के बीच की। पात्र उच्च पदस्थ कमचारी है।' अपने ही हाथो चिट्ठियाँ अखबार के दफ्तर से ले जाते और आफ़िस मे काम के बीच-बीच मे चिट्ठियाँ पढकर दूध के स्वाद को फटे दूध के पानी से मिटाते।

यह नीलाबर दासगुप्त अब एक कदम और बढ़ाकर खुद लडकियो को पत्राचार के लिए प्रोत्साहित करते हैं, यह अनुपमा को नहीं मालूम था।

अनुपमा नीलाबर का फ़ोटो देख रही है। भलेमानुस भाई के साथ पिकनिक पर गये थे।

अब हताश होकर नीलाबर के घर के नबर पर ही अनुपमा ने फोन किया।

इस तरह का फोन पाकर नीलाबर की आवाज काँप रही थी। अनुपमा ने शर्म छोडकर जानना चाहा कि देखकर पसद होने पर नीलाबर दासगुप्त उसमे इस सावन म ही शादी करने को तैयार हैं या नही ?

नीलाबर पहले तो बोले, 'आपकी ओर से भी तो पसद की बात है न ?

अनुपमा ने निडर होकर यह भी बता दिया कि नीलाबर की पसद ही एकमात्र बात होगी।

नीलाबर समझ गये कि यह लडकी उनके बारे मे बहुत बातें जानती है। अब डरकर दूसरी तरह हो गये। उन्होने मान लिया कि उन्होने पूरी

'ज़रूर याद हैं। तुझे सबसे ज्यादा कौन अच्छा लगा था ?' शोभना ने पूछा।

'सुनन्दा दी,' अनुपमा ने उत्तर देने में कोई दुविधा न की, 'बहुत-सी लड़कियाँ को बहुत बनावटी लगती थीं।'

'यह झूठ बात मत कह,' शोभना ने झिड़का, 'प्रशान्त सेन तुझे अच्छा लगता था न ?'

'प्रशान्त सेन जिसको अच्छा न लगता हो, ऐसी एक भी लड़की तो क्लास में न थी। उसके अच्छा लगने के मायने सिनेमा-स्टार के अच्छा लगने सा था। उस अच्छा लगने के कोई मतलब ही नहीं होते।'

'तू जो भी कह, मुझे प्रशान्त सेन बड़ा अच्छा लगता था। जब सुना कि प्रशान्त कहीं और फँसा है तो बहुत दुख हुआ था। इतने दिनों बाद शोभना के मुँह से यह स्वीकारोक्ति सुनकर अनुपमा आश्चर्य में पड़ गयी।

शोभना का साहस जैसे बढ़ता जा रहा था। ड्राइवर की मौजूदगी की केयर न कर सहसा पूछ बैठी, 'तुझे राधाकान्त याद है ?'

'कौन राधाकान्त ? जो फुटबाल खेलता था ? उसने तो हमारे साथ पास नहीं किया। पहले बरस के बाद ही पता नहीं किसलिए उसे कॉलेज छोड़कर चले जाना पड़ा।

'एक साल पढ़ा तो था। सहपाठी होने के एक साथ पास करना हो, ऐसी बात कहाँ लिखी है ?' शोभना ने डाँटा।

अनुपमा को वह लड़का याद आया। अच्छा हैंडसम था। लेकिन बहुत काशस। छाती के कई बटन जैसे जानकर ही खोले रहता। अंदर सैंडो बनियान दिखायी देती। शोभना ने एक बार स्वयं ही अनुपमा को दिखाया था।

लड़का कुछ असभ्य ढंग का था। एक बार कॉलेज की छुट्टी के बाद अनुपमा के पीछे लगा था। लेकिन इतने दिनों बाद वह सब सोचने से क्या फायदा ?

'क्या रे, इतने दिनों बाद किसी की बात याद आने पर कलेजा नहीं धड़कता ?' शोभना आज बहुत मुहफट हो गयी थी।

अनुपमा चुप ही रही। माँ का सख्त कहना था, 'कोएजूकेशन के कालेज

तौर पर मन अभी तक पक्का नही किया है ।

'तो फिर यो ही विज्ञापन देकर दूसरो को क्यो तग करते है ?'

नीलाबर शायद एसी परिस्थिति मे कभी न पडे थे। उन्होने माफी *मांगी और बेशम की तरह स्वीकार किया कि बीच-बीच मे विज्ञापन देकर* वह सिफ देखते है कि शादी के बाजार मे अभी भी उनकी कीमत है या नही ?

अनुपमा ने अब टेलीफोन रख दिया। भीगे कपडा की सी एक बेचैनी उसके सारे शरीर पर छायी हुई थी। मन के अदर से कोई चीखकर जानना चाहता था, अनुपमा सेनगुप्त, तुम अब भी जाग रही हो ? तुम और कितना नीचे उतरोगी ?'

इस बीच *शोभना लौट आयी थी। अनुपमा को लग रहा था कि उसकी* मौजूदगी इस घर के आनद उत्सव मे भी बाधा डाल रही है। शोभना तुम्हारे बीच एक ऐसा व्यक्ति था जिसके निकट आकर कुछ देर के लिए शरीर को शात किया जा सकता था। लेकिन अब वह भी गया। कुछ दिना के बाद किसी के निकट मेरी तरह की जगह अनुपमा सेनगुप्त को न रहगी।

लेकिन शोभना अभी भी अनुपमा को न भूली थी। बोली, कोई बात नही सुनना चाहती। कल फस्ट चास पर ही आना होगा। तेरे बिना मेरा किसी तरह न चलेगा।'

इसके बाद शोभना न गाडी पर बठकर अनुपमा को 21/2 तक चन्द्र सेकेंड बाईलेन पहुँचा दिया। गाडी पर बैठ अनुपमा और शोभना दानो ही आन वाले वियोग की छाया से दुखी हो गयी। अनुपमा बोली था, ओह अभी उस दिन ही तो तेरे साथ मेरी पहली भेंट हुई थी—कत्थई रग का फ्राक पहनकर तू जगमोहन गर्ल्स स्कूल म आयी थी। क्लास म आकर मेरे पास बठी थी।'

'सचमुच वक्त कैसे बीत जाता है ! लगता है कि कल तेरे बाबा स कहकर जबरदस्ती हम कैथलिक चच कॉलेज म भरती हुए थे।

'कॉलेज के दिन सुदर सपन से बीत गये। अनुपमा न पूछा 'तुझे कॉलेज की सब बातें याद है ?'

'ज़रूर याद हैं। तुझे सबसे ज्यादा कौन अच्छा लगा था ?' शोभना ने पूछा।

'सुनन्दा दी,' अनुपमा ने उत्तर देने म कोई दुविधा न की, 'बहुत सी लडकिया को बहुत बनावटी लगती थीं।'

'यह झूठ बात मत कह' शोभना ने झिडका, 'प्रशान्त सेन तुझे अच्छा लगता था न ?

'प्रशान्त सेन जिसको अच्छा न लगता हो, ऐसी एक भी लडकी तो क्लास म न थी। उसके अच्छा लगने के मायन सिनेमा-स्टार के अच्छा लगने-सा था। उस अच्छा लगने के कोई मतलब ही नही होते।'

'तू जो भी कह मुझे प्रशान्त सेन बडा अच्छा लगता था। जब सुना कि प्रशान्त कही और फँसा है तो बहुत दुख हुआ था।' इतने दिनो बाद शोभना के मुह से यह स्वीकारोक्ति सुनकर अनुपमा आश्चय मे पड गयी।

शोभना का साहस जैसे बढता जा रहा था। ड्राइवर की मौजूदगी की केयर न कर सहसा पूछ बैठी, 'तुझे राधाकान्त याद है ?'

'कौन राधाकान्त ? जो फुटबाल खेलता था ? उसने तो हमारे साथ पास नही किया। पहले बरस के बाद ही पता नही किसलिए उसे कॉलेज छोडकर चले जाना पडा।'

'एक साल पढा तो था। सहपाठी होने के एक साथ पास करना हो, एसी बात कहा लिखी है ?' शोभना ने डाँटा।

अनुपमा को वह लडका याद आया। अच्छा हैडसम था। लेकिन बहुत काशम। छाती के कई बटन जैसे जानकर ही खोले रहता। अदर सैंडो बनियान दिखायी देती। शोभना ने एक बार स्वय ही अनुपमा को दिखाया था।

लडका कुछ असभ्य ढँग का था। एक बार कॉलेज की छुट्टी के बाद अनुपमा के पीछे लगा था। लेकिन इतने दिना बाद वह सब सोचन से क्या फायदा ?

क्या रे, इतन दिनो बाद किसी की बात याद आने पर कलेजा नही धडकता ?' शोभना आज बहुत मुहफट हो गयी थी।

अनुपमा चुप ही रही। माँ का सख्त कहना था, 'कोएजूकेशन के कालेज

तौर पर मन अभी तक पक्का नही किया है।

'तो फिर यो ही विज्ञापन देकर दूसरो को क्यो तग करते हैं ?'

नीतावर शायद ऐसी परिस्थिति मे कभी न पडे थे। उन्होने माफी मागी और बेशम की तरह स्वीकार किया कि बीच-बीच म विज्ञापन देकर वह सिफ देखते हैं कि शादी के बाजार मे अभी भी उनकी कीमत है या नही ?

अनुपमा ने अब टेलीफोन रख दिया। भीगे कपडा की सी एक बेचनी उसके सारे शरीर पर छायी हुई थी। मन के अदर स कोई चीखकर जानना चाहता था, 'अनुपमा सेनगुप्त, तुम अब भी जाग रही हो ? तुम और कितना नीचे उतरोगी ?

इस बीच शोभना लौट आयी थी। अनुपमा को लग रहा था कि उसकी मौजूदगी इस घर के आनद उत्सव मे भी बाधा डाल रही है। शोभना तुम्हारे बीच एक ऐसा व्यक्ति था जिसके निकट आकर कुछ देर के लिए शरीर को शात किया जा सकता था। लेकिन अब वह भी गया। कुछ दिनो के बाद किसी के निकट मेरी तरह की जगह अनुपमा सेनगुप्त को न रहगी।

लेकिन शोभना अभी भी अनुपमा को न भूली थी। बोली 'कोई बात नही सुनना चाहती। कल फस्ट चास पर ही आना होगा। तेरे बिना मेरा किसी तरह न चलेगा।'

इसके बाद शोभना न गाडी पर बैठकर अनुपमा को 21/2 तक चंर सेकेंड बाईलेन पहुँचा दिया। गाडी पर बठ अनुपमा और शोभना दोनो ही आन वाले वियोग की छाया से दुखी हो गयी। अनुपमा बोली थी, 'ओह अभी उस दिन ही तो तेरे साथ मेरी पहली भेंट हुई थी—कत्थई रग का फ्राक पहनकर तू जगमोहन गर्ल्स स्कूल म आयी थी। क्लास मे आकर मेरे पास बठी थी।

'सचमुच वक्त कसे बीत जाता है। लगता है कि कल तेरे बाबा से कहकर जबरदस्ती हम कथलिक चच कॉलेज म भरती हुए थे।'

कालज के दिन सुदर सपन से बीत गये। अनुपमा ने पूछा 'तुम्हें कॉलेज की सब बातें याद हैं ?

'जरूर याद हैं। तुझे सबसे ज्यादा कौन अच्छा लगा था ?' शोभना ने पूछा।

'सुनन्दा दी,' अनुपमा ने उत्तर देने मे कोई दुविधा न की, 'बहुत सी लडकियो को बहुत बनावटी लगती थी।'

'यह झूठ बात मत कह' शोभना ने झिडका, 'प्रशान्त सेन तुझे अच्छा लगता था न ?'

'प्रशान्त सेन जिसको अच्छा न लगता हो, ऐसी एक भी लडकी तो क्लास म न थी। उसके अच्छा लगने के मायने सिनेमा-स्टार के अच्छा लगने-सा था। उस अच्छा लगने के कोई मतलब ही नही होते।'

'तू जो भी कह, मुझे प्रशान्त सेन बडा अच्छा लगता था। जब सुना कि प्रशान्त कही और फँसा है तो बहुत दुख हुआ था।' इतने दिनो बाद शोभना के मुह से यह स्वीकारोक्ति सुनकर अनुपमा आश्चय मे पड गयी।

शोभना का साहस जैसे बढता जा रहा था। ड्राइवर की मौजूदगी को केयर न कर सहसा पूछ बैठी, 'तुझे राधाकान्त याद है ?'

'कौन राधाकान्त ? जो फुटबाल खेलता था ? उसने तो हमारे साथ पास नही किया। पहले बरस के बाद ही पता नही किसलिए उसे कॉलेज छोडकर चले जाना पडा।'

'एक साल पढा तो था। सहपाठी होने के एक साथ पास करना हो, ऐसी बात कहाँ लिखी है ?' शोभना ने डाँटा।

अनुपमा को वह लडका याद आया। अच्छा हैंडसम था। लेकिन बहुत बाशम। छाती के कई बटन जैसे जानकर ही खोले रहता। अदर सैंडो बनियान दिखायी दती। शोभना ने एक बार स्वय ही अनुपमा को दिखाया था।

लडका कुछ असभ्य ढँग का था। एक बार कॉलेज की छुट्टी के बाद अनुपमा के पीछे लगा था। लेकिन इतने दिना बाद वह सब सोचन से क्या फायदा ?

'क्या र, इतने दिना बाद किसी की बात याद आने पर कलेजा नही धडकता ?' शाभना आज बहुत मुहफट हो गयी थी।

अनुपमा चुप ही रही। माँ का सख्त कहना था, कोएजूकेशन के कालेज

मे पढ रही हो— किसी से बात न करना। अगर सुना कि कुछ किया है तो मैं जहर खा लूगी।

शोभना बोली, 'तू मेरे पास रह। मुझे बहुत डर लग रहा है।'

'डरने को क्या है बाबा ? शोभना, दुनिया मे तेरा ही पहले-पहल ब्याह नही हो रहा है'। अनुपमा बोली थी। लेकिन फिर भी वह डर का असली कारण न समझ सकी।

अनुपमा सामने कोई आशा का प्रकाश नही देख पा रही थी। जब तक शोभना के यहाँ रहा जाये, मौसी और शोभना के साथ गडिया हाट, न्यू मार्केट, बहू बाजार घूमा जाये, तब तक खराब नही लगता।

मौसी बहुत खुश थी। मीठी हँसी हँसकर बोली, 'इसे ही कहते है उठ छोरी, तेरा ब्याह है। कहाँ थी तू और कहाँ वह समीरण ! मैंने मरठ से बदली होकर आने पर घटक का काम किया। अब कहा ब्याह का काड, वर का कुर्ता, लडकी का जोडा, गहने, दान की सामग्री—सारे कुछ की जिम्मेदारी मेरी गरदन पर बहनोई ने डाल दी। कुछ कहने को भी नही। गभीर आदमी ठहरे। उस दिन अचानक साली से कह बैठे कि जिसे यह सारा झझट सँभालने की बात थी, वह जब चली गयी तो उसकी बहन को ही जिम्मेदारी लेना होगी।'

सारी बातो मे शोभना अनुपमा को छोडना नही चाहती। ऐसे करुण भाव से कहती, 'और कितने दिन हैं। उसके बाद तो तुमसे कुछ कह ही न सकूगी।'

दूसरा के ब्याह का बाजार होने पर भी अनुपमा को बुरा न लगता था। वक्त अच्छा बीत जाता था। घर वापस आने पर मुसीबत। कसी अजीब दबी-दबी-सी गभीरता रहती। सुलोचना भी आजकल अपने मन की बात छिपाने की कोशिश न करती।

माँ ने शायद भाई को कोई सख्त चिट्ठी लिखी थी। अनुपमा को लिखी माँ की चिट्ठी से कुछ समझ मे न आता था। लगता कि लडकी की भलाई के सोच मे ही उनका समय बीत जाता है। लिखा था, ब्याह का ठीक न

हाने तक यहा आने की जरूरत नही है।

मा की चिटठी का रिएक्शन अनुपमा न रात को समझा। सुलोचना पाव के नीचे दबी नागिन की तरह फुफकार रही थी। गहरी रात को बिस्तर पर लेटे लेटे सुलोचना पति से जानना चाहती थी, 'उन्होने तुमको इस तरह की चिटठी लिखी क्यो ?'

'ओह सुलोचना, वह मेरी मा है' भाई पत्नी को शात करने मे लग गये।

'शादी करना क्या तुम्हारे हाथ मे है ? इतनी उमर हो गयी, यह मामूली बात क्यो नही समझते ?'

'माँ का मन है न। नासमझ मत बनो,' दादा अब भी समझाने की कोशिश कर रहे थे।

'जरूर यहाँ से उस तरह की रिपोट जाती हैं। लाइनें तुम्हारे नाम आन पर भी मेरे लिए ही लिखी रहती हैं।' सुलोचना फुफकार रही थी।

और अनुपमा को लग रहा था कि एक बरफ की सिल पर उसे लिटा दिया गया हो ! उसम हिलने-डुलने की भी सामर्थ्य न थी।

अतिम बात अनुपमा भूल नही पा रही थी। 'काले रग की लडकी की माँ की एसी हिम्मत कैसे है ?'

काले रग की लडकी जब दूसरे दिन बिस्तर छोडकर उठी तो आखें लाल जवाकुसुम की तरह हो रही थी। 21/2 तकलिकार सेकेंड वाईनेन मे उस बातचीत के चेम्बर मे एक पल नीद नही मिली।

दादा के ऑफिस जाने के थोडे समय बाद ही बहाना कर अनुपमा घर से निकल पडी। फोटो स्टूडियो मे एक बडल और फोटा का आडर देने की बात थी। लेकिन आज अनुपमा की वसी तबीयत न थी।

अनुपमा ने हैंडबैग म एक फोटो रख लिया था। अनुपमा ने कुछ सोच-कर फोटो के पीछे नाम और पता भी लिख दिया था। आज उसकी तबीयत अजीब सी बेचैन हो रही थी। मन विद्रोह मे फूट पडना चाह रहा था—लेकिन देह पर जसे उसका कोई वस ही न हो।

सुनन्दा दी की दी हुई नौकरी की भी आज आखिरी रात थी। सुनन्दा दी बाली, 'सॉरी, अनुपमा। तबीयत तो थी कि और भी कुछ दिनो तुमको

प्रोवाइड करती। लेकिन हुआ नहीं। अगले महीने एक नया शम्पू का टस्ट-मार्केटिंग का काम आ सकता है। ड्रीम शैम्पू—इस शैम्पू के स्वप्नजाल में सुसज्जित होकर आप अपने पति को मोहित करें। तब शायद तुम्हारी तरह की कुछ लड़कियों को प्रोवाइड कर सकूँगी।'

'लड़कियो, अपने पैरों पर खड़ी हो। आदमियों का मनोरंजन करने के लिए ही आपका जन्म नहीं हुआ है—विज्ञापन में इस तरह की बात कहने से कोई भी चीज बेची नहीं जा सकती।

अनुपमा की बात सुनकर सुनन्दा दी हँसने लगी। 'एक शीशी भी न बिकेगी। जिन चीजों से मर्द खुश न हों उन चीजों के पीछे भागने की किसी की हिम्मत नहीं है, अनुपमा। यह हमारा देश—हमारा बंगाल!' दुख के साथ सुनन्दा दी बोलीं।

सुनन्दा दी आज ही बंबई वापस जा रही हैं। बोलीं, यहाँ से निकलकर जान बचे। स्वतंत्रता के बाद इन कुछ बरसों में बंगाली लड़कियाँ और भी पिछड़ी जा रही है। जो मान भी नहीं सकती और टूटना भी नहीं चाहती, उनसे कभी भी दुनिया का उपकार नहीं होता, अनुपमा। अपने चारों ओर थूक फैलाकर रेशम के कीड़े की तरह यह खुद ही अपने को कैदी बनाये हुए हैं।

कुछ दिनों के रुपये गिन, बैग में रखकर अनुपमा निश्चय नहीं कर पा रही थी कि इस वक्त कहाँ जाये, क्या करे? शोभना के पास भी इस वक्त जाना न होगा। अनूढा के भात का निमंत्रण खाने के लिए वह मौसी के घर गयी थी। और भी बाद में लौटेगी।

इस बड़े भारी कलकत्ता शहर में थोड़ी शांति के साथ कहीं अकेले वक्त बिताने लायक कोई जगह नहीं है। पीछे पागल सियार लग जाते हैं। लेक के किनारे लड़के अकेले जा सकते हैं, लेकिन लड़कियों को जोड़ा जोड़ा जाना पड़ता।

विक्टोरिया मेमोरियल के गेट के अन्दर कुछ शांति मिलेगी, यह अनुपमा ने सोचा था। लेकिन उसकी भी कोई राह नहीं। निर्जन में अकेली लड़की देखते ही इस शहर में क्या हो जाता था! अकेले घूमने फिरने का यह

प्रिविलेज एकमात्र वेश्याओ और मर्दों को रहता है। लडकियो को वैसी इच्छा प्रगट करन की कोई स्वतत्रता अभी भी इस सुसभ्य महानगरी मे स्वीकृत नही हुई है।

अनुपमा को अकेली देखकर एक तोदियल आदमी लज्जा शम छोडकर विक्टोरिया मेमोरियल के अदर इस तरह पीछे लगा कि अनुपमा को प्राय भागना ही पडा। दक्खिन की ओर के फाटक के पास एक हिदुस्तानी मूगफली वाले न अनुपमा की यह हालत देखी। उसके बाद डाट लगायी, 'यहा कभी अकेले न आना। साथ मे अपना आदमी न रहने पर यहा और कुछ सदेह होता है।'

और इसका नाम है कलकत्ता शहर ! सभ्यता, सस्कृति, शिक्षा, साहित्य और सुरुचि का प्रत्यकेंद्र कलकत्ता ! उखडी तबीयत लेकर अनुपमा लौटकर शोभना के घर आयी।

'कहा थी भाई ?' शोभना ने डाट लगायी। 'उस आदमी न मुझे फोन किया था। मैंने थोडी देर बाद फिर ट्राई करने को कह दिया है।'

अनुपमा सोच नहीं सकती कि वह फिर फोन करेगा। लेकिन कुछ देर बाद उसन सचमुच फोन किया। अनुपमा ने कातर भाव से जानना चाहा कि आप कुछ निश्चय करके बोल रहे हैं ? वह बोला, 'नही।' तब करुण भाव से अनुपमा न एक बार भेंट करने की अनुमति मांगी। जहां तबीयत हो। लेकिन ज्यादा भीड भाड न होना अच्छा है।

अनुपमा न एक दिन भी ठीक कर लिया। स्थान भी निश्चित हो गया —मेट्रो सिनमा के सामने। कलकत्ते मे भीड मे ही एकमात्र निरापद निजनता ढूढी जा सकती है। जगह शरीफ आदमी ने खुद ही सजेस्ट की थी। तारीख रटते-रटते ही भले आदमी ने उधर से टेलीफोन छाड दिया। इस बीच शोभना कमरे मे आ गयी। और शोभना को देखते ही अनुपमा को याद आया कि उसी दिन शोभना का बहू भात है।

शोभना का बहू भात है ता अनुपमा को क्या ? शादी की रात तक ही तो लडकी की सहेलियो का अधिकार है। उसके बाद तो वे फिर ढूढे न मिलेंगी। लेकिन शोभना न कहा था, 'बावली तुझे मेरे बहू भात मे आना पडेगा। मुझे बहुत डर लग रहा है। बता तू आयगी ? मुझसे वादा कर।

आज शाम को शोभना का बहू-भात है। कल रात सावन की जोरों की वर्षा आ गयी थी। ब्याह के दिन वर्षा नहीं हुई, यही खैरियत थी। मौसी को विश्वास था कि वर्षा न होगी, क्योंकि वर-कन्या दोनों में कोई भी तो बादुल नहीं था। बरसात में उनका जन्म नहीं हुआ था।

ब्याह में बहुत शोर शराबा नहीं हुआ। शोभना ने ही नहीं करने दिया, गोकि मौसी की बड़ी तबीयत थी कि शहनाई और रोशनी हो।

शोभना का दूल्हा बड़ा सुंदर बना था। देखने में भी हैंडसम था। चेहरे पर हल्की मुसकराहट भी थी। मँडवे के नीचे जाने के पहले शोभना ने फिर भी अनुपमा से रिपोर्ट मांगी थी। 'हाँ रे, तुझे कैसा लग रहा है? कैसा आदमी होगा?'

अब इन सारे सवालों के उठाने के कोई मतलब ही नहीं थे। फिर भी अनुपमा ने कहा था, 'लगता है कि बहुत मॉडर्न होगा। मेड फॉर ईच अदर!'

इसके बाद बहुत कुछ हो गया। कुछ घंटों में अनुपमा के जीवन में प्रचंड तूफान आ गया। कल रात कलकत्ते के आकाश के फटने के बाद जब प्रचंड वृष्टि शुरू हुई थी तो अनुपमा के जीवन ने भी एक नये संदेह के झूले में झूलना शुरू किया।

बहुत सवेरे आज अनुपमा क्या कर बैठी, कुछ ठीक नहीं। अनुपमा ने देखा कि नींद की दवा खाकर भाई भावज अभी तक सो रहे हैं।

इस बड़े सवेरे अनुपमा भूल ही गयी थी कि आज शोभना की फूलशय्या थी। लेकिन ऐसे समय शोभना की गाड़ी लेकर ड्राइवर आ पहुँचा। शोभना ने चिट्ठी भेजी थी, 'भाई अनुपमा, तेरी मुझे बड़ी जरूरत है। चिट्ठी मिलते ही चली आना।'

अनुपमा का अपना शरीर ही इस समय फूल रहा था। अनुपमा ने निश्चय किया कि आज वह अपना कोई इंतजाम करेगी ही। आज इस तेईस सावन को अनुपमा सेनगुप्त डर के मारे संकुचित होकर अपने को छिपाके न रखकर कुछ करेगी।

अनुपमा सेनगुप्त, तुम तो अब प्राइवेट गाड़ी में चुपचाप बैठी हो। कहीं जरूरत हो, इसलिए तुमने हैंडबैग में एक अच्छी साड़ी और ब्लाउज और

शृंगार की सामग्री ले ली है। भामिनी से कह दिया है, कब लौटेगी कुछ ठीक नहीं है। अब तो सडक की भीड मे, बस-ट्राम मे धक्के खान का डर नहीं है। तुम गोपनीय बात कह ही डालो न।

लेकिन इस समय अनुपमा सहेली की जरूरी चिटठी पाकर उसकी नयी ससुराल की ओर भागी है। कल रात के बाद वाले दिन ऐसे वक्त सहेली को बुला भेजने की बात अनुपमा न कभी न सुनी थी। अभी बहुत सवेरा था। फिर एक बार बरसात हुई। लेकिन अनुपमा के मन म भी ऐसी जोरो की बरसात हुई थी कि बाहर की वर्षा उसकी नजर किसी तरह अपनी ओर न खीच सकी।

अनुपमा की आँखो से एक बूद पानी निकल पडा। बाहर इतनी वर्षा थी और अनुपमा की आखो मे मात्र एक बूद पानी !

कल शाम के थोडे बाद ही सुलोचना को फिट आया था। हाथ पैरो की मुडकर भयानक हालत थी। अनुपमा हाथ-पाव दबाने जा रही थी। लेकिन सुलोचना ने ठोकर मार दी थी। उसे उस वक्त होश न था। इस हालत मे भी तीव्र यत्रणा से सुलोचना का चेहरा नीला पड गया था। आखें मानो कोटर से निकली आ रही थीं। पागलो की तरह उठकर बैठने की कोशिश करने मे सुलोचना ने पर अनुपमा की ओर मारा था। कहा था, 'उसे निकाल दो निकाल दो। वह हमारे कमरे मे क्या रहे ?'

भाई को बहुत शरम आ रही थी। बीमार पत्नी को दबाकर पकडते-पकडते कहा था, 'तू कुछ खयाल न कर, बावली। बीमार लोग विकार के नशे में ।'

बीमार ! लेकिन विकार के नशे मे मन म बहुत दिनो से दबाकर रखी हुई सच्ची बात भावज के मुह से निकल रही है। 'अपने कमरे म मैं अकेले लेटूगी और कोई न रहेगा। भाई इस समय विकारग्रस्त सुलोचना का मुह बद कर रखने की कोशिश कर रहे थे।

दादा कातर भाव से कह रहे थे, 'यह पहली बार है ! इस तरह तो बीमार पहले कभी न हुई थी।'

यह पहली बार है, किन्तु अतिम बार नही। इस एक कमरे म अपनी बहन को महीनो आश्रय देने के पहले तुम्हे सोच लेना उचित था दादा।

अनुपमा न यह बात मन ही मन कही। इस वक्त वह दादा के कष्ट का बोझ और बढाना नहीं चाह रही थी।

इस बीच ऊपर की घरवाली और भामिनी दरवाजे के पास आ गयी थी। भाई न करुण भाव स कहा, आप लोग जाइये। एसी कोई बात नहा है। अभी ठीक हो जायगी।

अनुपमा एक दवे कपन का अनुभव कर रही थी। इससे भी बडी घटना कुछ दर पहले हो चुकी थी। मलेरिया क रोगी की तर
कापते अनुपमा न स्नान गृह मे जाकर रोशनी ज

कपडा हटाकर छाती के पास उस
सावधानी स फिर देखा। काला, काला
अवना करत हो। काली लडकी का
नही करते—कहते हो कि फिगर तो दो
रग हमशा के लिए है। देखो, काली
शुरु किया है! एक रुपये के बराबर
तरह सफेद होना शुरू किया है।
तुम्हारे बदन म श्वेती निकल आयी है
थी, अब तो बात ही नहीं। आँचल और
पर तुम्ह छुटकारा नहीं है, 21/2
ले आन मे ससुराल वालो को माथ

कमा आश्चय है! अनुपमा अब
इस्पात की तरह कसी कठोर हो गयी है

धीरे धीरे कम हो गयी। अनुपमा अपना माग अब जस अधिक स्पष्ट रूप से देख रही है। कौन कहता है कि मानव की मुक्ति का माग खुला नही है ?

तेईस श्रावण। आहा, अच्छा दिन है। बाईस श्रावण क ठीक बाद वाला दिन। उस बाईस को मनुष्यो म कवि ने अतिम बार की तरह अपना विस्मय प्रगट किया तुम्हारी सृष्टि का पथ विचित्र छलना प्रकाशित करता है हे छलनामयी !'

इस सवेरे को शोभना की चिट्ठी सब गडबडाये दे रही है। किंतु अनुपमा शोभना को बहुत चाहती है। उसकी पुकार का जवाब न द, ऐसा वह नही कर सकती।

भवानीपुर से जादवपुर ज्यादा दूर नही है। ब्याह के दूसरे दिन शखध्वनि और उलू[1] के बीच शोभना जादवपुर मे ससुराल आ गयी है। नववधू के नवीन जीवन मे आरभ से ही प्रचड विस्फोट होता है। कस सध्या तक शोभना ने आत्मविश्वास खोया न था। मुँह बद कर उसन अकेले अकेले सब सहा। ब्याह के बाद का दिन कालरात्रि होती है—नववधू पति का मुह नही देखती। किंतु कालरात्रि एक दूसरा भयकर डर लिये शोभना के आगे आ पहुँची।

इस सकट के क्षण शोभना किसे अपन पास बुलाये, किससे सलाह करे, वह कुछ भी सोच नही पा रही थी। पहले नव पति की बात ही शोभना को याद आयी। किंतु नही, यह तो असभव है। उसी के कारण तो सबसे अधिक विपत्ति है। शोभना अभी वह बात सोच नही सकती।

शोभना को पिता की बात याद आयी। रोती रोती हालत म शोभना ने एक बार यह भी दिया था, 'मैं बाबा के पास जाना चाहती हूँ।'

ससुराल मे किसी ने इस बात को महत्व नही दिया। समीरण की माँ ने कहा, 'हाय ! बाप के लिए मन कसा कर रहा है। बाप के पास जाने की इच्छा तो होगी ही। कोई चिंता नही, बेटी। बाबा कल ही तो आयेंगे।

[1] उलू— शुभकार्यों मे स्त्रियाँ मुँह स यह शब्द निकालती हैं।

अनुपमा न यह बात मन ही मन कही। इस वक्त वह दादा के कष्ट का बाझ और बढाना नहीं चाह रही थी।

इस बीच ऊपर की घरवाली और भामिनी दरवाजे के पास आ गयी थी। भाई ने करुण भाव से कहा, 'आप लोग जाइये। एसी कोई बात नहीं है। अभी ठीक हो जायगी।

अनुपमा एक दबे कपन का अनुभव कर रही थी। इससे भी बडी घटना कुछ देर पहले हा चुकी थी। मलेरिया के रोगी की तरह जोरो स कांपते कापते अनुपमा न स्नान गह मे जाकर रोशनी जला दी थी।

कपडा हटाकर छाती के पास उस गोपनीय स्थान को अनुपमा न बडी सावधानी स फिर देखा। काला, काला कहकर शादी के बाजार म तुम अवना करते हो। काली लडकी का फिगर अच्छा होने पर भी तुम कद्र नहीं करते—कहते हो कि फिगर तो दो दिन का है आज है कल नहा, रग हमेशा के लिए है। देखो, काली लडकिया न किस तरह सफेद बनना शुरू किया है। एक रुपये के बराबर हिस्से न किस तरह मेम लोगा की तरह सफेद हाना शुरू किया है। अनुपमा सेनगुप्त, तुम्हारा अन्त है। तुम्हारे बदन म श्वती निकल आयी है। योही तुम्हारी शादी नहीं हो रही थी, अब ता बात ही नहीं। आँचल और ब्लाउज के नीचे छिपाकर कुछ करन पर तुम्ह छुटकारा नहीं है, 21/2 तर्कालिकार सेकेंड बाईलेन मे लौटा कर ले आन म ससुराल वालो को मात्र एक सप्ताह लगेगा।

कैसा आश्चय है। अनुपमा अब काप नहीं रही है। अनुपमा सेनगुप्त इस्पात की तरह कैसी कठोर हो गयी है।

सुलोचना को दवा दकर सुला दिया गया। दादा अभी तक सहज नहीं हा पा रह थे। दादा बोले बावली तू कुछ खयाल न करना। अब तेरा कुछ जरूर हो जायगा वह लडका जो तुझे उस दिन दख गया, सुना है कि उन लोगा न अभी तक फाइनल नहीं किया है। दो-तीन चुनी हुई फोटो म तेरी फोटो भी है अदर ही-अदर पता चला है।

एक अद्भुत अनुभूति म कुछ समय बीत गया। उसके बाद उत्तेजना

धीरे धीरे कम हो गयी। अनुपमा अपना माग अत्र जैसे अधिक स्पष्ट रू
देख रही है। कौन कहता है कि मानव की मुक्ति का माग खुला नही है
तेईस श्रावण। आहा, अच्छा दिन है। बाईस श्रावण के ठीक बाद व
दिन। उस बाईस को मनुष्या के कवि न अतिम बार की तरह अ
विस्मय प्रगट किया 'तुम्हारी सृष्टि का पथ विचित्र छलना प्रका
करता है हे छलनामयी!'

इस सवेरे को शोभना की चिट्ठी सब गडबडाय दे रही है। ि
अनुपमा शोभना को बहुत चाहती है। उसकी पुकार का जवाब न दे ऐ
वह नही कर सकती।

भवानीपुर से जादवपुर ज्यादा दूर नही है। ब्याह के दूसरे दिन शखध्व
और उलू[1] के बीच शोभना जादवपुर मे ससुराल आ गयी है। नववधू
नवीन जीवन म आरभ से ही प्रचड विस्फोट होता है। कल सध्या त
शोभना ने आत्मविश्वास खाया न था। मुह बद कर उसन अकेले अकेले स
सहा। ब्याह के बाद का दिन कालरात्रि होती है—नववधू पति का
नही देखती। किंतु कालरात्रि एक दूसरा भयकर डर लिये शोभना के अ
आ पहुँची।

इस सकट के क्षण शोभना किसे अपन पास बुलाये, किससे सलाह क
वह कुछ भी सोच नही पा रही थी। पहले नय पति की बात ही शोभ
को याद आयी। किंतु नही, वह तो असभव है। उसी के कारण तो स
अधिक विपत्ति है। शोभना अभी वह बात सोच नही सकती।

शोभना को पिता की बात याद आयी। रोती रोती हालत मे शोभ
ने एक बार कह भी दिया था, मैं बाबा के पास जाना चाहती हूँ।'

ससुराल मे किसी न इस बात को महत्व नही दिया। समीरण की
ने कहा, 'हाय! बाप के लिए मन कैसा कर रहा है। बाप के पास जाने
इच्छा तो होगी ही। कोई चिंता नही, बेटी। बाबा कल ही तो आयें

1 उलू— शुभकार्यों मे स्त्रियाँ मह स यह शब्द निकालती हैं।

फूलशैया की सध्या को ही मुलाकात हो जायगी।'

शोभना का इस क्षण एक और चेहरा याद आया। बाप से भेंट करन पर कोई फायदा नही है। बाबा से ये बातें वह साफ-साफ कैसे कहेगी ?

किसी तरह रात काटकर शोभना ने बडे तडके पिता के ड्राइवर को बुला भेजा और अनुपमा को जरूरी चिटठी भेजी।

अनुपमा भी सवेरे से ही आ पहुँची और नयी ससुराल के कायदे-कानून मानकर एक कमरे का दरवाजा बद कर दबी आवाज म शोभना से बातचीत कर रही है।

अनुपमा उस मकान म केवल पद्रह मिनट रही। शोभना ने रोते रोते उसे और भी कुछ देर पास रखना चाहा था। किंतु अनुपमा उस समय एक क्षण भी नष्ट करना नही चाह रही थी। घडी की ओर देखकर वह बोली, 'समय नही है। अभी बहुत काम हैं, शोभना ! तू चिंता मत कर।'

अनुपमा सडक पर निकल आयी। वह अकेली चल रही थी। और मन-ही मन कह रही थी—शोभना, तूने यह क्या किया ? शोभना, तूने सबको मुसीबत मे डाल दिया !'

शोभना कुछ देर पहले फूट-फूटकर रो रही थी। अनुपमा के हाथ पकडकर वह बाली थी, 'मेरा क्या होगा रे ? मुझे अपने लिए ऐसी चिंता नही है—मेरा जो भी हो, सो हो। लेकिन मुझे चिता है इस आदमी की।'

आदमी माने समीरण, जो अभी भी हाथो मे पीले रग का धागा बाँधकर छत का छप्पर बाँधने की देखभाल कर रहा था और जिसने अनुपमा से कहा था कि मुह मीठा किय बिना न जाइयेगा। सहेली से बातें कीजिये। मैं जरा ऊपर घूम आऊँ।

शोभना रोते रोते बोली, उसे जेल ले जायँगे। हाँ उसका अपराध क्या है ? फूलशया के दिन मुझे न पकडकर उसका अपमान क्यो करोगे ?'

'तूने यह क्या किया, शोभना ?' इसके लिए अनुपमा को खुद ही बैठकर रोने की तबीयत हो रही थी।

गडिया से बस आ गयी थी। इस सवेरे के वक्त बरसात मे बसी भीड भी न थी। अनुपमा झटपट बस में चढकर खिडकी के किनारे की एक सीट पर बैठ गयी। वह बादलो से भरे आकाश के अस्पष्ट घूघट की ओर देख

रही थी और शोभना की बात सोच रही थी। शोभना न अपनी सब गुप्त बातें अनुपमा को बता दी थी। हे ईश्वर, दुनिया की कोई भी लडकी ऐसी मुसीबत में न पडे !

राधाकान्त—कल सबरे शोभना मे मिलन राधाकान्त खुद ही आया था। शोभना के ब्याह का काम उस समय आगे बढ रहा था। उसके कुछ देर बाद ही पिता के घर स पतिगृह की शोभना की यात्रा थी। वही राधाकान्त था, जो कॉलेज मे उसके साथ पढता था। स्पोर्ट्स मे उसका बडा नाम था। जात्रा थियेटर करता था। अनुपमा को चेहरा अच्छी तरह याद है। अनुपमा ने एक बार बस-स्टैंड के पास शोभना के साथ उसे खडे देखा था।

शोभना बहुत चिढ गयी थी। चेहरा गभीर कर बोली थी 'कसा असभ्य लडका है। नाक के पास ऐसा सिगरेट का धुआ छोडा कि लगा जसे कोई पुरानी स्टेट बस हो।'

उसके बाद किसी मामले में राधाकान्त कालेज से निकाल दिया गया। उसके पहले राधाकान्त मोटर साइकिल पर बैठकर कॉलेज आया था। अपनी मोटर-साइकिल नही थी—किसी दोस्त की थी। उसी मोटर साइकिल से जान बूझकर अनुपमा की साडी पर कीचड उछाल दी थी। फिर दूसरे दिन, बस-स्टैंड पर अनुपमा को खडे देखकर बोला था, 'आज बस को बहुत गडबड है।' राधाकान्त की तबीयत थी कि अनुपमा उसकी मोटर साइकिल पर पीछे बैठ जाये, इसे अनुपमा समझ गयी थी। मोटर साइकिल पर बैठने का लालच न हुआ हो, ऐसी बात न थी। लेकिन दिन दहाडे राधाकान्त की मोटर साइकिल पर चढन की बात ही नही उठती थी। अनुपमा न मुह फेर लिया था।

उसी राधाकान्त के साथ छिप छिपकर शोभना फँस गयी थी और कालिज से चले जाने के बाद भी दोनो का सबध रहा। यह बात अनुपमा के सिवा घर के किसी भी सदस्य को मालूम न थी। राधाकान्त आवारा हो गया था। राधाकान्त बेकार था। राधाकान्त जुआरी था। जो दोस्त मोटर साइकिल देता था, उस कपूर ने भी राधाकान्त को छोड दिया था।

लेकिन शोभना न नहीं।

वही शोभना छिप छिपकर राधाकात के साथ घूमती रही थी। सिनमा गयी थी। अँधेर म राधाकात न उसका हाथ थाम लिया था और शोभना न कोई आपत्ति नहीं की थी। अलीपुर क चिडियाघर म, ईडन गाडन म विक्टोरिया ममोरियल के मदान म, प्रिसेप घाट के पास नदी के किनारे और-तो और वडेल चच तक शोभना उसके साथ गयी थी। राधाकात उसे एक दिन फोटो की दुकान पर भी ले गया था, वडल स्टूडियो म तरह तरह की भगिमाओ म जोडी की फोटो खिचवायी थी।

राधाकात और भी आगे बढना चाहता था। शोभना से कहा था, 'किसी दिन डीलक्स हाटल चलो। वहा बहुत अकेला रहता है—उधर जान पहचान वाला कोई नहीं जाता है।'

वह कहाँ है ? शाभना ने पूछा था।

गुलामउद्दीन स्ट्रीट पर—ट्राम लाइन के बहुत नजदीक।' राधाकात न बताया।

लेकिन इतना आगे बढन का साहस शोभना को न हुआ। कहा, 'अभी नहीं बाद मे। मैं तो तुम्हारी ही हूँ।'

राधाकात बहुत खफा हो गया था। उसी गुस्से को शात करने के लिए शोभना को बहुत कुछ करना पडा था। जबरदस्ती राधाकान्त को लेकर बहुत सी जगह घूम आयी थी। उससे कहा था,'तुम जहाँ कहोगे, वहा चलूगी। किन्तु प्लीज, यह डीलक्स हाटल फोटल नहीं। वह सब बाद म।'

इसके बाद भी करुण भाव से राधाकात को कई चिट्ठियाँ लिखी थी। प्राथना की थी, मुझे अपना लो। मेरा कुछ इतजाम करो। इस तरह और कितन दिना तक ?

लेकिन तब राधाकात अजीब होन लगा। राधाकात के पिता की मृत्यु हो गयी। नौकरी-औकरी का कोई इतजाम न हुआ। अभाव और गरीबी म शात हाना ता दूर की बात राधाकात और भी बुरी सगत म पट गया। राधाकात के पीछे पुलिस लग गयी। फिर भी शोभना न आशा नही छाडी। सोचा उसे धीर धीर ठीक से बना लेगी। राधाकात का फिर चिट्ठी लिखी, 'इस तरह अब नहीं चलता। मुझे ग्रहण करो मुझे ले

जाओ।' लेकिन राधाकान्त ने कुछ नही किया।

इस तरह तीन बरस कट गये। राधाकात अचानक गायब हो गया था। अत म शोभना ने आशा छोड दी थी। उस व्यक्ति के वारे म शोभना के मन से सारी दुबलता दूर हो गयी थी। उसके बाद मौसी की वातो म शोभना ने रुचि दिखायी थी। मौसी न ही शोभना के लिए ब्याह का फूल खिलाया था। समीरण चौधरी बहुत सुदर लडका था। कैसा शात शिष्ट स्वभाव का था! एक ही बात पर शोभना का पसद कर लिया था। इस समीरण चौधरी के प्रति शोभना की कृतज्ञता का अत न था।

राधाकान्त राय, इतने दिनो तक तुम कहा थे? इतनी चिटिठया लिखन पर भी तुम्हारा पता न चला। और आज अचानक धूमकेतु की तरह शोभना के जीवन म फिर तुम्हारा आविभाव हुआ!

शोभना को पता चला कि राधाकात कैसा हो गया था। अब राधाकात दूसरी ही तरह का आदमी था—जिस पर विश्वास नही किया जा सकता था। पाजी, गुडो का सरदार राधाकात। वही राधाकात खबर पाकर कल मिलने आया था। शोभना से एकात मे भेंट हान पर शोभना बोली, 'बहुत देर से लौटे, राधाकात! तुम्ह बडे मौके दिय, तुम्हारे लिए बहुत दिना राह दखी। लेकिन तब तुमन मुझे कोई खबर न दी। आज मेरे नये जीवन के आरभ मे तुम्हारे लौटन के कोई अथ नही। अवश्य ही शाभना को यह सब कहना न पडा। जो लोग दरवाजे के पास थ उन्हान राधाकात को बता दिया कि अब शोभना स भेंट होने की कोई राह नही है। शाभना इस समय ब्याह के पीढे पर है।

राधाकात राय, तुम यदि शरीफ आदमी होते तो यही रुक जाते। तीन बरस तक तुम्हारी अवहेलना जिस गलती से हुई उसे भी समझ जात।

लकिन उसके वदले राधाकात ने भद्दा ढंग अख्तियार किया। ससुराल म ही लिफाफे मे सील कर उस दिन शाम का राधाकात ने शाभना को चिटठी लिखी। 'तुम मेरी पत्नी हो। तुम्हारी दूसरी शादी कस हो सकती है? दुनिया मे एसा काई आदमी नही, जो मेरे रहते फिर तुम्हारी माँग म सिंदूर भर सके। मैं जानता हूँ कि यह सब तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध

तुम्हारे सिर मढ दिया गया है। लेकिन अब यह सब बरदाश्त न करूँगा। तुम्हे मैं जरूर छुडाऊँगा। जिन लोगो ने तुम्हार गले मे फिर माला पहनान का पड्यत्र किया है, उनको जेल जाना होगा। शोभना, आशा है कि तुम समीरण बाबू से कहोगी कि इस दश मे औरत या आदमी किसी की डबल पत्नी या डबल पति नही रह सकता। मैंन उनकी बहूभात का निमत्रण-पत्र दखा था—वह गलत है। शोभना के साथ समीरण बाबू का विवाह अवश्य ही 21वें श्रावण को नही हुआ। शोभना का एक ही पति है—उसका नाम है राधाकात राय। उनको सदेह दूर करने के लिए समीरण बाबू के पास युगल फाटो की एक कापी भेज दी है।'

राधाकात राय, निष्ठुर राधाकात राय ने और भी लिखा था, उनको और कुछ घटो का वक्त देना चाहता हूँ। उसके बाद जो होना चाहिए, वह होगा। कोट, थाना, पुलिस—यह सब अभी तक देश म समाप्त नही हुए है। पर सबस अच्छा है कि तुम खुद ही वह घर छोडकर चली आओ। समीरण बाबू को मालूम होना चाहिए कि पति के रहते विवाहित स्त्री से पुनर्विवाह करन की हिम्मत दिखाने म बहुत मुसीबतें हैं। जेल भी हो सकती है। मैंन वकील से सलाह ले ली है।'

अनुपमा चिटठी पढकर क्षण भर के लिए स्तभित रह गयी थी। शोभना रो पडन वाली थी, किंतु अनुपमा न ही उसे आसपास की अवस्था के बारे मे सचेत कर दिया। 'शोभना! अभी सीन मत क्रियेट कर। विपत्ति के समय ठडा दिमाग न रहन से आग और भडक उठती है।

अनुपमा का अपना दिमाग भी चकरा रहा था। शोभना ने अगर कभी ब्याह कर ही लिया हो तो जान बूझकर फिर इतने लोगो को मुसीबत मे क्या डाला? शोभना, तुम बिलकुल बच्ची तो नही हो।

शोभना अपनी बेवकूफी अस्वीकार नही करती। बेवकूफ न होती तो राधाकान्त की तरह के दुनिया भर के निकम्मे लडके के साथ घर बसान का स्वप्न शोभना क्या देखती? शोभना सुदरी है पढी लिखी है प्रतिष्ठित पिता की अकेली लडकी है—राधाकात उसके योग्य पात्र तो नही है। लेकिन शोभना पूरे तौर पर राधाकात के वश मे थी—मोहग्रस्त कहा जा सकता है। बहुत दिना तक वह राधाका[illegible] घूमन निकली थी

किसी दिन वहीं जाकर मालाएँ भी बदली थीं। माला बदलना राधाकान्त का ही अनुरोध था। माला बदलने के बाद राधाकान्त अचानक बहुत हँसा था। दिखा दिया था कि थोड़ी दूर पर ही पेड़ के नीचे छोटा देवी-मन्दिर है। मन्दिर पहले शोभना की नज़र में न आया था। आता तो माला बदल करती या नहीं, इसमें सन्देह है। शोभना ने सुना था कि देवता के सामने माला बदल करने से ब्याह हो जाता है। देवता स्वयं साक्षी बन गये।

आश्चर्य है अविश्वसनीय है। इस कलकत्ता शहर में, इस युग में, पढ़ी-लिखी लड़की इतनी बुद्धू हो सकती है, यह कौन विश्वास करेगा? अनुपमा दी अवश्य विश्वास कर लेतीं। कहतीं, लाखों बंगाली लड़कियों में अक्ल पैदा करने लायक एक कलारी भी शक्ति नहीं है। लिखना-पढ़ना जानने से ही अवस्था परिवर्तित नहीं हो जाती। बंगाली लड़कियों-सी बेवकूफ़ प्राणी दुनिया में दूसरा एक भी नहीं है। प्राकृतिक नियम से ये कैसे बच निकलीं, इसे ईश्वर ही अकेले जानते हैं। बंगाल की बहू, ऊटपटाँग साड़ी पहने औरतों को तो इस आदमियों के जंगल में रहने का कोई उचित कारण नहीं है।

शोभना अचानक सिर पकड़कर बिस्तर पर लेट गयी। उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था। अनुपमा ने तभी हिम्मत बटोरी। इस समय उसे क्यों सिर दहल रहा है वह खुद ही समझ नहीं पाती। शोभना बिस्तर पर लेटी थी। अनुपमा ने दबी आवाज़ में पूछा था, "रजिस्ट्री-वजिस्ट्री कुछ करा ली थी क्या? कागज़-पत्र में कुछ दस्तखत-वस्तखत हैं?"

शोभना को कुछ याद नहीं आ रहा था। उसने राधाकान्त पर कभी अविश्वास नहीं किया। जिस पर अविश्वास हो, उसके साथ जकड़े रहना क्या है? राधाकान्त ने उस बार जो कुछ दिया था उस पर ही शोभना ने दस्तखत कर दिये।

नही। उसके बाद बडी कोशिशो स भी मेलजोल न होन मे शोभना ने अपनी राह चुन ली थी। शोभना ने जाकर अब उलटी की।

इतन दिनो तक जिसन खोज खबर न ली, उसन किस तरह चट स व्याह के दूसरे दिन घर पर चढाई कर दी। राधाकान्त क्या चाहता है? शोभना को? या और कुछ?

ऐसी हालत मे शोभना को दिलासा देने वाली अनुपमा कौन थी? *किंतु तर्कालिकार सेकेंड वाईलन म पिछले कई घटा के वज्र की चाट स* मानो एक दूसरी ही अनुपमा की सृष्टि हुई थी। पाषाणी अनुपमा थी। जा अनुपमा फिट मे पडी भावज की चीख शात भाव से सुन सकती है—'उस हमारे कमर म मत लेटन दो। वह कौन है? वह हमारे कमरे म क्या लेटेगी?' भाई की बीमार पत्नी की चीखें अनुपमा न कस सहज भाव स सही! पत्थर के सिवा ऐसा कोई कर सकता है? उसके बाद आज सवर का आविष्कार। *काली अनुपमा न अब सफेद होना शुरू कर दिया था। तमाम* दुख कलेजे म दबा पडा है। वही इच्छाएँ सफेद रुपये की सी साइज म पहले छाती के बीच मे निकल पडी हैं।

उसके बाद शोभना का यह मुसीबत। विपत्तिया की नदी पार करन पर भी, सुख शाति और मिलन के इतन पास आन पर भी विपत्ति। अनु-*पमा मन की आखो से देखती है कि शोभना का क्या हा सकता है?* फूल-शैया की सध्या को जब आत्मीय-स्वजना, वधु बाधवा के कलरव स जाख-पुर का यह मकान मुखरित हो तब पुलिस अथवा गुडे लकर राधाकान्त का आविर्भाव होगा। ब्याही बहू का छुडान के लिए कोई अनजान आदमी इस घर म आया है, यह सुनकर ही उलट पलट हा जायगा। कोई किसी कारण को न जानना चाहगा। सभी बात पर विश्वास कर लेंगे। अफवाह म कुछ ता सचाई हाती है—लडकिया की बदनामी के बार म यह कानून इस दश म मध्ययुग म अब तक जरा भी बदला नहीं है।

अनुपमा की छाती म आग जल रही है। तू कुछ साच न कर शाभना। मैं तो हूँ। तू मुझ पर भरोसा रखकर बैठी रह।

शाभना छाती क पास हाथ रख रही है। आह! तुझे शायद बहुत कष्ट हो रहा है? आँसू भरी आँखा स स्नेह-सहित अनुपमा उसकी छाती

पर हाथ फेरत फेरते अपनी छाती की बात भी याद कर रही थी। उसकी छाती के पास उस दाग को देखकर सात्वना पाने वाला इसान दुनिया भर मे काई नही है। एकमात्र शाभना ही थी, लेकिन उसके कलेजे मे ही इस समय भीषण व्यथा थी।

समीरण के पास समाचार गया था कि शोभना की तबीयत ठीक नही है। वह अचानक घबराया हुआ लौट आया। उसने अनुपमा से उस तरह डिस्टब करन के लिए माफी भी मागी। अनुपमा न मामले को अचानक हलका बना दिया। बोली, 'आपकी ही तो चीज है। माफी मागना होगी तो मुने ही मागना होगी।'

अनुपमा ने देखा कि शोभना लेटे लेटे एक अद्भुत दृष्टि से देख रही थी।

'तुम्ह क्या हो गया है?' घबराय हुए समीरण ने जानना चाहा, 'डाक्टर को बुलाऊँ?

अनुपमा बोली, 'कुछ फिकर न करें। सब ठीक हो जायेगा।'

शोभना बहुत कमजोर हो गयी थी। बगाल की लडकियाँ शायद मुसीबत आने पर ऐसी ही हो जाती है। चक्कर लगा खडी होकर युद्ध नही कर सकती—चोट के बदले मे चोट नही लगा सकती।

शोभना असहाय भाव से अब भी अनुपमा की ओर देख रही है। अनुपमा उठ खडी हुई।

समीरण बोला, 'उस वक्त जरूर आयेंगी।'

अनुपमा कुछ कहे बिना जा रही थी। उसके बाद अचानक कुछ सोच मुह फेरकर शाभना और समीरण को देखा। दोनो बडे सुदर लगे। अनुपमा के हाठ फडक उठे। शोभना समझी कि अनुपमा कुछ कहना चाह रही है। शोभना न उठकर बिस्तर पर बैठन की कोशिश की। अनुपमा बोली, 'गुड बाई, शोमना! उस वक्त मेरा मुह देखने के लिए बैठी न रहना। तुम्हे फिकर करन को कुछ नहीं है, शोभना।'

अन्तिम बात अनुपमा न बडे आश्चयजनक रूप से जोर देकर कही। शोभना को सहसा लग रहा था कि उसे सचमुच फिकर करन की अब कुछ बात

पर हाथ फेरते फेरते अपनी छाती की बात भी याद कर रही थी। उसकी छाती के पास उस दाग को देखकर सात्वना पाने वाला इसान दुनिया भर म कोइ नही है। एकमात्र शोभना ही थी, लेकिन उसके कलेजे म ही इस समय भीषण व्यथा थी।

समीरण के पास समाचार गया था कि शोभना की तबीयत ठीक नही है। वह अचानक घबराया हुआ लौट आया। उसने अनुपमा से उस तरह डिस्टब करन के लिए माफी भी मागी। अनुपमा ने मामले को अचानक हलका बना दिया। बोली, 'आपकी ही तो चीज है। माफी माँगना होगी तो मुझे ही मागना हागी।'

अनुपमा ने दखा कि शोभना लेटे-लेटे एक अद्‌भुत दृष्टि से देख रही थी।

'तुम्ह क्या हो गया है?' घबराय हुए समीरण ने जानना चाहा, 'डॉक्टर को बुलाऊँ?

अनुपमा बोली, 'कुछ फिक्र न करें। सब ठीक हो जायेगा।'

शोभना बहुत कमजोर हो गयी थी। बगाल की लडकिया शायद मुसीबत आन पर ऐसी ही हो जाती है। चक्कर लगा खडी होकर युद्ध नही कर सकती—चाट के बदले म चोट नही लगा सकती।

शाभना असहाय भाव स अब भी अनुपमा की आर देख रही है। अनुपमा उठ खडी हुई।

समीरण बोला, 'उस वक्त जरूर आयेंगी।'

अनुपमा कुछ कहे विना जा रही थी। उसके बाद अचानक कुछ सोच मुह फेरकर शोभना और समीरण को दखा। दोना बडे सुदर लगे। अनुपमा के होठ फडक उठे। शोभना समझी कि अनुपमा कुछ कहना चाह रही है। शोभना न उठकर बिस्तर पर बैठने की कोशिश की। अनुपमा बोली, गुड बाई, शोभना! उस वक्त मेरा मुह देखने के लिए बठी न रहना। तुमे फिकर करन का कुछ नहीं है शोभना।'

अतिम बात अनुपमा न बडे आश्चयजनक रूप से जोर दकर कही। शोभना को सहमा लग रहा था कि उसे सचमुच फिकर करन की अब कुछ बात

नही है। अनुपमा ने तो सारी जिम्मेदारी ले ली है।

अनुपमा के चले जाने के बाद भी शोभना बहुत देर तक दरवाज़े की ओर देखती रही। समीरण न पूछा, 'अब कसा लग रहा है ?'

शोभना के चेहरे पर मुसक्राहट लान की कोशिश करने पर भी वह सफल न हुई। राधाकान्त का भयानक चेहरा जब तक उसके आगे तरता रहा, तब तक उसके लिए स्वाभाविक हो पाना सभव न था।

'क्या सोच रही हो ?' समीरण ने पूछा।

शोभना जो कुछ सोच रही है, वह तुमसे कहा नही जा सकता। अगर आज शाम को राधाकान्त राय अपना दल-बल लेकर इस घर पर चढाई करे, या अगर थाने के दारोगा कोट का हुक्म लेकर यहाँ आये, तो क्या तुम मेरे रहोगे, समीरण ? विश्वास करो, मैं तुम्ह बहुत प्यार करती हूँ। विवाह के मत्रा के साथ तुम्ह ही सदा के लिए अपना सवस्व मान लिया। लेकिन क्या तुम मुझे फिर भी प्यार करोगे, जब सुनोग कि तुम्हारे नाम भी एक केस है जिसम कहा गया है कि जान-बूझकर दूसरे आदमी की विवाहिता पत्नी को तुम ले आये हो ? तब क्या मेरे साथ कोई सबध रखोगे ?

शोभना की यत्रणा मानो बढ रही थी। उसने पति से सरदद की एक गोली माँग ली। समीरण बोला गोली खाकर चुपचाप पडी रहो। कोई तुमको डिस्टब न करेगा।

शोभना न सोचा था कि पति अब क्षण भर के लिए उसके सिर पर हाथ फेरेंगे कम से-कम एक बार। अनिश्चित नाटक के झूले म शोभना झूल रही थी। आज रात को इस समय शोभना फूल शया के कमरे मे राजरानी बनकर बठी है, या भवानीपुर म घर म वापस जाकर रोशनी बद किये हुए कमरे म चुपचाप लेटी है !

इस क्षण शोभना मे कोई सामथ्य नही है। वह कदी बनकर बैठी है। ब्लड प्रेशर क रोगी पिता को बुलाकर इस गडबड म लपेटने का साहस भी शोभना को नही हो रहा था। अब एकमात्र सहारा अनुपमा थी। उसके बग मे पिता के दिये कई सौ रुपयो के नोट भी शोभना ने रख दिय थ कि कही वकील के पास जाना पडे।

शोभना और अनुपमा की तरह की लडकियो को कदम-कदम पर रुकावट डालने के लिए ही आज मानो कोई आकाश के साथ गुप्त षड्यन्त्र म लगा है। उद्धत श्रावण की गैर जिम्मेदार वर्षा अपने-आप सल खेल रही थी।

एसी वर्षा म भी अकेले इस तरह घूमने फिरने की सामर्थ्य उसमे होगी, ऐसा अनुपमा कभी विश्वास नही करती थी। वकील सुरेश्वर बनर्जी के मकान से निकलकर अनुपमा अब बस से भवानीपुर की ओर चली थी। कलकत्ता मे ट्राम मगरमच्छ की तरह दिखायी पडने पर भी पानी बिलकुल बरदाश्त नही कर पाती। जरा-सी बरसात स ही टिड्डा की तरह कतार-की कतार लाइनो पर खडी हो गयी हैं।

भवानीपुर की बस मे चढ जाना बिना कुछ सोचे हो गया। सुरेश्वर बनर्जी मे बातचीत के बाद जरा ठडे दिमाग से सोचने का अवसर अनुपमा को मिल गया। लेकिन इस शहर मे लडकिया के लिए बठने की जगह कहाँ है?

सुरेश्वर बनर्जी की भतीजी उसके साथ ही पढती थी। शादी होकर वह कहा चली गयी थी। वकील का खयाल आते ही उसकी बात अनुपमा को याद आयी।

अनुपमा ने सुरेश्वर बनर्जी को कोई विशेष परिचय न दिया। सुरश्वर न समझ लिया कि केस उसका ही है। बूढे शरीफ आदमी न शुरु म ही अनुपमा को हलकी-सी झिडकी दी। 'बेटी, तुम कब तक अबला बनी रहोगी? इस तरह के बदमाश मद सा देश म फैले आ रहे हैं। सीधी सादी लडकियो का सवनाश करना ही उनका शौक है। तुम्हे उचित है अभी माँ-बाप को खबर द दो।'

ने कहा था 'वह आदमी तुमको कितनी मुसीबत म डालना अदाज लगाना बहुत मुश्किल है। कहाँ किस चीज पर दस्त यह भी याद रखती हो बेटी! बदमाश लोग जो न कर है रजिस्ट्री शादी ही कर ली हो। कि पैसा पाने पर क्या न कर लें, । ी है—किसके दस्तखत किसने ी कलकत्ता शहर म कोई पना

नहीं है। अनुपमा ने तो सारी जिम्मेदारी ले ली है।

अनुपमा के चले जाने के बाद भी शोभना बहुत देर तक दरवाजे की ओर देखती रही। समीरण ने पूछा, 'अब कैसा लग रहा है?'

शोभना के चेहरे पर मुसकराहट लाने की कोशिश करने पर भी वह सफल न हुई। राधाकान्त का भयानक चेहरा जब तक उसके आगे तरता रहा, तब तक उसके लिए स्वाभाविक हो पाना सभव न था।

'क्या सोच रही हो?' समीरण ने पूछा।

शोभना जो कुछ सोच रही है वह तुमसे कहा नहीं जा सकता। अगर आज शाम को राधाकान्त राय अपना दल-बल लेकर इस घर पर चढाई करे, या अगर थाने के दारोगा कोर्ट का हुक्म लेकर यहाँ आये, तो क्या तुम मेरे रहोगे, समीरण? विश्वास करो, मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ। विवाह के मत्रों के साथ तुम्हें ही सदा के लिए अपना सर्वस्व मान लिया। लेकिन क्या तुम मुझे फिर भी प्यार करोगे, जब सुनोगे कि तुम्हारे नाम भी एक केस है जिसमें कहा गया है कि जान-बूझकर दूसरे आदमी की विवाहिता पत्नी को तुम ले आये हो? तब क्या मेरे साथ कोई सबध रखोगे?

शोभना की यत्रणा मानो बढ रही थी। उसने पति से सरदर्द की एक गोली माँग ली। समीरण बोला, 'गोली खाकर चुपचाप पड़ी रहो। कोई तुमको डिस्टर्ब न करेगा।'

शोभना ने सोचा था कि पति अब क्षण भर के लिए उसके सिर पर हाथ फेरेंगे, कम-से-कम एक बार। अनिश्चित नाटक के
झूल रही थी। आज रात को इस समय शोभना क
राजरानी बनकर बैठी है या भवानीपुर म घर
बन्द किये हुए कमरे म चुपचाप लेटी है।

इस क्षण शोभना में कोई सामर्थ्य नहीं है।
स्नेह प्रकार के रोगी पिता को बुलाकर इस
शोभना का नहा हो रहा था। अब एकमात्र
बैंक म पिता के दिये गई सौ रुपयो ना-
वकील के पास जाना पड़े।

शोभना और अनुपमा की तरह की लडकियो को कदम-कदम पर रुकावट डालने के लिए ही आज मानो कोई आकाश के साथ गुप्त षडयत्र मे लगा है। उद्धत श्रावण की गर जिम्मेदार वर्षा अपने-आप खेल खेल रही थी।

ऐसी वर्षा म भी अकेले इस तरह घूमने-फिरने की सामर्थ्य उसमे होगी, ऐसा अनुपमा कभी विश्वास नही करती थी। वकील सुरेश्वर बनर्जी के मकान से निकलकर अनुपमा अब बस से भवानीपुर की ओर चली थी। कलकत्ता में ट्राम मगरमच्छ की तरह दिखायी पडने पर भी पानी बिलकुल बरदाश्त नही कर पाती। जरा सी बरसात से ही टिड्डो की तरह कतार-की-कतार लाइनो पर खडी हो गयी हैं।

भवानीपुर की बस म चढ जाना बिना कुछ सोचे हो गया। सुरेश्वर बनर्जी से बातचीत के बाद जरा ठडे दिमाग से सोचने का अवसर अनुपमा को मिल गया। लेकिन इस शहर मे लडकियो के लिए बठने की जगह कहा है?

सुरेश्वर बनर्जी की भतीजी उसके साथ ही पढती थी। शादी होकर वह कही चली गयी थी। वकील का खयाल आते ही उसकी बात अनुपमा को याद आयी।

अनुपमा न सुरेश्वर बनर्जी को कोई विशेष परिचय न दिया। सुरेश्वर ने समझ लिया कि केस उसका ही है। बूढे शरीफ आदमी ने शुरू मे ही अनुपमा को हलकी सी झिडकी दी। 'बेटी, तुम कब तक अबला बनी रहोगी? इस तरह के बदमाश मद तो देश म फले जा रहे हैं। सीधी सादी लडकिया का सवनाश करना ही उनका शौक है। तुम्हे उचित है अभी माँ बाप को खबर दे दो।'

सुरेश्वर न कहा था, वह आदमी तुमको कितनी मुसीबत मे डालना चाहता है, इसका अदाज लगाना बहुत मुश्किल है। कहाँ किस चीज पर दस्तखत करती हो, यह भी याद नही रखती हो, बेटी! बदमाश लोग जो न कर सकें, ऐसा कोइ काम नही। हो सकता है, रजिस्ट्री शादी ही कर ली हो। दो-एक मरेज रजिस्टार ऐसे हो गये हैं कि पैसा पाने पर क्या न कर लें, ऐसा कोई काम नही है। उस पर जालसाजी है—किसके दस्तखत किसने किये हैं, कौन कहाँ गवाही दे रहा है, इसका कलकत्ता शहर म कोई पता

नही है। अनुपमा ने तो सारी जिम्मेदारी ले ली है।

अनुपमा के चले जाने के बाद भी शोभना बहुत देर तक दरवाजे की ओर देखती रही। समीरण न पूछा, 'अब कैसा लग रहा है ?'

शोभना के चेहरे पर मुसकराहट लान की कोशिश करन पर भी वह सफल न हुई। राधाकान्त का भयानक चेहरा जब तक उसके आगे तरता रहा, तब तक उसके लिए स्वाभाविक हो पाना सभव न था।

'क्या सोच रही हो ?' समीरण ने पूछा।

शोभना जो कुछ सोच रही है, वह तुमसे कहा नही जा सकता। अगर आज शाम को राधाकान्त राय अपना दल-बल लेकर इस घर पर चढाई करे, या अगर थाने के दारोगा कोट का हुक्म लेकर यहाँ आये, तो क्या तुम मेरे रहोगे, समीरण ? विश्वास करो, मैं तुम्हे बहुत प्यार करती हूँ। विवाह के मन्त्रो के साथ तुम्हे ही सदा के लिए अपना सवस्व मान लिया। लेकिन क्या तुम मुझे फिर भी प्यार करोगे, जब सुनोगे कि तुम्हारे नाम भी एक केस है जिसमे कहा गया है कि जान बूझकर दूसरे आदमी की विवाहिता पत्नी को तुम ले आये हो ? तब क्या मेरे साथ कोई सबध रखोगे ?

शोभना की यन्त्रणा मानो बढ रही थी। उसने पति से सरदद की एक गोली माग ली। समीरण बोला, 'गोली खाकर चुपचाप पडी रहो। कोई तुमको डिस्टब न करेगा।'

शोभना न सोचा था कि पति अब क्षण भर के लिए उसके सिर पर हाथ फेरेंगे, कम से कम एक बार। अनिश्चित नाटक के झूले म शोभना झूल रही थी। आज रात को इस समय शोभना फूल शैया के कमरे म राजरानी बनकर बठी है या भवानीपुर म घर म वापस जाकर रोशनी बद किये हुए कमरे म चुपचाप लेटी है !

इस क्षण शोभना म कोई सामर्थ्य नही है। वह कदी बनकर बठी है। ब्लड प्रेशर के रोगी पिता को बुलाकर इस गडबड मे लपेटने का साहस भी शोभना को नही हो रहा था। अब एकमात्र सहारा अनुपमा थी। उसके बग मे पिता के दिये कई सौ रुपयो के नोट भी शोभना ने रख दिये थ कि कही वकील के पास जाना पडे।

शोभना और अनुपमा की तरह की लडकिया को कदम-कदम पर रुकावट डालने के लिए ही आज मानो कोई आकाश के साथ गुप्त षडयन्त्र मे लगा है। उद्धत श्रावण की गैर-जिम्मेदार वर्षा अपने-आप खेल खेल रही थी।

एसी वर्षा म भी अकेले इस तरह घूमने फिरने की सामर्थ्य उसमे होगी ऐसा अनुपमा कभी विश्वास नही करती थी। वकील सुरेश्वर बनर्जी के मकान से निकलकर अनुपमा अब बस से भवानीपुर की ओर चली थी। कलकत्ता मे ट्रामे मगरमच्छ की तरह दिखायी पडने पर भी पानी बिलकुल बरदाश्त नही कर पाती। जरा सी बरसात से ही टिड्डो की तरह कतार-की-कतार लाइनो पर खडी हो गयी हैं।

भवानीपुर की बस मे चढ जाना बिना कुछ सोचे हो गया। सुरेश्वर बनर्जी से बातचीत के बाद जरा ठडे दिमाग से सोचने का अवसर अनुपमा को मिल गया। लेकिन इस शहर मे लडकिया के लिए बठने की जगह कहाँ है ?

सुरश्वर बनर्जी की भतीजी उसके साथ ही पढती थी। शादी होकर वह कही चली गयी थी। वकील का खयाल आते ही उसकी बात अनुपमा को याद आयी।

अनुपमा ने सुरश्वर बनर्जी को कोई विशेष परिचय न दिया। सुरेश्वर ने समय लिया कि कस उसका ही है। बूढे शरीफ आदमी न शुरू म ही अनुपमा को हलकी-सी थिडकी दी। 'बेटी, तुम कब तक अबला बनी रहोगी ? इस तरह के बदमाश मद तो देश म फैले जा रहे हैं। सीधी-सादी लडकिया का सवनाश करना ही उनका शौक है। तुम्हे उचित है अभी माँ-बाप को खबर दे दो।'

सुरश्वर न कहा था, 'वह आदमी तुमको कितनी मुसीबत म डालना चाहता है, इसका अदाज लगाना बहुत मुश्किल है। कहाँ किस चीज पर दस्त-खत करती हो, यह भी याद नही रखती हो बेटी ! बदमाश लोग जो न कर सकें, एसा कोई काम नही। हो सकता है, रजिस्ट्री शादी ही कर ली हो। दो-एक मरेज रजिस्ट्रार ऐसे हो गये हैं कि पैसा पाने पर क्या न कर लें, एसा कोई काम नही है। उस पर जालसाजी है—किसके दस्तखत किसने किये हैं, कौन कहाँ गवाही दे रहा है इसका कलकत्ता शहर म कोई पता

नहीं। यह ब्याह ठीक से नहीं हुआ, यह प्रमाणित करने में बहुत झंझट हैं। भरोसा एक यही है कि छोकरे ने चिट्ठी में स्वीकार किया कि शादी तीन बरस पहले की है। तीन बरस पहले अगर ब्याह किया था तो साथ में रहना सहना क्या नहीं किया, भाई? करता ही कैसे? एक बरस तो फरार था। पता लगाने पर हो सकता है कि मालूम हो कि एक बरस श्रीकृष्ण के जन्मस्थान घूम आया है और अब मतलब क्या हो सकता है?'

और कोई मौका होता तो यह देख सुनकर अनुपमा शादी के मामले में कमरे को अट्टहास से भर देती। लेकिन अब तो मौका न था। अब यही जान बूझकर विवाह का मामला ही वह परख कर देख रही है।

सुरेश्वर बोले, 'अगर सचमुच वह आदमी तुम पर अधिकार करना चाहता है और अगर वकील मुहर्रिर को ठीक से तय कर ले तो बड़ा आफत है। आज ही तीसरे पहर कोर्ट का सम्मन ले लेगा। पर अक्सर लोग रुपया के लिए भी यह सब करते हैं।

सोच समझकर सुरेश्वर बोले, कचहरी से बचने का कोई ऐसा रास्ता दिखायी नहीं देता। अभी कोर्ट से एक इंजेक्शन लेना ठीक है कि वह आदमी तुमको पत्नी न कह सके। कहीं भी यह न कह सके कि उसने तुमसे शादी की है। ऐसा हो सके तो अभी कुछ दिनों तक निश्चिन्त हुआ जा सकता है—क्रिमिनल मुकदमा भी बहुत सख्त हो जायेगा।'

लेकिन इससे समीरण को अलग रखने की कोई राह सुरेश्वर को नहीं दिखायी दे रही है। 'पति को बनाये रखना ही अच्छा है।' भले आदमी ने कैसी सरलता से सलाह दी थी।

अनुपमा के मन में आग जल रही थी। उसने इस दुनिया का सारा आकर्षण खो दिया था। उस पर राधाकान्त पर चरम सीमा में घृणा हो रही थी।

राधाकान्त के मकान का पता उसने शोभना से ले लिया था। हाँ यह तीन बरस पहले का पता था। अभी भी वह वहाँ रह रहा था या नहीं, इसमें शक है। गाड़ियों की मरम्मत के जिस गैरेज के सामने उन दिनों राधाकान्त अड्डा मारता था, उसका पता भी अनुपमा ने शोभना से ले लिया था।

शोभना का चेहरा इस समय अनुपमा की आँखो के आगे फिर तर उठा था। 'तू कुछ सोच न कर, शोभना, मैं एक बार अंतिम प्रयत्न करके देखती हूँ। हमेशा चुपचाप सब-कुछ सहा है, सब-कुछ सिर झुकाकर मान लिया—कोई भी नतीजा तो न निकला। अब अनुपमा सेनगुप्त कुछ करेगी।'

इसके बाद ही वह भद्दा दृश्य फिर सामने आ गया। भावज विकार के वश म कह रही थी—मेरे कमरे मे दूसरे लोग क्या हैं ? अनुपमा भी इस बार अपने मन म बोली, 'तुम कुछ फिकर मत करो, सुलोचना। जिससे तुम्हारे कमरे मे थड पसन न रहे, उसका इतजाम जरूर करूँगी।'

अब अनुपमा के कलेजे मे सरसराहट हुई। बग को गोद मे रखकर हाथो को कलेजे के पास ले जाते ही जैसे रुपय के आकार के सफेद दाग के पास ही हाथ चला गया।

अनुपमा न चक्कर काट काटकर इस बर्षा-बादल के दिन भी राधाकान्त का अड्डा तलाश कर लिया। राधाकान्त से मुलाकात करने के पहले जितना सभव हो सका, अपने को अनुपमा ने स्मार्ट बना लिया था। काली होने पर भी अब भी अनुपमा के युवती शरीर मे आग थी।

एक टूटी गाडी की मरम्मत की दूकान के सामने बदमाश आवारा राधाकान्त को अनुपमा ने ढूढ निकाला। उसके बाद ? उसके बाद तो बहुत बातें हैं। लेकिन उन सारी बातो का महाभारत लिखने का वक्त कहाँ है ? समय तो अब तेजी से जा रहा था और शोभना का भाग्य इसी स जुडा था।

राधाकान्त के साथ कुछ देर वक्त बिताकर और 'कुछ देर बाद फिर भेंट होगी', यह वादा कर अनुपमा इस सावन के बदली के दिन फिर सडक पर निकल पडी।

अब गुलामउद्दीन स्ट्रीट। डीलक्स होटल। इस होटल मे ही उस सुनसान, उदास प्रात काल म मनजर रामेश्वर मजूमदार ने एक नयी लडकी को बरसात म भीगी हुई हालत मे रिक्शे से उतरते देखा। डीलक्स होटल को

किसी पब्लिसिटी की जरूरत नही होती। छिपे छिपे डीलक्स के डबलरूम की बात चारो ओर दूर-दूर तक फैल गयी है। तमाम लोग कमरे की बुकिंग के लिए आते। ग्राहकों को सँभालने में मनेजर रामेश्वर और हेड बेयरा अभिलापचन्दर ठिठक जाते।

रामेश्वर को मालूम था कि प्रमादी बरसात भरे आज के दिन बिजनस बिलकुल न जमेगा। बरसात होने से कलकत्ता के लोग क्यों ऐसे घरघुस्सू हो जाते हैं, उनमे मौजमस्ती की इच्छा इस तरह से क्या कम पड जाती है, इसे रामेश्वर समझ न पाया था।

जीवन म रामेश्वर मजूमदार ने बहुत-सी जानकारी पायी थी। इस डीलक्स होटल के काउटर पर बठकर ससार की बहुतेरी आश्चयजनक घटनाएँ उन्होंने अपनी आखो के आगे देखी। लेकिन किसी लडकी का डीलक्स होटल का डबलरूम बुक कराने के लिए कभी आते नहीं देखा था।

औरतें—सिंदूर लगाये सिन्दूर पोछे, घूघट काढे, और-तो-और बुर्के की ओट किये तमाम लडकियो ने यहाँ आकर अज्ञात रहस्य की सृष्टि की है। लेकिन उनके मर्द ही एक्टिव होते हैं—औरतें तो टक्सी के कोने म सिर नीचा किये चुपचाप बठी रहती हैं। सारा इतजाम पक्का हो जाने पर पुरुप-साथी के निर्देश पर चट स होटल के अदर चली आती—कोई चू नही करती। लेकिन बरसात और बादल लेकर अब एक अपरिचिता रमणी डबलरूम की तलाश मे खुद ही आयी है।

तिरछी नजर से रामेश्वर मजूमदार ने असली मामला देख लिया था। नाबालिग तो नही है। इन नाबालिग लडकिया का ही रामेश्वर का डर है। अठारह पार होने के बाद कोई चिन्ता नही रहती। दुनिया म जो तबीयत हो, वह करने की स्वतन्त्रता सबको मिल गयी है। चाहें तो दुनिया के सभी लोग अपनी खुशी इस डीलक्स होटल म आकर पूरी कर जायें—किसी के चेहरे पर टक्निकल कारण से इस होटल का दरवाजा बद क नहीं करना चाहते।

रायाकान्त। इस अद्भुत समय रायाकान्त की बात ही अनुपमा को याद

आ रही है। उसे आज दिन भर काम मे लगाये ही रखना पडेगा।

जब अनुपमा उसकी ओर बढकर कहा, 'राधाकान्त हा न ? पहचान रहे हो ?' तो राधाका त कैसी आसानी से अनुपमा को पहचान गया था।

अनुपमा उस समय पूरी ऐक्टिग कर रही थी। किस तरह उसन बेहिचक भौंह टेढी की थी। शरीर की सारी अग्नि आँखो की पुतलिया म केंद्रित कर अनुपमा ने पुरान कॉलेज के साथी की ओर देखा था।

राधाका त न जोश की कमी न प्रदर्शित की। बहुत खुश होकर बोला था, 'अनुपमा हो न ?' लडकियो को पहचानन और याद रखने मे इन लडको को कोई मुश्किल नही होती थी।

राधाका त आदमी था ? या पशु ? शक्ल गैंडे सी हो गयी थी। कसा आश्चय है ! शोभना की बात ही न उठी। शोभना को लेकर जो गडबड खडी की थी, वह इस समय राधाका त को देखकर समझ म ही नही आती थी।

उस व्यक्ति को देखकर अनुपमा को घणा हो रही थी। बातचीत और हाव भाव से अच्छी तरह समझ म आता था कि उस आदमी का मनुष्यत्व नष्ट हो चुका है। फिर भी अनुपमा न बडा मधुर अभिनय किया था। समीप जा गाल मे गडढा डालकर अनुपमा बोली थी, कितने दिनो बाद कलकत्ता आयी। कैसा सौभाग्य है—तुमसे भेंट हो गयी। तुम कितने स्वीट लग रहे हो, राधाका त। इन कुछ सालो म तुम और भी मनली हो गय हो, राधाकान्त।'

मैनली कहने से कौन मद सतुष्ट न होगा ? राधाका त बहुत खुश था। उससे अलग बातें करने के लिए गरेज से बाहर निकल आया।

राधाका त ने एक दुगधपूण कडी सिगरेट सुलगायी हुई थी। बोला, तुम्ह कष्ट तो न होगा ?'

'पागल हुए हो !' अनुपमा ने जवाब दिया, 'तुम लोग जितनी कडी चीज़ व्यवहार करोगे, जितने रफ होगे, उतना ही लडकियाँ तुम्ह चाहेगी।'

'लडकियाँ आजकल बहुत शहशाह हो गयी हैं अनुपमा, राधाका त ने शिकायत की, मै लीनेस का कोई स्पेशल पुरस्कार नही है। खेल कूद, बॉडी बिल्डिग और मर्दाने गुणो की कोई कीमत अब औरतें नही दती।

लडकियाँ केवल चाहती है रुपयो के ढेर वाला मर्द। अच्छी नौकरी रहने पर वल्ड के मोस्ट मिनमिना वाले मर्द को भी वे पति बनाना चाहती हैं। अब मैं ही हूँ। कोई परमानेंट अच्छी नौकरी नहीं जुगाड़ पाता हूँ, इसीलिए लडकियों के आगे मेरी कीमत कम हो रही है।'

एकदम बेकार बात। इस सब पर कोई विश्वास नहीं करेगा, राधाकान्त। मिनमिना वाले मर्द को कोई लडकी पसन्द नहीं करती, तमाम रुपये और बिया रहने पर भी नहीं। तुम पर कितनी बातें होती थीं कॉलेज की लडकियों के कॉमन रूम में, अगर तुमको उसका पता होता।'

राधाकान्त बहुत खुश हुआ था। बोला था, मर्दों का जो ऐडवेंचर समझा जाता है, वह मैंने बहुत किया है, अनुपमा।' अब जल्दी जल्दी अपने घर कानूनी कीर्ति कलाप की थाडी लिस्ट राधाकान्त ने दी।

राधाकान्त के साथ नाटक का एक अध्याय समाप्त कर अनुपमा फिर ट्राम पर चढ गयी। राधाकान्त ने काफी झुकाव दिखाया था। अनुपमा की निश्चिन्तता मे समझ लिया था कि प्रेम की यह आग कॉलेज-जीवन से ही अनुपमा के हृदय मे प्रज्ज्वलित हो रही है। केवल अग्नि की शिखा को प्रकाशित होने का अवसर नहीं मिला।

कुछ घंटा बाद फिर राधाकान्त से मुलाकात होगी। सावन के बादलो और वर्षा की बाधा अनुपमा न मानेगी। अनुपमा ने झूठ कहा था। राधाकान्त को सुनाया था, यह तेईसवाँ श्रावण आश्चर्य का दिन है। आज अनुपमा स्वतन्त्र है। उस पर देखभाल करने वाला यहाँ कोई नहीं है। कल अनुपमा यहाँ न रहेगी। तेईसवाँ श्रावण *क्या उसके जीवन मे स्मरणीय बन कर न रहेगा?*

फिर भेंट होने का वादा पाकर पुलकित अनुपमा ने सडक पर आकर चलती ट्राम को हाथ से इशारा किया।

ट्राम की सीट पर बैठकर अनुपमा आकाश पाताल की सोचने लगी। ट्राम का आदमी उसके पास किराया लेने आया। उसकी ओर उसने देखा, लेकिन उसकी समझ में कुछ न आया। अनुपमा निश्चित है कि उसे कोई समझ न सकेगा। अनुपमा सेनगुप्त, इस बंधुहीन दुनिया मे तुम अंत में

अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए चली हो।

डीलक्स होटल का नाम ही अंत में अनुपमा को याद आया। उसने यह होटल कभी देखा न था। किंतु इसकी बातें सुनन्दा दी से और शोभना की बातचीत में सुनी थी। इस होटल में ही तो शोभना को ले जाने की इच्छा राधाकान्त ने व्यक्त की थी।

उसके बाद ? उसके बाद की बात तो मालूम ही है। अनुपमा को अपने ऊपर जैसे कंट्रोल ही न था। वर्षा में भीगी। पानी के गड्ढे पार कर अध भीगी अनुपमा ने रिक्शे पर चढ़कर डीलक्स होटल खोज निकाला था।

डबल बेडरूम की एडवांस बुकिंग का रुपया मैनेजर की ओर बढ़ा देने में उसे जरा भी असुविधा न हुई। मैनेजर रामेश्वर ने संतुष्ट होकर कहा, 'अभी पूरा रुपया दिये बिना भी चल सकता है। आधा पेशगी ही काफ़ी है।'

लेकिन अनुपमा ने पूरा रुपया अभी दे दिया। यहां का हिसाब वह पेशगी क्यों देना चाहती है, इसे अनुपमा सेनगुप्त के सिवा इस वक्त कोई न समझेगा। दुनिया भर के लोग अवश्य कभी समझेंगे कि पूरा रुपया चुका देने का अनुपमा को इतना आग्रह क्या था। अभी तो रामेश्वर मजूमदार भी शायद सिर खुजलायें और कहें, 'तभी मुझे संदेह होना उचित था। आदमी को देखकर समझ लेना ही तो मेरा काम है।'

पूरे एक दिन का किराया अनुपमा ने गिन दिया था। अभिलाषचन्दर के साथ लगेज की समस्या भी हल कर ली थी। अभिलाषचन्दर एक होल्ड आल किराये पर देने को भी तैयार हो गया था। वह होल्डऑल सीधे दीदी के कमरे में भेज देगा। दीदी को किसी परेशानी में न पड़ना होगा।

अब रामेश्वर ने होटल का फार्म भरने के लिए बढ़ा दिया। नाम-पता चाहिए। कहां से आना हुआ और कहां जाना है, वह भी होटल के नियम के अनुसार बताना होगा। इसी फार्म को भरने पर अनुपमा सहसा ठिठक कर रुक गयी थी।

अनुपमा, तुम्हारा नाम क्या है ? तुम्हारे बाबा का इतनी चाह से दिया हुआ नाम तुम इस डीलक्स होटल में छोड़ जाओगी ? अनुपमा को कुछ क्षणों की देर हो गयी। एक बार मन में आया कि लिख दे बावली सेनगुप्त।

लेकिन इस नाम को भी तो बाबा बहुत चाहते थे। अनुपमा न और दुविधा न की। अब नाम स उसे डर नही। अजीब सा एक हलकापन उस पर छा गया था। अत म निडर होकर अपना नाम ही अनुपमा ने लिख दिया।

तिरछी आँखा से रामेश्वर मजूमदार ने नाम की ओर देखा। यहाँ कौन अपना असली नाम पता लिखता है? उसके लिए रामेश्वर दिमाग खराब नही करत।

इसके बाद अनुपमा डीलक्स होटल स निकल गयी थी। अब बरसात कुछ कम पड गयी थी। रामेश्वर न सोचा, अब शायद ईश्वर ने मुह उठाकर देखा है। सूय का मुँह देखकर ही कलकत्ता के लोग फिर स्वाभाविक हो जायेंग। फिर वे डीलक्स होटल मे आकर जमा हागे।

अनुपमा न सहसा घडी की ओर देखा। याद आया, उस आदमी से आज ही मिलन की बात है। जयन्त बाबू—जिन्हाने अभी तक अपनी राय नही दी है। भले आदमी न कहा था कि मेट्रो के नीचे टिफिन के वक्त खडे रहगे। चले जाने के कोई माने नही होते। वह आदमी शायद खडा ही न हो। वहा रहा तो निश्चय ही कहेगा कि अभी भी आधा दजन लडकियो का देखना है।

फिर भी अनुपमा लाभ सवरण न कर सकी। मेट्रो के पास सडक के दूसरे फुटपाथ से देखा कि वह आदमी सचमुच खडा है। हो सकता है, कुतूहल से, या हो सकता है कि भलमनसी से ही खडा हो। अनुपमा की एक बार तबीयत हुई कि अभी भी कहे कि जयन्त बाबू मुझे मुसीबत से निकाल लीजिए। मेरी माँ मृत्युपथ की यात्री है। मेरे भाई धैय की अतिम सीमा पर पहुँच चुके हैं। मेरी भावज को मेरे कारण फिट आते हैं। एक कमरे म मैं पति पत्नी के बीच खडी हुई हूँ। लेकिन आज अनुपमा दया की भीख न मागेगी।

सडक पार कर उस आदमी के समीप आकर मीठी मुसकराहट के साथ अनुपमा बोली अरे, आप आकर खडे हैं। मुझे बहुत अफसोस है, जयन्त बाबू। मैं कहना चाहती हूँ कि आप-सा आदमी मुझे पसद नही है। आप मरे योग्य नही हैं। आपके पसद करने पर भी आपसे शादी न कर सकूगी। समझे?

उस आदमी ने शायद ऐसी बात कभी सुनी न थी। आश्चय को दूर कर उत्तर दने के पहले ही अनुपमा ने चलना शुरू कर दिया।

वह व्यक्ति शायद बहुत झेंप गया था। लेकिन अनुपमा न यह क्या किया? अनुपमा को खुद ही बहुत देर से रो लेने की तबीयत हो रही थी। लेकिन सडक पर तो कोई रोता नही। कलकत्ता की राह बाट तो लडकियो के रोने के लिए नही बनी हैं।

तीर की तेजी से एक के बाद एक कई दवाइया और विसातखाने की दुकानो म अनुपमा घुस पडी। सभी दुकानो से अनुपमा ने छोटे छोटे कुछ पकेट जमा किये। इन दवाइयो का नाम वताने मे अनुपमा को बिलकुल हिचक न हुई—पिता के पास एक दवाइयो का बक्स रहता था जिसको वह हमेशा ताला लगाकर दराज मे रख देते थे।

इसके बाद अनुपमा एक चाय की दुकान मे घुस गयी। पाक स्ट्रीट की चाय की दुकान मे बहुत सी सुविधाएँ थी। अच्छा पसा जरूर लेता था लेकिन किसी के किसी मामले मे अधिक उत्सुकता न दिखाता था। दूसरा की मेज पर भी कोई गिरता न था। अनुपमा न बहुत देर तक कई चिटिठयाँ लिखी। नीले लिफाफे मे उन्हे बडे ध्यान से रखकर उन्हें गोंद से बद किया।

चिटिठयाँ लिखने के बीच बीच मे अनुपमा ने राधाकात की बात सोची। शोभना के जीवन से कम से-कम आज के लिए उसे दूर हटाकर रखना ही होगा। स्काउड्रल राधाकान्त, तुम उतरते उतरते बहुत नीचे उतर गय हो। तुमन एक असहाय लडकी की सरलता का फायदा उठाकर बहुत अत्याचार किया है। और तुम कसे भले बन बैठे हो, जसे कि दुनिया-भर का सारा अत्याचार तुम पर ही हुआ हो। शोभना के लिए तुमको इतना लालच क्या है? सब कुछ जान-बूयकर ही तुम शोभना के सवनाश की ओर बढ रहे हो। तुम अच्छी तरह से जानते हो कि फूल शया के दिन किसी लडकी के बारे मे बदनामी फैलाने से उसका कसा सवनाश हो सकता है।

लेकिन आज तुम अनुपमा के कब्जे मे आये हो। अनुपमा आज तुम्हारा मन जरूर जीतेगी। तुम मुह खोलकर जो चाहोगे, वही मिलेगा। तुम्हार

साथ आज अनुपमा का छिपकर मुकाबला होना ही पडेगा।

सवेरे ही तुमने आज काफी कमजोरी दिखायी है, राधाकान्त। अनुपमा का वश मे पाकर तुम चचल हो गय हो, लेकिन उसके साथ ही शोभना को भी नही भूले। तुमने कहा था, आज तीसरे पहर और शाम का तुम थोडा व्यस्त रहोग। क्या काम है ? कसी व्यस्तता है ? अनुपमा न बुद्धू की तरह तुमसे मजाक किया था। तुमन सचमुच बात बतायी नही। केवल चुप लगाये रहे थे।

अत मे अनुपमा न कहा था, 'व्यस्तता, वह तो शाम का है। लेकिन उसके पहले ? और पहले भी क्या तुम्ह कोई वक्त नही है राधाकात ? कल तो मुझे पाजाग नही राधाकात।'

ऐसी जल्दबाजी क्या है ?' राधाकात चिढ गया था। 'इस तरह चल जाने के कुछ मायने होते है ?'

'आना और जाना कुछ भी तो हमारे हाथ म नही है राधाकात' इस बार आखो ही से अनुपमा न वार करना चाहा।

अत म कुछ देर की मुलाकात ठीक हुई थी। राधाकात की तबीयत थी कि कुछ दर अनुपमा क साथ घूम फिरकर ही वह अपने जरूरी काम के लिए लौट आयेगा।

अनुपमा उस समय राजी हो गयी थी। लेकिन मन ही मन बाली थी, 'देखा जाय, कौन जीतता है ?

घडी की ओर देखकर अनुपमा चाय की दुकान से उठ पडी। आज अनुपमा क पास एक क्षण भी बरबाद करन के लिए नही है।

अनुपमा ही जीती। डीलक्स होटल के अभिलापचदर न दखा कि सध्या के कुछ पहल ही वह अदभुत लडकी एक आदमी को लेकर टैक्सी पर होटल के दरवाजे के आग आकर रुकी। अभिलापचदर ने एक और भी ताज्जुब की चीज दखी, जा उसन एक बडे जमान म भी कभी नही दखी—लडकी ने टैक्सी का किराया खुद ही चुका दिया।

रामश्वर मजूमदार न भी मुसाफिरा के जोडे को दख लिया। यहा

उनके हाटल मे पहला केस आ रहा है। 'दिन-पर-दिन और भी वहुत कुछ देखोगे अभिलाप,' दबी हुई आवाज मे रामेश्वर वोले, 'अभी ता कलियुग की शुरुआत है।'

अभिलाप भी तभी लगेज को दो नबर के कमरे म रख आया और लक्ष्य किया कि दादा वावू चुपचाप गभीर बन वठे हैं। एक बार दीदी स कहा, 'लेकिन मेरे पास पैसा कौडी नही है। यह सुनकर दीदी को वडी हँसी आयी। 'जव तक मैं हूँ, तब तक पसा के लिए इतना क्या सोचत हा ? लगता है कि मेरा पैसा तुम्हारा नही है ?'

दादा वावू शायद मामूली बयरे को आदमी नही समझते थे, क्योकि अभिलाप के सामन ही किस तरह दीदी के लिए प्यार दिखान लग। बोले ओह तुम्हारा कैसा ब्राइट आइडिया है। शात निजन होटल कहलान वाले इस डीलक्स होटल के बारे मे मैंने सुना था। लेकिन तुम्हार हिम्मत दिलाय बिना मैं तो आ ही न पाता। जेब मे पैसे रहने पर भी नही।'

दीदी पहले ही कमरा बुक कर गयी थी इसे वह अभी तक नही समझा। अभिलाप ने बेडिंग कमरे के कोन मे रखकर उनको सलाम किया।

बावू न पूछा, 'एक दिन के किराये मे कितनी देर रहा जा सकता है ?'

सलाम ठाककर अभिलाप बोला, 'कोई फिकर नही। कल सवर आठ तक एक दिन के किराय म ही चल जायगा।

वावू वहुत खुश हा गये। वोले, तव तो कोई प्राब्लम ही नही ह। मैंने सोचा था कि यहा घटे घट का किराया लेते है। रात म मुझे घर लौटन की जल्दी ही नही। एक काम था, तुमस मुलाकात न हाती ता अब तक उसे ही खतम करता।'

'तो जाओ वही करो।' दीदी न मान दिखाया।

बावू झट से सुधार कर वोले, वह काम कल भी किया जा सकता है। चिडिया कुछ उडी ता नही जा रही है।'

दीदी न सहसा हँसना शुरू किया। कसी अजीव हँसी थी ! वावू न पूछा इतना हँस क्या रही हो ?'

'वही कि तुमन टैक्सी म कहा था कि मेरी हँसी अच्छी लगती है।'

अब दीदी न अभिलाप को देखा। बोली, 'इस कागज मे क्या है?'

'क्या चाहिए, बताइये न?' अभिलाप ने नम्रतापूवक पूछा। इन पार्टियो को सतुष्ट करने पर अक्सर अच्छी वख्शीश मिलती थी।

दीदी न साबुन-तौलिया के बारे म जानना चाहा। झटपट जाकर अभिलाप साबुन-तौलिया ले आया। बहुत लोग यहा से जाने के पहले नहा लेत है। लेकिन दीदी पहले ही गुसलखाने म जाना चाहती हैं। बोली, 'तुम अगर बुरा न मानो, राधाकान्त तो मैं नहा लू। बदन जल रहा है।'

इन दादा बाबू से खान पीन की बात पूछने से फायदा नही है, यह अभिलाप समझ गया। बिलकुल फालतू बाबू—जो कलपुर्जे हैं वे दीदी के हाथ म। इसीलिए अभिलाप चुपचाप बाहर टहलने लगा।

दीदी से फिर अभिलाप की मुलाकात हुई। दीदी न गुसलखाने मे जाकर स्नान ही नही किया, एकदम कपडे बदल डाले। तो दीदी उस हैंडबग म कपडे अपडे रखकर लायी थी। अब दीदी कैसी सुदर लग रही थी! दीदी न चमकदार लाल बनारसी सिल्क पहना था। बदन का रग काला होने से क्या होता है—लाल बनारसी अच्छी नही लगती हो, ऐसी बगाली लडकी को अभिलाप न अभी तक नही देखा था।

दीदी को नयी सज्जा मे देखकर दादा बाबू भी बहुत ताज्जुब मे पड गये थे। मुह बाये सजावट देख रहे थे। अभिलाप के सामने ही दादा बाबू बोले, तुमको क्या मजिक आता है?

दीदी न कोई ध्यान ही न दिया। मीठी मुसकान से बोली, 'हर लडकी मजिक जानती है। मजिक जान बिना लडको का मन नही मिलता।'

अब दीदी न कुछ हलके फुलके खाने का ऑडर दिया। दीदी आदमी को अच्छी तरह पहचानती नही, यह अभिलाप भी समझ गया। दीदी ने पूछा चाय पियेंगे न?'

'मैं चाय कभी नही पीता। बाबू न जवाब दिया। बाबू की इस आदत का जब पता नही है तो कितन दिना का परिचय हो सकता है? अभिलाप न सिर खुजलाया। दोनो कैसी मीठी मीठी बातें कर रहे थे मानो बहुत दिना की जान-पहचान हो। दोना ही एक दूसरे से तुम' कह रहे थ।

अभिलाप के हिसाब से गडबड हो रही थी।

खाने की चीज़ें कमरे मे लाने के पहले अभिलाप ने दो बार खटखटाया। उसके बाद कुछ देर खडा रहा। डीलक्स होटल मे यही कायदा है कि बेयरा कभी हडबडाकर नही घुस आता, अदर के लोगो को ठीक होने के लिए कुछ वक्त देता है।

लेकिन इस बार साथ ही साथ अदर आने की अनुमति मिल गयी। अभिलाप ने देखा कि दीदी और बाबू दोनो ही ज़रा दूर-दूर बैठे है। बाबू कह रहे हैं, 'तुम्हारा कहना है कि मैं लेडीज़ मैन हूँ। कॉलेज की सारी लडकियाँ मेरे बारे मे सोचा करती थी। सो उनकी ठडी साँसो से ही मेरी यह हालत हुई। पैसा कमाने की सीधी राह न मिली। एक लडकी मुझे लेक्चर देती थी—कहती थी, प्यार करूँगी लेकिन उससे पहले भले बन जाओ। सुनकर सिर से पाव तक बदन जल उठता। मानो स्कूल की मास्टरनी के साथ गहस्थी कर रहे हो। प्रेम करती हो तो प्रेम करो। लेकिन औरतो की गार्जियनी किसी मद को बरदाश्त नही होती।'

'तुम ठीक कह रहे हो,' दीदी इन सब बातो मे साथ दे रही हैं, यह सुनकर अभिलाप ज़रा ताज्जुब में आ गया।

दीदी ने अचानक जो पूछा, उससे अभिलाप को शम आ गयी।

अभिलाप को होटल से निकलकर जाते देखकर रामेश्वर ने पूछा, 'कहाँ चले ?'

'माला और फूल लेने,' दवी आवाज़ मे अभिलाप ने जवाब दिया। इतन दिनो तक काम करते हुए तरह-तरह की फरमाइशें अभिलाप ने पूरी की, लेकिन किसी दीदी ने कभी डीलक्स होटल मे ऐसा ऑडर नही दिया। बाबू लोग अकसर बेशर्मी से दूसरी चीज का ऑडर देत। पेट के लिए वह चीज सामने की दुकान से मोल भी लाना पडती।

'बहुत अच्छी माला होनी चाहिए और बहुत खुशबूदार फूल हो।' दीदी न कसे नखरे से कहा था। उन्होंने दस-दस रुपय के दो नोट अभिलाप के हाथ पर ठूस दिये थे।

माला और फूल! रामेश्वर सोचने लगे। तो थोडी देर बाद कमरा खाली कर जाने वाले कडिडेट नही हैं! रामेश्वर उसके लिए परेशान ज़रूर

न थे क्योंकि श्रावण की इस सध्या को होटल के लगभग सभी कमरे खाली पड़े थे। जो भी आयेगा, उसे वे ठिकाना दे सकेंगे। किसी को लौटाना न होगा।

माला और फूल ! रामेश्वर को बहुत दिन पहले इस तरह का एक केस मिला था। लेकिन उसमे पार्टी खुद ही साथ मे माला ले आयी थी। साथ म तीसरा आदमी भी था। रामेश्वर बाबू की जान पहचान का। बोले, 'रजिस्ट्री-आफिस से उनको सीधे लिये आ रहा हूँ। कलकत्ता म फूल शया की कोई जगह नही है। इसीलिए होटल डीलक्स को ही याद किया। मोटी रकम देकर बड़े-बड़े होटलो म जाने की हैसियत सभी की तो नही रहती।'

शादी की रात ही तो सुहागरात नही होती। 'अरे मारो गोली,' भले आदमी बोले 'वे सब नियम आजकल के रजिस्ट्री के ब्याह मे अचल हैं। ब्याह के पहले ही सुहागरात नही हो गयी, यही बहुत है।'

अभिलाष के सामने ही दीदी ने जूही बेला और रजनीगधा का पकेट खोल डाला और एक मोटी-सी फूलो की माला चोटी मे लपेटना शुरू किया। अभिलाष ने देखा, बाबू नहाना अहाना किये बिना ही उस तेल-भरे पसीने के मुह से एक के बाद एक सिगरेट फूकते जा रहे हैं और अब मुह-बाये बनारसी साड़ी पहन हुए फूलो से सजी दीदी को टकटकी लगाकर देख रहे हैं।

फूलो के साज से सजी हुई दीदी इसके बाद जरा मनेजर बाबू के कमरे म चली आयी। सवेरे के समय बरसात म भीगी वह नाजुक लड़की जसे कही अदृश्य हो गयी थी। इस लडकी का साज सिंगार, चाल ढाल सब अलग था। लेकिन इसे देखकर कौन कहेगा कि यह मामूली होटल की मामूली अतिथि नही है, अभिलाष का कानून से बचन के लिए फॉल्स लगेज लेकर इन्होन डीलक्स होटल म डबल बड किराये पर लिया है ?

दीदी अब एक टेलीफोन करना चाहती थी। रामेश्वर के टेलीफोन म ताला लगा रहता है। टलीफोन उठाया जा सकता है लेकिन उनकी अनुमति के बिना डायल नही किया जा सकता।

दीदी न डायल किया। लगा कि उस ओर से किसी ने उठाया। दीदी बोली शोभना को बुला दीजिय।'

उधर से लगा कि कोई कह रहा था कि अभी शोभना व्यस्त है। अभी-अभी साज सिगार हुआ है।

दीदी बड़े दुलार की आवाज में बोलीं, 'मुझे पता है। उसकी सुहागरात है। शायद अभी सज सँवरकर नीचे जा रही है। फिर भी अगर ज़रा द दें।'

'हलो, हलो, शोभना—ऑल द बेस्ट। तू और समीरण बाबू सुखी हो। शोभना तू कुछ फिकर मत करना बिलकुल नहीं आज तू बेफ़िक्र फूल-शैया कर ले आज कोई तेरे वहाँ नहीं आ रहा है। शायद किसी दिन न आयेगा। उसे ठीक शिक्षा दिये दे रही हूँ। ऐसी बातों में वह लगा जा रहा है कि उसे तेरी बात सोचने का समय तक नहीं मिल रहा है।'

रामेश्वर इस सबका कुछ समझ नहीं रहा है।

दीदी कह रही हैं, 'शोभना, तुझे ज्यादा रोके नहीं रखूंगी। तू तो आज क्वीन है।'

'क्या कहा? मैं हीरोइन हूँ?' दीदी हँसने की कोशिश कर भी हँस न सकीं। हीरोइन कहना चाहती है तो कह ले। आखिर किसी दिन हीरोइन बन ही गयी।'

'शोभना, तुझे एक बार फूल शया की रात को देखने की ब-हु-त तबीयत हो रही है। तून कौन-सी बनारसी साड़ी पहनी है रे ?'

'क्नू? अरे, कैसी अच्छी है। हाँ रे, तूने नाक में बुलाक पहना है?

उधर से शायद पूछा कि निमन्त्रित घर कब आ रही हो?

दीदी अब गंभीर होकर बोलीं, 'ना रे, कोई रास्ता नहीं है। मुझे बहुत काम हैं। बहुत काम में फँसी हूँ—अर्जेंट काम में।'

दीदी को सचमुच अभिनय आता है। रामेश्वर लक्ष्य कर रहे हैं कि उनकी लेडी-अतिथि की आवाज़ मानो रुलाई में तर हुई जा रही है। वहाँ के बहूभात में न जा पाने पर बहुत दुख है। दीदी अब रुआँसी आवाज में बोलीं, 'शोभना, बिलकुल भूल गयी। मेरा एक प्यारा आईना है। बचपन में बाबा ने मुझे दिया था। उसे तेरे ही लिए रखा है। मेरे सूटकेस में है।'

उधर से शायद फंक्शन में चलने के लिए फिर दबाव पड़ा। दीदी

अनायास बोली, 'ना रे, कोई रास्ता नहीं है। तुझको देख न सकी। बटे अर्जेंट काम म फँस गयी हूँ। गुडनाइट ! स्वीटड्रीम !'

रामेश्वर अपना काम करते करते ही लडकिया की अभिनय की क्षमता देखकर ताज्जुब मे पड गये। 'अर्जेंट काम !' अर्जेंट काम मे ही लगी हो ! मुश्किल बातें औरतें कसी आसानी से कह देती है।

दीदी ने अब रामेश्वर के हाथ पर टेलीफोन के पैसे दिये। 'बाद म दे देती। क्या जल्दी है ? अभी तो चली नही जा रही हो।' रामेश्वर न सौजन्य दिखाया।

लेकिन दीदी नक़द चुकाकर जिम्मेदारी से बरी हुइ। लगता था कि मद को पैसा की शम से बचा रही हो। या बहुत मनमौजी हो। अचानक कब चली जायें, कुछ ठीक नही। बहुतेरे ऐसे ही होते हैं। रात भर के लिए कमरा बुक कर आधे घटे में अचानक चले जाते है। जाते वक्त ये लोग बहुत जल्दी मे होते हैं, क्षण भर की देरी बरदाश्त न होती।

अब बाहर बरसात होने लगी थी। वर्षा का ज़ोर धीरे धीरे बढ रहा था। 'आकाश की छत आज भी शायद फूट गयी।' रामेश्वर मजूमदार ने आक्षेप किया।

उधर दो नबर कमरे के लिए दीदी ने और भी फूल मँगवाये। अभिलाप को फूलो से कमरा भर देने का हुक्म दिया था। लेकिन कहन के पहले ही अभिलाप के हाथ मे दीदी ने एक पाँच रुपय का नोट रख दिया था।

अदर दोनो की हलकी गुनगुनाहट चल रही थी। अभिलाप समझ गया कि मीठी मीठी बातो स कमरा मधुमय हो उठा था।

कुछ देर बाद ही रामेश्वर ने देखा कि अभिलाप दो नबर के कमरे म सोडा और बोतल लिये जा रहा है। तो अभी कलि की सध्या है। थियेटर समाप्त होने मे बहुत देर है।

उसके बाद बाहर जसी बरसात हो रही थी। रामेश्वर ने उबासी ली। तबीयत ठीक न थी—अभिलाप के सिर रात की ज़िम्मेदारी डालकर रामेश्वर अपन कमरे मे चले गय।

रात अधिक हो रही है। खूब ठडे सोडे के सिवा बाबू को अच्छा न लगता। अभिलाष बीच-बीच में घटी की आवाज सुनकर मिलने आ जाता। रात जितनी बढती जा रही थी अभिलाष उतना ही सावधान होता जा रहा था। घटी बजते ही धप से कमरे में घुस न जाता। दीदी बडी अच्छी थी। अभिलाष उन्हे शर्मिदा नही करना चाहता था।

बीच-बीच मे खाना आता। दीदी क्या खाती, उसे भगवान जानें। दो कोका-कोला का ऑडर भी था।

रात बढने के साथ साथ उनका रग जैसे बदल रहा था। दीदी के दिमाग मे अजीब खयाल आते। अभिलाष से पूछा, 'सदेश ला सकते हो ?'

पैसा फेंकने और बख्शीश देने पर अभिलाष शेर का दूध भी लाकर द सकता है। इस बरसात मे छाता लगाकर अभिलाष सदेश लाने निकला।

उस सदेश को लेकर क्या मुसीबत हुई ! अभिलाष को याद आया, सुहागरात मे वर-वधू दोना एक-दूसरे को सदेश खिलाते है।

दीदी भी बहुत मनमौजी हैं। अभिलाष को भी नही छोडा। कमरे मे बुलाकर बोली, 'जितनी तबीयत हो सदेश खाओ, मेरे सामन।'

अभिलाष को परशानी का अत नही। मैनेजर बाबू का हुक्म है किसी बेडरूम म एक सेकेंड के लिए बेकार मत रहना। काम खतम करने के साथ ही साथ चले आना। और दीदी हैं कि वहा खडे-खडे सदेश खाने को कह रही हैं।

बाबू दात निकाले हॅस रहे है। लग रहा है कि नशा कुछ छा रहा है। बाबू बोले, 'बडी कडियल के पल्ले पडे हो, ब्रदर। जो कहेगी वही कराकर छोडेगी। मेरी हालत देख रहे हो न। कहाँ दूसरी फूल शया के घर जाना था, वह नही, यही छिपा बैठा हूँ। लग रहा है कि यही सेकेंड फूल-शया हो। ब्रदर, तुम गडबड किये बिना टपाटप सदेश मुह मे भर लो। दीदी आज अन्नपूर्णा बन गयी हैं। मेरी गाठ तो सपाट है, लेकिन जो चाहता हूँ वही आ जाता है।'

लाचार होकर अभिलाष सदेश खाने लगा, अब दीदी ने और भी शरम मे डाल दिया। अपने हाथा एक गिलास पानी बढा दिया। क्या

दीदी न भी नशा किया है ? पूरे जीवन मे अभिलाप ने नही देखा कि किसी गस्ट न होटल के वेयरा का पीने को पानी दिया हो।

अब बावू न मेज पर जरा तबला बजाना शुरू किया। बोले, 'अनुपमा, अभी भी वक्त था। जा सकता था। मुझे बहुत अर्जेंट जरूरत थी।'

दीदी दुलार भरी आवाज मे बोली, 'किसी तरह नही। आज तुमको कही जाने न दूगी। बाहर क्सी अच्छी बरसात हो रही है।'

बाबू अब अभिलाप से बोले, 'वहुत अच्छा होटल है। कॉलेज लाइफ से यहाँ आन के लिए कितनी कोशिश की। लेकिन जेब खाली।'

चले आइयेगा, सर। दोपहर म। एक्स स्टूडेंटा के लिए रेट बहुत कम रखे है।'

'हम अब एक्स-स्टूडेंट नही रहे, ब्रदर ! अब झट से एक बहुत ठडा सोडा और ले आना तो।'

दीदी ने फिर पैसे बढा दिये। बोली, 'ओह, बेचारे को बहुत तक्लीफ हो रही है। उसे बार बार भगा रही हूँ। लेकिन भाई, काई चारा नही। यह सब करना ही पडता है।'

समय और अधिक हो गया था। और भी सोडे की बोतलें अभिलाप ने सप्लाई की। बीच बीच मे कुछ खाने को भी आया। वही सब प्लेट डिशें-बोतलें दो नबर के कमरे की मेज के चारो ओर फले थे।

दीदी न फिर अभिलाप को बुला भेजा। अभिलाप को चिढ न हो रही थी, क्योकि यह एक विचित्र पार्टी थी। हर बार ही अभिलाप को एक रुपया, दो रुपया मिल जाता था। अभिलाप ने हलकी-सी आपत्ति की थी। रुपये मिलें पर होटल की बदनामी हो, इसे वह नही चाहता था। दीदी खिलखिलाकर हँसी थी, 'आज खुशी का दिन है अभिलाप। एसा दिन क्या रोज आता है ? ख़ुशी के दिन सभी को देना होता है, यह मेरे वावा ने कहा था।'

दीदी को बहुत खुशी हो रही थी, यह समझने मे अभिलाप को कठिनाई नही हा रही थी।

दीदी अब एक अजीब माँग ले बठी। 'अभिलाप, कमरे मे नीली रोशनी

कहाँ है ? मेरे कमरे मे एक छोटी सी ब्लू-लाइट रहेगी। यह कब से सोच कर रखा था। शोभना के कमरे मे इस वक्त निश्चय ही ब्लू-लाइट जल उठी होगी।'

बाबू इस वक्त कमरे मे न थे, बाथरूम मे गये थे। दीदी बोली, 'अभिलाष, तुम खफा मत हो। हमे अपनी खुशी और साध मिटा लेने दो। आज मेरा सबसे स्मरणीय दिन है।'

अभिलाष ने अदाज लगाया कि दीदी के पेट मे भी कुछ तेज चीज गयी है। उसके सिवा उन दादा बाबू को बहुत अधिक प्यार किया है। इतना प्यार करने की क्या बात है, यह अभिलाष समझ नही पा रहा था। दीदी के मुकाबले म वह आदमी कुछ भी न था।

जीरो पावर की एक नीली बत्ती का भी अभिलाष न इतजाम कर दिया। कुर्सी पर चढकर उसन लैंप भी लगा दिया।

इस बीच दीदी न डबल बेड भी साफ सुथरा कर सजा दिया था। फूलो का पैकेट खोलकर सूखे फूल भी बिस्तर पर छिटका दिये थे। अब सदर मीठी मीठी गध आ रही थी।

अभिलाप एक बोतल सोडा और ले आया था। रात और भी अधिक हो गयी थी।

फिर अभिलाप की बुलाहट हुई। कमरे मे जाकर अभिलाप ने देखा कि दीदी न नीली बत्ती जला दी है। 'कैसा लग रहा है, बताओ तो ? बहुत कोमल, मखमल की सी मुलायम है न ?' दीदी ने शायद नशे की झोक मे अभिलाष की राय मागी।

इस समय दादा बाबू कमरे मे न थे। अदर शॉवर का पानी गिरने की आवाज आ रही थी। दीदी बोली, 'नहाने के लिए जबरदस्ती भेजा है। स्नान करके साफ हुए बिना कही शुभ काय होता है ? तुम्ही बताओ।'

'अभिलाप तुम एक सोडा और ले आओ। यहा की गदी प्लेट डिशें सब साफ कर दो।'

गदगी हटाते हटाते अभिलाप ने देखा कि दीदी दूसरे गिलास मे कोई गोली घाल रही हैं।

आजकल की औरतें तरह-तरह की गोलिया खाती है। अभिलाप उन

मामला म आजकल अपनी नाक नही डालता। सिरदद की गोली, चलटी हान की गालियाँ, जुकाम की गोली, हाज़म की गोली, शरीर खराब होन की गोली। उस पर पिछली बार पत्नी ने बताया था कि और भी गोलियाँ निकली हैं।

थोडी देर मे ही अभिलाप हाथ म बोतल लिय आ गया। दादा बाबू स्नान से निपटकर बहुत सुदर बन गय थे। दीदी की ही कघी से बाल काढ़कर कघी दीदी को लौटा दी। अभी तक ड्रिक्स का दौर समाप्त नही हुआ था। दीदी न पूछा, 'और कुछ चाहिए ?'

'और खाना नही—पीन का तो है।' दादा बाबू चहकते हुए बोल।

दादा बाबू की पीन की मात्रा ज़रा बढ ही रही थी। अभिलाप की मौजूदगी की उपेक्षा कर दादा बाबू बोले, 'तुम मुझे बहुत चाहती हो, अनुपमा ?'

दीदी तेज आवाज म बाली, 'बिलकुल नही! मैं किसी मद को प्यार नही करती। जो प्यार करना नही जानते, उ ह कोई कभी प्यार कर सकता है ?

दादा बाबू हा-हा कर हँसने लगे। 'खूब कहा तुमने, अनुपमा। नीली लाइट जलाकर फूलो के बिस्तर के पास बातें बडी अच्छी लग रही हैं। वेरी स्वीट—वरी वेरी स्वीट!'

रात और भी बढ रही है। दो नबर के कमरे में नीली बत्ती के सिवा और सब बत्तियाँ बुझ गयी हैं। और कितनी देर सोडा सप्लाई करना होगा, अभिलाप समझ नही पा रहा था। लेकिन खफा होने की जगह न थी। ऐसे गेस्ट यहाँ बहुत नही आते। इनके लिए अभिलाप को सचमुच सहानुभूति होती है। अभिलाप अदाज़ लगा रहा है। मा बाप की अनुमति लिये बिना ये बाहर निकल शादी कर हाटल मे ठहरे हैं। इनकी किस्म अलग है।

एक जग पानी और लाकर दीदी ने अब अभिलाप को छुट्टी दे दी। हाथ म दो बीस रुपये के नोट पाकर अभिलाप भौंचक्का था। दादा बाबू शायद आँखें बद कर थोडा आराम कर रहे हैं। दबी आवाज़ म दीदी बोली,

'तुम अब हमारे लिए तक्लीफ न करो, अभिलाप। अब तुम सोन जाओ। अगर पीने की आदत हो तो थोडी शराब ले जाओ, अभिलाप।'

अभिलाप न बताया, 'आप मुझे बहुत अच्छी लगी, दीदी। आपकी सी लडकिया तो यहा आती नही।' बोतल का हिस्सा पाकर अभिलाप की खुशी और कृतज्ञता का अत न था।

दीदी अजीब बुद्धुओ की तरह हँसी। अब ता आनद का समय था। अब तो केवल सुख है। लेकिन दीदी की आखो मे अभिलाप न माना आसू देखे। दीदी बोली 'हमे यहा आये बिना और कोई राह-नही थी, अभिलाप। बहुत काशिश हुई। देखा कि मेरी कोई कीमत नही, अभिलाप, तुम समझ लो।' दीदी ने और भी कहा, 'कीमत नही तो यहा क्यो हैं? यही सोच रहे हो न? अभिलाप सचमुच कुछ सोच नही रहा था, फिर भी दीदी न पूछा। उसके बाद अपने-आप ही जवाब दिया 'अब मैं एक का ही प्यार करती हूँ, अभिलाप। यहा इस फूल शया का वदोवस्त न होता तो किसी दूसरी जगह फूल शैया का काम समाप्त हो जाता अभिलाप।'

अभिलाप न अदाज लगाया कि दीदी ने खुद भी सनक म आकर शराब कुछ ज्यादा ही पी ली है। नही तो इस तरह अनजान वेयरे के साथ कोई वात नही करता है। 'दीदी, अब आप सो जाइय,' अभिलाप वोला, 'वाहर जैसी वरसात हो रही है, उसमे लौटन की कोई बात ही नही उठती।'

अनुपमा खिलखिलाकर हँस पडी। 'अब तुम्हारी छुट्टी है। तुम जाकर सो जाओ। शायद शादी नही हुई है?—फूल-शैया की रात को अभी कोई सोन जाता है?' यह कहकर उस दीदी न बिदा कर दिया।

अभिलाप कुछ ज्यादा देर तक सोता रहा। दरवान के पुकारन पर जब नीद टूटी तो डीलक्स हाटल म शार मचा हुआ था।

मैनजर रामेश्वर वावू उस वक्त सिर पर हाथ रखे बठे थे। दा नवर के कमरे म दीदी बिस्तर पर मरी पडी थी। पुलिस आयी हुई थी। दादा बाबू पर ही पुलिस को सदेह था। दादा बाबू कह रह थे, उनको कुछ नही मालूम। गुप्त अभिसार म आकर कब सो गये इसकी भी उन्ह याद नहीं।

दीदी न जरूर खुद जहर खा लिया था। पुलिस अब भी उन सब बातो पर विश्वास नही कर रही थी। कह रही थी, 'एक जीती जागती लडकी न अभिसार मे आकर तुम्हारे बिस्तर पर लेटकर जहर खा लिया और तुम्हे पता न चला। वह सब कोट मे कहना। यहा नही।' वह आदमी फिर भी कह रहा था, 'विश्वास कीजिये, मुझे कुछ भी नही मालूम। मुझे शक हो रहा है कि खुद जहर खाने के पहले उसने मुझे भी नीद की दवा खिला दी थी। मुझे बहुत नीद लग रही थी, विश्वास कीजिये।' पुलिस उसे थाने ले गयी। अब पुलिस के पाट-टाइम फोटोग्राफर फोटो स्टूडियो के बीरेन बाबू कमर की फोटो उतार रहे हैं—फूलो के बिस्तर पर फूल शया के अत मे राजरानी की तरह बगाल की लडकी अनुपमा, अनुपमा सेनगुप्त लेटी थी। भाई को, भावज को, माँ को मुक्ति दकर और शोभना की सारी परेशानिया को समाप्त कर कसे शात भाव से निश्चित सो रही थी अनुपमा सेनगुप्त !

समाचार पाकर पागला की तरह शोभना भागी आयी। सास न कहा था, ब्याह के एक बरस के बीच श्मशान मे, श्राद्ध मे, मृत्यु के किसी काम म वर-वहू को नही रहना चाहिए। लेकिन शोभना कोई बात नही सुनना चाहती।

शोभना ने यही सुना कि अनुपमा के साथ का आदमी वडी मुसीबत मे फँस गया है। फिर मुसीबता का क्या अत—पुलिस का फदा काटने म एक बरस तो लग ही जायगा। उस आदमी न पुलिस को अपना नाम राधाकात राय या ऐसा ही कोई नाम बताया है।

रो रोकर शोभना लोटी जा रही थी। बहुत देर तक उसे उठाया नही जा सका। शोभना की सास ने यह सुन असतुष्ट होकर कहा था, 'बहुत हो गया सहेली, सहेली। किसी के चले जान पर दुख तो होता ही है। लेकिन इतना ज्यादा दुख करने के कोई मायन नही होत।

• •

शकर

7 जनवरी 1933 को जन्म। बचपन म ही गाव छोड कर कलकत्ता चले आए।

ये अनजाने' पहली औपन्यासिक कृति थी, जिसका सपूण बगला साहित्य मे विशिष्ट स्थान है। देश व्यापी ख्याति प्राप्त इस उपन्यासकार न अपने उपन्यास चौरगी' से साहित्य के पाठको के लिए जातीयता के सकीण अर्थो को बिल्कुल बदल दिया था।

शकर की कृतियाँ सिफ कहानी कहन की कला का ही उत्कृष्ट नमूना पेश नही करती वरन् अपनी विधागत ऊँचाइयो को छूती हुई मानव-मूल्यो को स्थापित करने व यथास्थिति को छिन्न भिन्न करने की दिशा म साथक प्रयास भी सिद्ध होती है। प्रस्तुत कृति म पाठक फिर एक सही रचनाकार की अनुभूति से साक्षात्कार कर पायेंगे।